श्रीदुर्गासप्तशती

(मूल पाण्डुलिपि सहित)

पाण्डुलिपिकार - प० भवनाथ मिश्र



मिश्रबन्धु प्रकाशन, जमुथरि, मधुबनी



स्व॰ प॰ भवनाथ मिश्र

जन्म - 1879 ई॰
स्वर्गमन- अग्रहण शुक्ल चतुर्थी, 1933 ई॰
ग्राम - जमुथरि, पो॰-हटाढ़ रुपौली, झंझारपुर, मधुबनी (बिहार)
पितृनाम- प॰ दामोदर मिश्र
मूल - हरिअम्मे बलिराजपुर
गोत्र - वत्स
गुरु - मातुल म.म. श्रीकृष्ण सिंह ठाकुर।

रचना -

त्रैभाषिक शब्दकोष 'मिथिला-शब्दप्रकाश' जाहिमे मैथिली, हिन्दी एवं संस्कृत पर्याय लिंग निर्णय आ प्रमाणक संग देल गेल अछि। एकर प्रथम खण्ड (अ सँ अः धरि)क प्रकाशन 1914 ई॰ मे बनारस सँ भेल।

हस्तलेख -

हरिवंश-पुराण, दुर्गासप्तशती आदि अनेक लेख उपलब्ध अछि। सुन्दर अक्षरक लेल सामयिक पण्डित मण्डलीमे प्रसिद्ध रहथि।

3-4

मिश्रबन्धु प्रकाशनमालाक एगारहम पुष्प

मैथिल-परम्पराक प्रमाणिक प्रस्तुति

श्रीदुर्गासप्तशती

(मूल पाण्डुलिपि सहित)

पाण्डुलिपिकार

प० भवनाथ मिश्र



मिश्रबन्धु प्रकाशन, जमुथरि,

The Maithil-verson of the holy book of Shakt-cult, the ***SHRIDURGASAPTASHATI*** also known as ***SHRI SHRI CHANDI*** published with the manuscript written in Tirahuta i.e. Mithilakshar, (the script of mithila) by Pt. Bhavanath Mishra (1879-1933 A.D.), the prominent traditional scholar of Sanskrit and Maithily language, inhabitant of village Jamuthari, Madhubani, Bihar.

प्रकाशक :

मिश्रबन्धु प्रकाशन,

जमुथरि, पत्रा०- हटाढ़-रुपौली,
द्वारा-झंझारपुर, जिला- मधुबनी,
बिहार।

सम्पर्क : डा0 मोहनाथ मिश्र
दूरभाष 9431025567

प्रथम संस्करण 2008 ई०

1000 प्रतियाँ

मूल्य - सजिल्द 41.00 रु०

साधारण 21.00 रु०

मुद्रक :
मे० सरस्वती प्रेस,
पूर्वी बोरिंग कनाल रोड,
पटना।

सन्दर्भ

प्रस्तुत दुर्गापोथीक हस्तलेख प0 भवनाथ मिश्र, ग्राम- जमुथरि, पो0- हटाढ़ - रुपौली, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, बिहारक अछि। एहि मादे पोथीक अन्तमे स्वयं प0 भवनाथ मिश्र लिखै छथि जे ओ एकर प्रति अपन जेठ भाई श्री मुक्तिनाथ मिश्र हेतु तिथि शक संवत् 1824 के श्रावण मासक नवमी तिथि मंगल दिन के अर्थात् इस्वी सन् 1902, दि0 12 अगस्त के लिखब सम्पन्न कएलनि। उत्तम हस्तलेखमे धार्मिक ग्रन्थक प्रति करबाक मिथिलामे परम्परा छल। एहि सँ उक्त परम्पराक निर्वाह ओ रक्षा दुनू होइत रहल अछि। प0 भवनाथ मिश्रक अनेक हस्तलेख एहि तथ्यक पोषक अछि। कारण जे प0 मिश्रक हस्तलेखमे हुनक सन्तति सब लऽग अखनो श्री श्री हरिवंश-पुराण, 'मिथिलाशब्दप्रकाश' (त्रिभाषा - मैथिली - हिन्दी - संस्कृत शब्दकोश), विषयावली (तन्त्र-मन्त्र साधना) ओ अनेक अन्य ग्रन्थ सुरक्षित अछि, जकर प्रकाशन हेतु प्रयास भऽ रहल अछि आगू भगवतीक इच्छा।

एहि पोथीक प्रकाशन सन्दर्भमे विनीत भावसँ किछु तथ्य प्रस्तुत करबाक अछि जे प0 भवनाथ मिश्रक चारि पुत्र दस गोटे पौत्रलोकनि एवं पन्द्रह प्रपौत्रमे सँ कतिपय व्यक्तिक उत्साह एवं अदम्य इच्छाशक्तिसँ ई प्रकाशित भऽ उपलब्ध भऽ रहल अछि। हुनका लोकनिकें ई निर्णय लेबाक छलनि जे पारिवारिक परम्पराक वस्तुके सार्वजनिक कएल जाय तऽ कोन रूपे। अद्यावधि उपलब्ध दुर्गापोथीक प्रतिरूपमे अथवा उपलब्ध सामग्रीके आधार कऽ के। अखन धरि एकर उपयोग पारिवारिक दुर्गामन्दिरमे कएल जाइत रहल छल। पूर्व में प0 तेजनाथ मिश्र एहि प्रति सं.. पाठ करैत छलाह। प0 भवनाथ मिश्रक पिता प0 दामोदर मिश्र 1855 ई0मे दुर्गामन्दिर बनौने छलाह। भगवतीक इच्छानुकूल एकर पुनर्निर्माण 1995 ई0 मे भेल आ स्थानक नाम पड़ल 'माँ दामोदरेश्वरी दुर्गा मंदिर'।

प0 भवनाथ मिश्रक पौत्र सबमे पैघ आ कमौआ सब अर्थ उपलब्ध कराओल आ अन्य समांगे लागल रहलाह। एहि उत्साहक क्रममे ई निर्णय भेल जे प0 मिश्रक हस्तलेखके प्रकाशित कएल जाए। परञ्च भगवतीक आदेशसँ एकर प्रकाशन विलम्बित भऽ 2008 मे भऽ सकल अछि।

प्रस्तुत दुर्गापोथीमे वामकात मिथिलाक्षरमे मूल लेखके फोटोशॉपमे कएल गेल स्कैन कॉपीके कोरल ड्रा पर ट्रेसिंग कऽ राखल गेल अछि आ तदनुरूप ओकर देवनागरीमे अनुवाद दहिना कात राखल गेल अछि, जे पेजमेकर

पर कएल गेल अछि। एहिमे कएक गारक काज छलै। मूल हस्तलेखके पठनीय स्तरक बनाकऽ छापब। पंक्ति सँ पंक्ति मिला कऽ ओकर देवनागरी अनुवादमे शुद्धता संग क्रमबद्ध करब। अलग-अलग वस्तुके एकसंग छापब। मिश्रबन्धु परिवारक अधिकांश सदस्य वैचारिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एहिकाजमे तत्पर छलाह परञ्च परिवार सँ निकलि समाजक समक्ष एहि मिथिला परम्पराक दुर्गापोथीक धरोहरके समर्पित करैक एहि अवसर पर हटाढ़-रुपौलीक प0 भवनाथ झा, जे वर्त्तमानमे महावीर मंदिर, पटनामे प्रकाशन प्रभारी छथि, कें साधुवाद देब आवश्यक अछि। एहि निर्णयके बाद जे एहि पोथीके समाज हेतु छापल जाय एकर प्रकाशन क्रममे कोनो अवसर एहन नहि छल जाहिमे ओ संग नहि रहलाह। विशेषकऽ कम्प्यूटर पर हस्तलेखक प्रकाशनस्वरूप निर्धारण ओ शब्द समूह अनुवादमे। संगहि संगणक श्री रश्मिरथीक योगदान सराहनीय रहल आ मुद्रक तत्पर छलाह से तथ्य थीक।

प0 भवनाथ मिश्रक वंशज लोकनि एकर प्रकाशन हेतु प्रतिदिन भगवती सँ प्रार्थना आ अर्थे-समांगे प्रयास करैत रहला। प्रकाशन पूर्व सँ समाजक लोक एकर प्रति उपलब्ध करेबाक हेतु तगेदा करैत रहलाह अछि।

माँ दामोदरेश्वरीक चरणमे एहि पुस्तकके समर्पित करैत अपने लोकनिसँ ई निवेदन अछि जे मिथिला परम्पराक एहि दुर्गापोथीसँ पाठ करी। थोड़बे दिनमे मिथिलाक्षर सेहो स्पष्ट हुअऽ लागत। मोन लागे तऽ अप्पन लिपिकें 'मिथिलाक्षर' के अभ्यास करी। भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित भऽ गेलाक उपरान्त प्रत्येक मैथिल के ई कर्त्तव्य छनि जे एहि दिशामे प्रयास करथि। सुलभ सन्दर्भ हेतु भारतीय भाषा सर्वेक्षण (1911 ई0)के अनुसार मैथिलीभाषी क्षेत्रक मानचित्र एवं मिथिलाक्षरक वर्त्तमान वर्णमाला अलगसँ पुस्तकमे देल अछि।

एहि दुर्गापोथीमे प0 मिश्रक हस्तलेख उपलब्ध कराओल गेल अछि। दुर्गा-पोथी क एहि सस्करणमे कतिपय विषयवस्तुक समावेश एही कारणें नहि कएल गेल अछि जे ओकर हस्तलेख उपलब्ध नहि भेल। विद्वान् लोकनि सँ निवेदन अछि जे दुर्गापोथीमे पाठक्रम, श्लोकक्रम, अध्याय प्रारम्भ-अन्त ओ अन्य पूजा-अर्चनामे सँ कोन-कोन वस्तुक समावेश कोन क्रममे हेबाक चाही ताहि पर अपन अभिमत ओ निर्णय यथाशीघ्र पठाबथि जाहिसँ तत्परतापूर्वक एहि दुर्गापोथीक संशोधित, परिवर्द्धित आ परिपूर्ण संस्करण समाज के तत्काल उपलब्ध करेबाक प्रयत्न कएल जाय।

माँ दामोदरेश्वरीक कृपा सदिखन सब पर बनल रहै, एहि कामनाक संग ई पोथी हुनके चरणमे समर्पित अछि।

डा0 मोहनाथ मिश्र

ज्ञापन

दुर्गासप्तशती क सम्पादनमे ई एकटा नव प्रयोग थिक; अपन प्राचीन परम्पराक प्रामाणिक दर्शन थिक।

रामायण, महाभारत, पुराण आदि लौकिक आर्षग्रन्थक क्षेत्रीय परम्परा रहलैक अछि। पण्डित लोकनि आदर्श पाण्डुलिपि सँ उतारैत ग्रन्थ सभक संरक्षण आ प्रचार-प्रसारमे लागल रहलाह। 'लेखकस्य पाठकस्य च शुभं भूयात्' अर्थात् लिपिकार आ ओकर पाठक दुनूक शुभकामनाक धार्मिक अवधारणा एहि प्रवृत्ति के आर उदात्त बनओलक। ''यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितम्मया। यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयताम्'' अर्थात् ''जो देख्या सो लेख्या'' क घोषणाक वादो किछु रचनात्मक प्रवृत्तिक श्रेष्ठ विद्वान् प्रतिलिपिकार लोकनि अपन सांस्कृतिक धारासँ प्रभावित भए प्राचीन काल सँ आर्षग्रन्थमे पाठान्तर करैत रहलाह, श्लोक बनाक' जोड़ैत रहलाहं। ओना तँ पाठान्तर आ 'प्रक्षेप' शब्द अपकृष्ट वस्तुक बोध करबैत अछि, मुदा आर्षग्रन्थक सन्दर्भमे ओ अंश क्षेत्रीय सांस्कृतिक इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण स्रोत बनि जाइछ तें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। उपासना-साधना सँ सम्बद्ध आर्षग्रन्थमे तँ ओ परिवर्त्तन, परिवर्द्धन आ स्वरूप-निर्धारण आर महत्त्वपूर्ण भए जाइत अछि। कारण जे उपासना आ साधनामे गुरुक अवधारणा सभसँ प्रबल होइत छैक। ई मान्यता अछि जे गुरुक परम्परा सँ हटि क' कोनो उपासना सफल नहि होइछ। एहि कारणें क्षेत्रीय पाठ गुरु-वचन जकाँ प्रतिष्ठा पाबि ओहि परिवेशक साधक लोकनिक मार्गदर्शक बनैत अछि।

जा धरि छापाखाना नहि छल ओ परम्परा अक्षुण्ण रहल। प्रतिलिपिकार लोकनि प्राचीन आदर्श ग्रन्थ सँ उतारैत रहलाह। उनैसम शताब्दीमे जखनि छापाखाना भारतमे खोलल गेल तँ पाण्डुलिपिक आधार पर पुस्तकक सम्पादन भेल आ ओकरा व्यापक रूप देबाक लेल प्रकाशन संस्था सभ अपन अपन किछु सिद्धान्त निर्धारित कएल। संस्कृतक वर्त्तनी पर आ तज्जन्य उच्चारण पर एकर प्रभाव सभ सँ बेसी पड़ल। ओहि कालक

विद्वान् सम्पादक लोकनि किछु तँ छापाखानाक सीमाक कारणें मन मसोड़ि क', तँ किछु सर्वजनसुलभ बनएबाक फेरमे उत्साहित भए वर्तनीमे परिवर्तन कएलनि। द्वित्व कें वैकल्पिक बूझि बहुत सीमा तक ओतए एके वर्ण लिखाए लागल जाहि सँ ओकर 'वोल्यूम' घटि गेल। 'क' एवं 'ख' वर्णसँ पूर्व विसर्गक स्थानमे जिह्वामूलीय आ 'प' एवं 'फ' सँ पूर्व ऊपध्मानीय विलुप्त भए गेल। जिह्वामूल आ ओष्ठ सँ उच्चरित वर्णक स्थानमे कण्ठ्य विसर्ग रहि गेल, जकर प्रभाव उच्चारण पर पड़ल। काव्यादिमे तँ कोनो बात नहि, मुदा ध्वनि-प्रधान मन्त्रादिमे एकर दुष्प्रभाव पड़ल। एहिना सम्पादक लोकनि पदके अलग-अलग लिखवा पर जोर देलनि। जेना ''यथान्यायय्यँथार्हन्तेन'' क स्थानमे ''यथान्यायं यथार्हं तेन'' लिखल जाए लागल। इहो उच्चारणके प्रभावित कएलक। आधुनिक भारतीय भाषाक तर्ज पर 'शंकर', 'चंचल' आदि जकाँ अनुस्वारक स्थानापन्न परसवर्ण विलुप्त भए गेल।

संगहि विभिन्न क्षेत्रक पाठ जखनि सुलभ भेल तँ सम्पादक लोकनि पाठान्तर ग्रहण कए 'खिच्चड़ि' बनएबाक लोभ संवरण नहि कए सकलाह। राष्ट्रीयता क व्यापकता सँ क्षेत्रीय सूक्ष्मता प्रभावित भेल। एहि सँ मिथिलाक अपन परम्पराके हानि पहुँचलैक।

आइ एक दिस आधुनिक जगत् मन्त्रक ध्वन्यात्मक प्रभाव पर शोध कए रहल अछि, आ ओकर उच्चारण द्वारा उत्पन्न तरंगक प्रभावके रेखांकित कए रहल अछि, दोसर दिस संस्कृतके सर्वजनसुलभ बनएबाक लेल ओकर उच्चारण आइ सय वर्षमे परिवर्तित भए गेल अछि।

आइ शिक्षाक व्यापक प्रचार प्रसार भए रहल अछि। भाषाक अपन ध्वनिके सुरक्षित रखबाक लेल रोमन लिपिमे सेहो Unicode बनि गेल अछि। कम्प्यूटरक अपरिमित विकास सँ आइ प्रकाशन क्षेत्रमे कोनो कार्य कठिन नै रहि गेलैए; सीमाबद्ध नहि रहि गेलैए। पाठकोक शैक्षणिक-स्तर विकसित भए रहल छनि। एहि स्थितिमे अपन क्षेत्रीय धरोहरके मूल रूपमे प्रकाशित करबाक आवश्यकता अनुभव कएल गेल आ एहि प्रकारक संस्करण आइ अहाँ सभक हाथमे अछि। एहि पाण्डुलिपिक पुष्पिका सँ एकर लेखन काल क सूचना भेटैत अछि। एहि मे कहल गेल अछि जे शक संवत् वेद[4] भुजा[2] नाग[8] धरणी[1] अर्थात् 1824 तदनुसार 1902 ई0 मे श्रावण मासक (शुक्ल पक्ष) नवमी तिथि मंगल दिन प0 भवनाथ मिश्र एकर लेखन कए अपन भ्राता मुक्तिनाथ मिश्रकें ई देवी माहात्म्य देलनि। गणनाक अनुसार ई दि0 12-08-1902ई0 होइत अछि।

ई वस्तुतः पाण्डुलिपिक प्रकाशन थिक। दहिना पृष्ठ पर एकर देवनागरी लिप्यन्तरण देल गेल अछि। एक पंक्तिमे जतेक अक्षर मूलमे अछि, ओतबे देवनागरियोमे। एहिसँ पाण्डुलिपि शास्त्र, मिथिलाक्षर लिपि आ गैरिक-सूत्र एहि तीनूक संरक्षण होएत। कोनो उत्साही पाठक एहि सँ मिथिलाक्षरो आसानी सँ सीखि सकैत छथि। देवनागरीमे वर्तनी मूल मिथिलाक्षरक अनुरूप अछि। ऊपध्मानीय आ जिह्वामूलीयक यथास्थान प्रयोग अछि जकर उच्चारण एना होएत -

क	-	ह्क (hk)
ख	-	ह्ख (hkh)
प	-	ह्प (hp)
फ	-	ह्फ (hph)

पाण्डुलिपि लेखनशैलीक अनुरूप एतहु मूलमे सभटा पद एक शिरोरेखामे बिना अन्तरालक लिखल जा सकैत छल। देवनागरियोमे किछु पुराण-साहित्य एहि रूप सँ छपल अछि। मुदा एतए पाठकक सुविधा लेल एहने स्थल पर अन्तराल देल गेल अछि, जतए उच्चारणक स्तर पर अथवा अर्थक स्तर पर एक पद दोसरसँ सर्वथा पृथक् अछि। जतए मूललिपिकार परसवर्णक प्रयोग करैत छथि ओतए ओहिना एक शिरोरेखामे राखल गेल अछि। कतहु कतहु मूल पाण्डुलिपिमे वर्तनीमे सामान्य प्रमाद सेहो छैक, जेना, तृतीय अध्यायक तेरहम श्लोकमे मूलमे साक्षिनत् अछि जतए 'साच्छिनत्' हेबाक चाही। एहिना ओही पृष्ठ पर 21म श्लोकमे 'स' स्थान पर 'श' अछि। एतए देवनागरीमे शुद्ध पाठ देल गेल अछि। कतहु कतहु उच्चारणक अनुरोधें एहनो प्रयोग भेल अछि जे व्याकरणक दृष्टि सँ अमान्य अछि, जेना- 'ढ़' एवं 'ड़' वर्णक प्रयोग, यकारक स्थानमे जकारक प्रयोग, वकारक पूर्ववर्ती अनुस्वारक स्थानमे मकार, पूर्वरूप एवं पररूप सन्धिमे अवग्रहक अभाव आदि। ई सभटा प्रयोग पाण्डुलिपि-लेखनक सामान्य वस्तु थिक, जे हमरा जनैत उच्चारणक अनुरोधें लिखल जाइत छल होएत। 'ढ़' एवं 'ड़' वर्णक प्रयोग क्रमशः वैदिक स्वर 'ळ' एवं 'ळ्ह'क अवशेष थिक। एहि सभ स्थल पर यथावत् देवनागरीमे देल गेल अछि।

गीताप्रेस, गोरखपुर सँ प्रकाशित दुर्गासप्तशती सँ पाठ कएनिहार के अर्गला, कीलक आ कवचक ई क्रम अनसोहाँत लगतनि। मुदा जनबाक चाही जे मिथिला, बंगाल, आसाम, नेपाल आ काश्मीरमे इएह क्रम प्रचलित अछि। तें एतए कोनो ऊहापोह नहि करबाक चाही।

एहि पाण्डुलिपिमे नवार्ण मन्त्र, न्यास आ ध्यान मूल लिपिकारक लिखल नहि थिक। ओ हुनक ज्येष्ठ पुत्र वैयाकरण प0 तेजनाथ मिश्रक अक्षरमे अछि। एकर अक्षर बड़ महीन अछि, तें एहि तीन पृष्ठके क्षैतिज रूपमे व्यवस्थित करए पड़लैक, नहिं तँ पाण्डुलिपिक अक्षर पठनीय नहि रहैत।

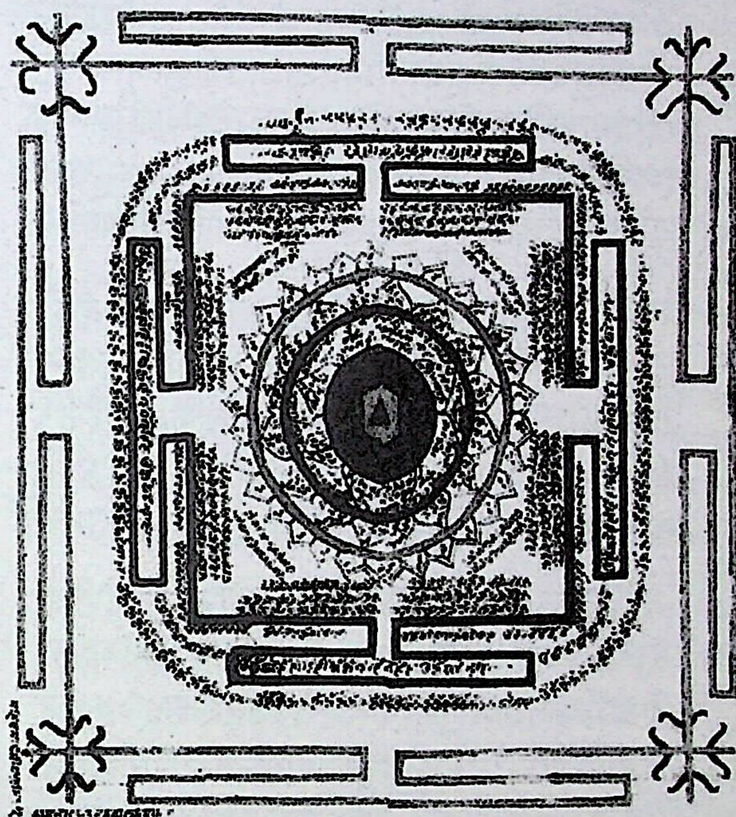
दुर्गासप्तशतीक दूटा रूप प्रचलित अछि – पाठात्मक आ मन्त्रात्मक। पाठात्मक सप्तशतीमे अध्यायक आ चरितक विभाजन अछि। प्रत्येक अध्यायक पृथक् मन्त्र-संख्या छैक। तथापि मिथिलामे सत्यनारायण कथा जकाँ अखण्ड पाठक परम्परा रहल अछि। बिना कोनो विरामक अखण्ड पाठ श्रेष्ठ कल्प थिक। प्रत्येक अध्यायक अन्तमे **"महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः"** एहि सँ प्रणाम कए जल देबाक सर्वाधिक प्रचलित परम्परा रहल अछि।

सप्तशतीक अंगक रूपमे विभिन्न संस्करणमे सप्तश्लोकी दुर्गा, दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला, ऋग्वेदोक्त रात्रिसूक्त, मूर्तिरहस्य, प्राधानिकरहस्य, वैकृतिकरहस्य आ अन्यान्य स्तोत्र सभ भेटैत अछि। मुदा एतए केवल अर्गला, कीलक, कवच, शापोद्धार, नर्वाणमन्त्र, न्यास, ध्यान आ अन्तमे ऋग्वेदोक्त देवीसूक्त अछि। एतेक सप्तशती पाठक न्यूनतम अंग थिक। विशेषक अन्त नहि छैक।

एकरा प्रकाशित करबाक श्रेय श्री मोहनाथ मिश्र कें छनि। एकरा प्रति हुनक अनुराग स्मरणीय रहत। हम यथामति एकर मूलके देवनागरीक माध्यमसँ पठनीय बनाओल। सुधी पाठकसँ निवेदन जे जँ कतहु त्रुटि रहि गेल हो तँ मार्ग दर्शन करथि, जाहि सँ दोसर संस्करणमे सुधार कएल जा सकए।

विदुषां वशँव्वदः

शारदीय नवरात्र, 2065 — भवनाथ झा



महिषासुरमर्द्दिनी यन्त्र

ওঁনমশ্চণ্ডিকায়ৈ॥ চণ্ডিকাসপ্তশতিকাপ্রথমচরিত
স্যব্রহ্মাঋষির্ম্মহাকালীদেবতাগায়ত্রীচ্ছন্দোনন্দাশ
ক্তীরক্তদন্তিকাবীজমগ্নিস্তত্ত্বংমহানক্ষমীপ্রীত্যর্থেজ
পেবিনিয়োগঃ॥ মার্কণ্ডেয়উবাচ॥ ব্রহ্মন্কেনপ্র
কারেণকিন্নামাহাত্ম্যমুক্তমম্॥ শীঘ্রংমিস্বতিত
নেচ্ছিকথয়স্বমহামতে॥ ব্রহ্মোবাচ॥ অস্তিনকী
নকথ্যাদৌজপিত্বাকরণ্ঠজাপেত॥ জাপাসপ্তশ
তীপাঠাৎক্রমএষশিরোদিতঃ॥ অস্তিনস্থিতিহ
ন্তিকীনকিফলন্দন্তথা॥ করণ্ঠবখাতনিরচণ্ডি
কাহিতয়ন্তথা॥ অস্তিনহৃদয়যস্যতথানক্ষ
নরাণামো॥ ভবিষ্যতীতিনিশ্চিনাশীরেনবতিতিঃ
বা॥ কীনকিহৃদয়যস্যমকীনকমনোরথঃ॥ ভ
বিষ্যতিনসন্দেহোনান্যথাশিবভাষিতম্॥ কর
ণ্ঠহৃদয়যস্যমরক্ষ্যকবচঃখলু॥ ভবিষ্যতীতি
নিশ্চিনত্রস্মাণোনির্মিতিঃশিবা॥ মার্কণ্ডেয়উবাচ॥
জয়ত্বন্দেবিচামুণ্ডেজয়ভূতাপহারিণি॥ জয়সর্ব্ব
তেদেবিকালরাত্রিনমোস্তুতে॥ জয়ন্তীমঙ্গ
লাকালীভদ্রকালীকপালিনী॥ দুর্গাক্ষমাশিবা
ধাত্রীস্বাহাস্বধানমোস্তুতে॥ মধুকৈটভবিদ্রাব
বিধাতৃবরদেনমঃ॥ রূপংদেহিযশোদেহিজ



अथ अर्गलास्तोत्रम्

ॐ नमश्चण्डिकायै॥ चण्डिकासप्तशतिकाप्रथमचरितस्य ब्रह्मात्र्ऋषिर्म्महाकालीदेवता गायत्रीच्छन्दो नन्दाशक्तीरक्तदन्तिकाबीजमग्निस्तत्त्वं महालक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥ मार्क्कण्डेय उवाच॥ ब्रह्मन् केन प्रकारेण दुर्गामाहात्म्यमुत्तमम्। शीघ्रं सिद्ध्यति तत्सर्व्वं कथयस्व महामते॥ ब्रह्मोवाच॥ अर्गलं कीलकञ्चादौ जपित्वा कवचं जपेत्। जपेत्सप्तशतीं पश्चात्क्रम एष शिवोदितः। अर्गलं दुरितं हन्ति कीलकं फलदन्तथा। कवचं रक्षते नित्यं चण्डिका त्रितयन्तथा। अर्गलं हृदये यस्य तथानर्गलवागसौ। भविष्यतीति निश्चित्य शिवेन रचितं पुरा। कीलकं हृदये यस्य स कीलकमनोरथः। भविष्यति न सन्देहो नान्यथा शिवभाषितम्। कवचं हृदये यस्य स वज्रकवचः खलु। भविष्यतीति निश्चित्य ब्रह्मणा निर्म्मितं पुरा। मार्क्कण्डेय उवाच ॥

जय त्वन्देवि चामुण्डे जय भूतापहारिणि। जय सर्व्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तुते ॥ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनि। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तुते ॥ मधुकैटभविद्रावविधात्रि वरदे नमः ॥ रूपन्देहि यशोदेहि ज

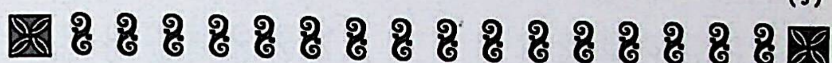


য়ংদেহিদ্বিষোজহি॥ মহিষাসুৰসৈন্যান্তবিধাত্ৰিবৰ
দেনমঃ॥ ৰূপংদেহিজয়ংদেহি য়শোদেহিদ্বিষোজহি
মহিষাসুৰনীহাৰবিধাত্ৰিবৰদেনমঃ॥ ৰূপংদে॥ ধূ
ম্ৰলোচনদৰ্পান্তবিধাত্ৰিবৰদেনমঃ॥ ৰূপংদে॥ চ
ণ্ডমুণ্ডপ্ৰমথনবিধাত্ৰিবৰদেনমঃ॥ ৰূপংদে॥ ৰক্ত

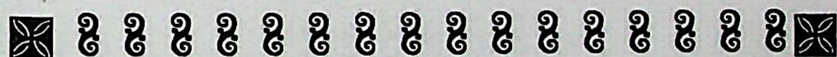
বীজবধদেৱিবিধাত্ৰিবৰদেনমঃ॥ ৰূপংদে॥ নি
শুম্ভশুম্ভনাশিনীসুৰবিধাত্ৰিবৰদেনমঃ॥ ৰূপংদে॥ শু
ম্ভাক্ষসনিৰ্ণ্ণাশবিধাত্ৰিবৰদেনমঃ॥ ৰূপংদে॥ ব
ন্দিতাঙ্ঘ্ৰিয়ুগেশ্ৰীদেবিসৌভাগ্যদায়িনী॥ ৰূপংদে
অচিন্ত্যৰূপচৰিতেসৰ্ব্বশত্ৰুবিনাশিনি॥ ৰূপংদে

নতেভ্যঃসৰ্ব্বদাভক্ত্যাচণ্ডিকেদুৰিতাপহে॥ ৰূপংদে॥
স্তুৱদ্ভ্যোভক্তিপূৰ্ব্বন্ত্বাংচণ্ডিকেব্যাধিনাশিনি॥ ৰূ
পংদে॥ চণ্ডিকেসততংয়েত্বামৰ্চ্চয়ন্তীহভক্তিতঃ॥
ৰূপংদে॥ দেহিসৌভাগ্যমাৰোগ্যংদেহিদেৱিপৰংপ
দং॥ ৰূপংদেহি॥ বিধেহিদ্বিষতাংনাশংবিধেহি

বলমুচ্চকৈঃ॥ ৰূপংদেহি॥ বিধেহিদেৱিকল্যাণংবি
ধেহিবিপুলাংশ্ৰিয়ং॥ ৰূপংদেহি॥ সুৰাসুৰশিৰোৰ
ত্ননিঘৃষ্টচৰণেম্বিকে॥ ৰূপংদেহি॥ চতুৰ্ভুজেচতু
ৰ্ব্বক্ত্ৰসংস্তুতেপৰমেশ্বৰি॥ ৰূপংদেহি॥ প্ৰচণ্ডদৈ
ত্যদৰ্পঘ্নেচণ্ডিকেপ্ৰণতায়মে॥ ৰূপংদেহি॥ কৃষ্ণে



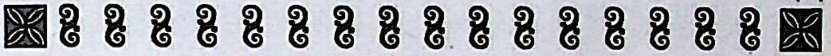
यन्देहि द्विषोजहि।। महिषासुरसैन्यान्तविधात्रि वर
दे नमः।। रूपन्देहि जयन्देहि यशोदेहि द्विषो जहि
।। महिषासुरसंहारविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०। धू
म्रलोचनदर्प्पान्तविधात्रि वरदे नमः ।। रूपम्०।। च
ण्डमुण्डप्रमथनविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। रक्त
बीजकुलच्छेदविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। नि
शुम्भप्राणसंहारविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। शु
म्भराक्षसनिर्णाशविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। व
न्दितांघ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिंनी।। रूपम्०।।
अचिन्त्यरूपचरिते सर्व्वशत्रुविनाशिनि। रूपन्दे०।।
नतेभ्यः सर्व्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।। रूपम्०।।
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वन्त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि। रू
पम्०। चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।।
रूपम्०।। देहि सौभाग्यमारोग्यन्देहि देवि परं प
दम् ।। रूपन्देहि०।। विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि
बलमुच्चकैः ।। रूपन्देहि०।। विधेहि देवि कल्याणम्वि
धेहि विपुलां श्रियम् ।। रूपन्देहि० ।। सुरासुरशिरोर
त्ननिघृष्टचरणाम्बुजे ।। रूपन्देहि०।। चतुर्भुजे चतु
र्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि। रूपन्देहि० ।। प्रचण्डदैत्य
दर्पघ्ने चण्डिके प्रणता वयम्।। रूपन्देहि० ।। कृष्णे



নমস্তুতাদারিশ্রেতত্ত্বামদাম্বিকে॥ রূপংদেহি॥
হিমাচলসুতানাথসংস্তুতেপরমেশ্বরি॥ রূপংদেহি॥
ইন্দ্রাণীপতিসদ্ভাবপূজিতেপরমেশ্বরি॥ রূপংদেহি॥
রিস্যারন্তিযশোসন্তিনক্ষ্মীরন্তশ্চসীক্ষকু॥ রূপংদে॥
তারিণীদুর্গসংসারসাগরস্যাচলোদ্ভবে॥ রূপংদে॥

পত্নীংমনোরমাংদেহিমনোবৃত্তানুসারিণীম্॥ রূপংদে॥
দেবিভক্তজনোদ্দামদত্তানন্দোদয়েম্বিকে॥ রূপংদে॥
ইদংস্তোত্রংপঠিত্বাতুমহাস্তোত্রংপঠেন্নরঃ॥ সতুসপ্ত
শতীসংখ্যাপ্রতিশ্লোকমবাপ্নোতি॥ অর্গলাস্তোত্রপাঠ
জাতস্যদাবিক্রম্যতথাস্তিনশুভং॥ ইদমাদৌপাঠ

স্তৈপশ্চাত্ত্রীচণ্ডিকাজপেত্॥ ॥ ইত্যর্গলাস্তোত্র
ম্॥ ॥ সম্পূর্ণম্॥ ॥ ওঁ যদক্ষরমাদি॥ ॥
ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ



न संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके। रूपन्देहि०।।
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि। रूपन्देहि०।।
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि। रूपन्देहि०।।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तञ्च मां कुरु।। रूपन्दे०।।
तारिणीन्दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।। रूपन्दे०।।

पत्नीम्मनोरमां देहि मनोवृत्यनुसारिणीम्।। रूपम्०।।
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेम्बिके। रूपम्०।।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रम्पठेन्नरः। स तु सप्त शतीं सख्यां प्रतिश्लोकमवाप्नुयात्।। अर्गलं पाप जातस्य दारिद्र्यस्य तथार्गलं।। इदमादौ पठि

त्वा तु पश्चाच्छ्रीचण्डिकां जपेत्।। ।। इत्यर्गलास्तोत्रम्।। ।। सम्पूर्णम्।। ।।ॐ यदक्षरेत्यादि[1]।। ।।

[1] यदक्षरपदभ्रष्टम्मात्राहीनञ्च यद्भवेत्।
तत्सर्व्वं क्षम्यतान्देवि कस्य वै निश्चलम्मनः।।



ওঁ নমশ্চণ্ডিকায়ৈ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ বিশুদ্ধজ্ঞানদেহায়
ত্রিবেদীদিব্যচক্ষুষে । শ্রেয়ঃপ্রাপ্তিনিমিত্তায় নমঃ সোমা
র্দ্ধধারিণে ॥ সর্ব্বমেতদ্বিজানীয়ান্মন্ত্রাণামভিকীলকং ॥
সোঽপি ক্ষেমমবাপ্নোতি সততঞ্জাপ্যতৎপরঃ ॥ সিদ্ধ্যন্ত্যু
চ্চাটনাদীনি বস্তূনি সকলান্যপি ॥ এতেন স্তুবতাং দেবী

স্তোত্রমাত্রেণ সিদ্ধ্যতি ॥ ন মন্ত্রো নৌষধং তত্র ন কিঞ্চি
দপি বিদ্যতে ॥ বিনা জাপ্যেন সিদ্ধ্যেত সর্ব্বমু
চ্চাটনাদিকং ॥ সমগ্রাণ্যপি সিদ্ধ্যন্তি লোকশঙ্কা
মিমাং হরঃ ॥ কৃত্বা নিমন্ত্রয়ামাস সর্ব্বমেবমিদং শুভং ॥
স্তোত্রং বৈ চণ্ডিকায়াস্তু তচ্চ গুহ্যং চকার সঃ ॥ সমাপ্তি

র্ন চ পুণ্যস্য তাং যথাবন্নিমন্ত্রণং ॥ সোঽপি ক্ষেমমবাপ্নো
তি সর্ব্বমেবং ন সংশয়ঃ ॥ কৃষ্ণায়াং বা চতুর্দ্দশ্যামষ্টম্যাং
বা সমাহিতঃ ॥ দদাতি প্রতিগৃহ্লাতি নান্যথৈষা প্রসীদ
তি ॥ ইত্থংরূপেণ কীলেন মহাদেবেন কীলিতং ॥
মন্ত্রবাক্ষেমমাপ্নোতি সদা জপ্যং ন সংশয়ঃ ॥ যো নি

अथ कीलकम्

ॐ नमश्चण्डिकायै॥ मार्क्कण्डेय उवाच॥ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे। श्रेय प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमा र्द्धधारिणे। सर्व्वदा तु पठेद्यस्तु मन्त्रणामपि कीलकम्। सोपि क्षेममवाप्नोति सततञ्जपतत्परः॥ सिद्ध्यन्त्यु च्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि। एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रवृन्देन सिद्ध्यति॥ न मन्त्रो नौषधञ्चापि न कि ञ्चिदपि विद्यते। विना जाप्येन सिद्ध्यन्ति सर्व्वमु च्चाटनादिकम्॥ समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्का मिमां हरः॥ कृत्वा नियन्त्रयामास सर्व्वमेवमिदं शुभम् स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुह्यं चकार सः॥ समाप्नो ति सुपुण्येन तां यथावन्निमन्त्रणम्॥ सोपि क्षेममवाप्नो ति सर्व्वमेव न संशयः॥ कृष्णायाम्वा चतुर्द्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसिद्ध्य ति॥ इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्॥ स एव क्षेममाप्नोति सदा जप्त्वा न संशयः॥ यो नि



ক্ষীনাংবিধায়েনাংনিজজপতিমস্তুতস্মুং ।।মমিঃসগণাঃ
সোপিযথাঞ্জিজায়তেরনঃ ।।নষ্টৱাপদমাপ্নোতিভয়ঙ্কা
পিনজায়তেঃ ।।মাপম্ভস্তুয়স্মাপিস্যতোমোক্ষমৱাপ্নুয়াতং ।।
ভাৱপ্রাৱচ্যস্কঘীতস্খন্ধস্ত্রীণোরিনভযতিঃ ।।ততেজ্জাত্রি
বসম্ভমমিদং প্রাৱচ্যতস্তুথঃ ।।সৌচাগ্যাদিতেযতিং

ক্রিস্ত্যতেননবাজানেঃ ।।তস্মেশ্রীহংপ্রেমাদেনতেনগা
স্যমিদংস্তম্ ।।শনৈস্তুজপ্যমানেহস্মিনস্তোত্রেসম্প
ত্তিরুচ্চকেঃ ।।ভৱানেৱসমগ্রাপিততঃপ্রারভ্যমেৱত
তং ।।ঐশ্বর্যংযংপ্রসাদেনসৌভাগ্যারোগ্যসম্পদং ।।
শত্রুহানিঃপরোমোক্ষস্তূয়তেসানকিংজনৈঃ ।।প্রথমং

পঠেত্তদেব্যাস্ত্রন্ত্রহাস্তুতিঃস্মৃতঃ ।।কীলকেনৈ
সমাখ্যাতাপশ্চাস্মেপ্তশতীস্তুতিঃ ।।নিষ্কীলকত
তঃশত্রাখ্যাতানিষ্কীলকারণাতং ।।দেব্যাস্তৈৱম
হাত্ম্যাংতেনাভীষ্টফলানাচরেতং ।।যঃস্তোত্রমেতদ্ন
ব্রামরমন্নিকায়াঃশ্রেয়স্করংপঠতি ব্রাযদ্ৱিমষ্ঠা

ণোতিঃ ।।মাধ্যেহিকিংফলমৱাপ্যরিৱাজতেসোত্রা
য়েতংপ্রিয়তমোমমদিবক্ষণানাম্ ।।৬।। ৩।।
ইতিসপ্তশতীকীলকম্ং ।। ।। সম্পূর্ণম্ ।। ।।
ওঁযদক্ষরেত্যাদি ।। ।। ।। ৩ ।। ।। ।। ৩।।





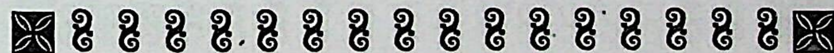
ष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्। ससिद्धःसगणः सोपि गन्धर्व्वो जायते वने॥ न चैवापदमाप्नोति भयं क्वा पि न जायते। नापमृत्युभयम्वापि मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्व्वीत अकुर्वाणो विनश्यति। ततो ज्ञात्वै व सम्पन्नमिदम्प्रारभ्यते बुधैः॥ सौभाग्यादि च यत्कि

ञ्चिद्दृश्यते ललनाजंने। तत्सर्व्वं त्वत्प्रसादेन तेन जा प्यमिदं शुभम्॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्प त्तिरुच्चकैः। भवत्येव समग्रापि तत प्रारभ्यमेव त त् ॥ ऐश्वर्य्यं त्वत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः॥ शत्रुहानिः परो मोक्षस्तूयते सा न किं जनैः॥ प्रथमं

पठते देव्याह्यग्रे भूत्वा शुचिः स्थितः॥ कीलकेयं समाख्याता पश्चात्सप्तशतीस्तुतिः॥ निष्कीलकं त तः कृत्वा ख्याता निष्कीलकारणात्॥ देव्याश्चैव म हाभक्त्या तेनाभीष्टफला भवेत्॥ यः स्तोत्रमेतदनु वासरमम्बिकायाः श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृ

णोति॥ स ह्यैहिकं फलमवाप्य विराजतेऽसौ जा येत च प्रियतमो मदिरेक्षणानाम्॥ ॥ ॥
इति सप्तशतीकीलकम्॥ ॥ सम्पूर्णम्॥ ॥
ॐ यदक्षरेत्यादि[१]॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१.यदक्षरपदभ्रष्टम्मात्राहीनञ्च यद्भवेत्।
तत्सर्व्वं क्षम्यतान्देवि कस्य वै निश्चलम्मनः॥



ওঁ নমস্তস্মৈ ।। চণ্ডিকামন্ত্ৰপ্ৰতিকান্ত বস্য নাৰায়ণঋষিৰনু
ষ্টুপ্ছন্দঃ সৰস্বতী দেৱতা ঋহিঃ শক্তিহ্ৰীম বীজং সৰ্ব
সুস্থকৰহস্যপাঠে বিনিয়োগঃ ।। মাৰ্কণ্ডেয় উৱাচ ।।
যদ্গুহ্যং পৰমং লোকে সৰ্বৰক্ষাকৰং নৃণাং ।। যন্নকস্য
চিদাখ্যাতং তন্মে ব্ৰূহি পিতামহ ।। ব্ৰহ্মোৱাচ ।। অস্তি
গুহ্যতমং বিপ্ৰ সৰ্বভূতোপকাৰকম্ ।। দেব্যাস্তু কৱচং
দিব্যং তচ্ছৃণুষ্ব মহামতে ।। প্ৰথমং শৈলপুত্ৰীতি দ্বিতী
য়ং ব্ৰহ্মচাৰিণী । তৃতীয়ং চন্দ্ৰঘণ্টেতি কুষ্মাণ্ডেতি চ
তুৰ্থকম্ ।। পঞ্চমং স্কন্দমাতেতি ষষ্ঠং কাত্যায়নীতি চ ।।
সপ্তমং কালৰাত্ৰীতি মহাগৌৰীতি চাষ্টমম্ ।। নৱমং সি
দ্ধিদাত্ৰীত নৱদুৰ্গাঃ প্ৰকীৰ্তিতাঃ ।। উক্তান্যেতা
নি নামানি ব্ৰহ্মণৈৱ মহাত্মনা । অগ্নিনা দহ্যমানস্তু
শত্ৰুমধ্যে গতো ৰণে ।। বিষমে দুৰ্গমে চৈৱ ভয়া
ৰ্তাঃ শৰণং গতাঃ ।। ন তেষাং জায়তে কিঞ্চিদশুভং ৰণসঙ্ক
টে ।। নাপদং তস্য পশ্যামি শোকদুঃখভয়ং নহি ।।



अथ कवचम्

ॐ नमस्तस्यै॥ चण्डिकासप्तशतिकास्तवस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः सरस्वतीदेवता अहिःशक्तिर्ब्भ्रामरीबीजं सूर्य्यस्तत्त्वं कवचस्य पाठे विनियोगः॥ मार्क्कण्डेय उवाच॥ यद्गुह्यं परमं लोके सर्व्वरक्षाकरं नृणाम्॥ यन्न कस्यचिदाख्यातन्तन्मे ब्रूहि पितामह॥ ब्रह्मोवाच॥ अस्ति

गुह्यतमं विप्र सर्व्वभूतोपकारकम्। देव्यास्तु कवचं दिव्यं तच्छृणुष्व महामते॥ प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मवादिनी। तृतीयं चण्डघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च॥ सप्तमं कालरात्री च महागौरीति चाष्टमम्॥ नवमं सि

द्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः। उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना। अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे। विषमे दुर्गमे घोरे भयार्ताशरणं गताः॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे। नापदस्तस्य पश्यामि शोकदुःखभयन्नहि॥



যেন্তু ভক্ত্যা স্মৃতা নূনং তেষাং সিদ্ধিঃ প্ৰজায়তে ॥ প্ৰেত
সংস্থা তু চামুণ্ডা বাৰাহী মহিষাসনা ॥ ঐন্দ্ৰী গজসমাৰু
ঢ়া বৈষ্ণৱী গৰুড়াসনা ॥ মাহেশ্বৰী বৃষাৰূঢ়া কৌমাৰী
শিখিবাহনা ॥ ব্ৰাহ্মী হংসসমাৰূঢ়া সৰ্ব্বাভৰণভূষিতা ॥
লক্ষ্মীঃ পদ্মাসনা দেৱী পদ্মহস্তা হৰিপ্ৰিয়া ॥ শ্বেতৰূপ
ধৰা দেৱী ঈশ্বৰী বৃষবাহনা ॥ ইত্যেতা মাতৰঃ সৰ্ব্বাঃ সৰ্ব্বযোগ
সমান্বিতাঃ ॥ নানাভৰণশোভাঢ্যা নানাৰত্নোপশোভিতাঃ
শ্ৰেষ্ঠৈশ্চ মৌক্তিকৈঃ সৰ্ব্বা দিব্যহাৰপ্ৰলম্বিভিঃ ॥ ইন্দ্ৰনী
লৈৰ্মহানীলৈঃ পদ্মৰাগৈঃ সুশোভনৈঃ ॥ দৃশ্যন্তে ৰথমা
ৰূঢ়া দেৱ্যঃ ক্ৰোধসমাকুলাঃ ॥ কুন্তায়ুধঞ্চ খড়্গঞ্চ শাৰ্ঙ্গ
মায়ুধমুত্তমম্ ॥ ক্ষানিশঞ্চ ত্ৰিশূলঞ্চ পট্টিশং মুদ্গৰন্তথা ॥
শঙ্খং চক্ৰং গদাং শক্তিং হলঞ্চ মুষলায়ুধম্ ॥ খেটকং তোমৰঞ্চৈ
ৱ পৰশুং পাশমেৱচ ॥ দৈত্যানাং দেহনাশায় ভক্তানামভ
য়ায়চ ॥ ধাৰয়ন্ত্যায়ুধানীত্থং দেৱানাঞ্চ হিতায়বৈ ॥ নমস্তে
ৰুদ্ৰ মহাৰৌদ্ৰে মহাঘোৰপৰাক্ৰমে ॥ মহাবলে মহোৎসাহে
মহাভয়বিনাশিনি ॥ ত্ৰাহি মাং দেৱি দুষ্প্ৰেক্ষ্যে শত্ৰূণাং ভয়ৱ
ৰ্দ্ধিনি ॥ প্ৰাচ্যাং ৰক্ষতু মামৈন্দ্ৰী আগ্নেয্যামগ্নিদেৱতা ॥ দ
ক্ষিণেৱতু বাৰাহী নৈঋতী খড়্গধাৰিণী ॥ প্ৰতীচ্যাং বাৰু
ণী ৰক্ষেদ্বায়ব্যাং মৃগবাহিনী ॥ উদীচ্যাং ৰক্ষ কৌমাৰী ঈ
শান্যাং শূলধাৰিণী ॥ ঊৰ্দ্ধ্বং ৰক্ষতু ব্ৰহ্মাণী অধস্তাদ্বৈষ্ণৱী

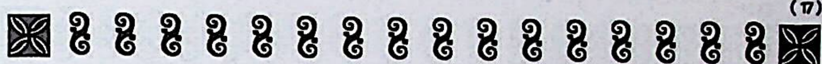
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां सिद्धि प्रजायते।। प्रेत
संस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।। ऐन्द्री गजसमारू
ढ़ा वैष्णवी गरुड़ासना।। माहेष्वरी वृषारूढ़ा कौमारी
शिखिवाहना। ब्राह्मी हंससमारूढा सर्व्वाभरणभूषिता।।
लक्ष्मी पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।। श्वेतरूप
धरा देवी ईश्वरी वृषवाहना। इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोग
समन्विताः। नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः।
श्रेष्ठैश्च मौक्तिकैस्सर्व्वा दिव्यहारप्रलम्बिभिः।। इन्द्रनी
लैर्म्महानीलै पद्मरागैः सुशोभनैः।। दृश्यन्ते रथमा
रूढ़ा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।। कुन्तायुधं च खड्गञ्च शार्ङ्ग
मायुधमुत्तमम्।। कुलिशञ्च त्रिशूलञ्च पट्टिशं मुद्गरन्तथा।।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलञ्च मुसलायुधम्।। खेटकं तोमरञ्चै
व परशुं पाशमेव च।। दैत्यानान्देहनाशाय भक्तानामभ
याय च। धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां तु हिताय वै।। नम
स्तेस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।। महाबले महाका
ये महाभयविनाशिनि।। त्रहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयव
र्द्धिनि। प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।। द
क्षिणे रक्ष वाराहि नैर्ऋत्यां खड्गधारिणि।। प्रतीच्यां वारु
णी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी। उदीच्यां रक्ष कौमारि ऐ
शान्यां शूलधारिणी।। ऊर्ध्वं रक्षतु ब्रह्माणी अधस्ताद्वैष्णवी

তথা৹॥এৱং দশ দিশো ৰক্ষেচ্চামুণ্ডা শৱৱাহনা৹॥জয়া
মেচাগ্ৰতঃ পাতু ৱিজয়া পাতু পৃষ্ঠতঃ ॥অজিতা ৱামপা
ৰ্শ্বে তু দক্ষিণে চাপৰাজিতা৹॥ শিখামুদ্যোতিনী ৰক্ষেদুমা
মূৰ্দ্ধ্নি ব্যৱস্থিতা৹॥ মালাধৰী ললাটে চ ভ্ৰুৱৌ ৰক্ষেদ্যশ
স্বিনী৹॥ ত্ৰিনেত্ৰা চ ভ্ৰুৱোৰ্মধ্যে যমঘণ্টা চ নাসিকে৹॥

শঙ্খিনী চক্ষুষোৰ্মধ্যে শ্ৰোত্ৰয়োৰ্দ্বাৰৱাসিনী৹॥কপো
লৌ কালিকা ৰক্ষেৎ কৰ্ণমূলে তু শাঙ্কৰী৹॥নাসিকায়াং সু
গন্ধা চ উত্তৰোষ্ঠে চ চৰ্চ্চিকা৹॥অধৰে চামৃতকলা জিহ্বা
য়াঞ্চ সৰস্বতী৹॥ দন্তান্ ৰক্ষতু কৌমাৰী কণ্ঠমধ্যে তু চণ্ডি
কা৹॥ ঘণ্টিকাং চিত্ৰঘণ্টা চ মহামায়া চ তালুকে৹॥

কামাক্ষী চিবুকং ৰক্ষেদ্বাচং মে সৰ্ব্বমঙ্গলা৹॥গ্ৰীৱায়াং ভ
দ্ৰকালী চ পৃষ্ঠৱংশে ধনুৰ্দ্ধৰী৹। হস্তয়োৰ্দণ্ডিনী ৰক্ষেদ
ম্বিকা চাঙ্গুলীষু চ৹॥ নখাঞ্ছূলেশ্বৰী ৰক্ষেৎ কুক্ষৌ ৰ
ক্ষেৎ কুলেশ্বৰী৹॥ নীলগ্ৰীৱা বহিঃকণ্ঠে নলিকাং নলকূ
বৰী৹॥ খড়্গধাৰিণ্যুভৌ স্কন্ধৌ বাহূ মে বজ্ৰধাৰিণী৹॥

স্তনৌ ৰক্ষেন্মহাদেৱী মনঃশোকবিনাশিনী৹॥হৃদয়ে ললি
তা দেৱী উদৰে শূলধাৰিণী৹॥ নাভৌ চ কামিনী ৰক্ষেদ্ গুহ্যং
গুহ্যেশ্বৰী তথা৹॥ পূতনা কামিকা মেঢ্ৰং গুদে মহিষৱাহি
কট্যাং ভগৱতী ৰক্ষেজ্জানুনী বিন্ধ্যৱাসিনী৹॥ জঙ্ঘে মহা
বলা ৰক্ষেৎ সৰ্ব্বকামপ্ৰদায়িনী৹॥ গুল্ফয়োৰ্নাৰসিংহী চ

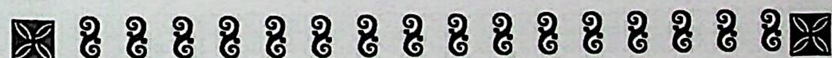


तथा॥ एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना॥ जया
मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥ अजिता वामपा
र्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता॥ शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा
मूर्ध्नि व्यवस्थिता ।मालाधरी ललाटे च भ्रूवोर्म्मध्ये यश
स्विनी॥ त्रिनेत्रा च भ्रुवौ रक्षेद्यमघण्टा च नासिके॥

शङ्खिनी चक्षुषोर्म्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी॥ कपो
लौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी। नासिकायां सु
गन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्च्चिका॥ अधरे चामृतकला जिह्वा
यान्तु सरस्वती। दन्तान्रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये तु चण्डि
का॥ घण्टिकाञ्चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।

कामाक्षा चिबुकं रक्षेद्वाचम्मे सर्व्वमङ्गला॥ ग्रीवायां भ
द्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्द्धरी ।हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेद
म्बिका चाङ्गुलीषु च॥ नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ र
क्षेन्नरेश्वरी । नीलग्रीवा बहिष्कण्ठे नलिकां नलकू
वरी॥ खड्गधारिण्युभौ स्कन्धौ बाहू मे वज्रधारिणी।

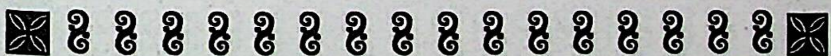
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी॥ हृदये ललि
ता देवी उदरे शूलधारिणी। नाभौ च कामिनी रक्षेद्गुह्यं
गुह्येश्वरी तथा॥ पूतना कामिका मेढ्रे उरू महिषवाहिनी।
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी॥ जङ्घे महा
बला रक्षेत्सर्व्वकामप्रदायिनी॥ गुल्फयोर्न्नारसिंही च



পাদপৃষ্ঠেচতেজসী॥পাদাঙ্গুলীঃশ্ৰীধৰীৰক্ষে
ৎপাদাধস্তলবাসিনী॥নখান্দংষ্ট্ৰাকৰালীচকে
শাংশ্চৈবোৰ্দ্ধকেশিনী॥ৰোমকূপেষুকৌমাৰীত্ব
চংবাগীশ্বৰীতথা॥ৰক্তমজ্জাবসামাংসান্যস্থিমে
দাংসিপাৰ্ব্বতী॥অন্ত্ৰাণিকালৰাত্ৰিশ্চপিত্তঞ্চমুকু
টেশ্বৰী॥পদ্মাৱতীপদ্মকোশেকফেচূড়ামণিস্তথা॥
জ্বালামুখীনখজ্বালামভেদ্যাঃসৰ্ব্বসন্ধিষু॥শুক্ৰংব্ৰহ্মা
ণিমেৰক্ষেচ্ছায়াংছত্ৰেশ্বৰীতথা॥অহঙ্কাৰংমনোবু
দ্ধিংৰক্ষেন্মেধৰ্ম্মধাৰিণী॥প্ৰাণাপানৌতথাব্যানমু
দানঞ্চসমানকম্॥ৱজ্ৰহস্তাচমেৰক্ষেৎপ্ৰাণংকল্
যাণশোভনী॥ৰসেৰূপেচগন্ধেচশব্দেস্পৰ্শেচ
যোগিনী॥সত্ত্বৰজস্তমশ্চৈৱৰক্ষেন্নাৰায়ণীসদা॥
আয়ুৰ্ৰক্ষতুৱাৰাহীধৰ্ম্মংৰক্ষতুৱৈষ্ণৱী॥যশঃকী
ৰ্ত্তিঞ্চলক্ষ্মীঞ্চসদাৰক্ষন্তুমাতৰঃ॥গোত্ৰমিন্দ্ৰাণি
মেৰক্ষেৎপশূন্মেৰক্ষচণ্ডিকা॥পুত্ৰান্ৰক্ষেন্মহাল
ক্ষ্মীৰ্ভাৰ্য্যাংৰক্ষতুভৈৰৱী॥ধনংধনেশ্বৰীৰক্ষেৎকৌমা
ৰীকন্যকাস্তথা॥পন্থানংসুপথাৰক্ষেন্মাৰ্গংক্ষেমঙ্ক
ৰীতথা॥ৰাজদ্বাৰেমহালক্ষ্মীৰ্বিজয়াসৰ্ব্বতঃস্থিতা॥
ৰক্ষেন্মমসৰ্ব্বগাত্ৰাণিদুৰ্গাদুৰ্গাপহাৰিণী॥ৰক্ষাহী
নঞ্চযৎস্থানংবৰ্জ্জিতংকৱচেনতু॥সৰ্ব্বংৰক্ষতুমেদে



पादपृष्ठे च तेजसी।। पादाङ्गुलीः श्रीधरी रक्षे
त्पादाधस्तलवासिनी। नखान् दंष्ट्राकराली च के
शाँश्चैवोर्द्ध्वकेशिनी।। रोमकूपेषु कौमारी त्व
चं वागेश्वरी तथा । रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमे
दांसि पार्व्वती।। अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकु
टेश्वरी। पद्मावती पद्मकोषे कफे चूडामणिस्तथा।।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु। शुक्रं ब्रह्मा
णि मे रक्षेच्छायाक्षेत्रेश्वरी तथा।। अहङ्कारं मनोबु
द्धिं रक्षेन्मे धर्म्मधारिणी। प्राणापानौ तथा व्यानमु
दानञ्च समानकम्।। वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणङ्क
ल्याणशोभिनी। रसे रूपे च गन्धे च शब्दस्पर्शे च
योगिनी।। सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।।
आयुर्म्मे रक्ष वाराही धर्म्मं रक्षतु वैष्णवी।। यशः की
र्त्तिञ्च लक्ष्मीञ्च सदा रक्षन्तु मातरः। गोत्रमिन्द्राणि
मे रक्षेत्पशून्रक्षतु चण्डिका।। पुत्रान्रक्षेन्महाल
क्ष्मीर्भार्य्यां रक्षतु भैरवी। धनं धनेश्वरी रक्षेत्कौमा
री कन्यकास्तथा।। पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमङ्क
री तथा।। राजद्वारे महालक्ष्मीर्व्विजया सर्व्वतः स्थिता।
रक्षेन्मे सर्व्वगात्राणि दुर्गा दुर्गापहारिणी।। रक्षाही
नञ्च यत्स्थानं वर्ज्जितं कवचेन च। सर्व्वं रक्षतु मे दे

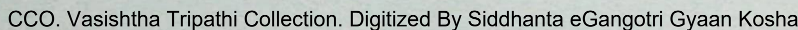


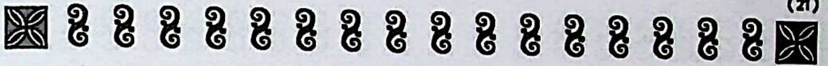
রীজয়ন্তীপাপনাশিনী॥পদমেকন্নগচ্ছেত্তুযদী
চ্ছেচ্ছুভমাত্মনঃ॥কবচেনাবৃতোনিত্যংযত্রযত্রৈ
বগচ্ছতি॥তত্রতত্রার্থলাভশ্চবিজয়ঃসার্ব্বকামি
কঃ॥যংযংচিন্তয়তেকামংতন্তম্প্রাপ্নোতিনিশ্চিতং
পরমৈশ্বর্য্যমতুলম্প্রাপ্স্যতেভূতলেপুমান্॥নি

র্ভয়োজায়তেমর্ত্ত্যঃসংগ্রামেষ্বপরাজিতঃ॥ত্রৈলোক্যেতুভ
বেৎপূজ্যঃকবচেনাবৃতঃপুমান্॥ইদন্তুদেব্যাঃকবচ
ন্দেবানামপিদুর্ল্লভং॥যত্তাদৃক্কবচংকৃত্বাসংগ্রামেষুপ্রবি
শেন্নরঃ॥জিত্বাচসর্ব্বশত্রূন্সহিকল্যাণীংশ্রিয়মাপ্নু
য়াৎ॥যঃপঠেৎপ্রয়তোনিত্যংত্রিসন্ধ্যংশ্রদ্ধয়ান্বিতঃ॥

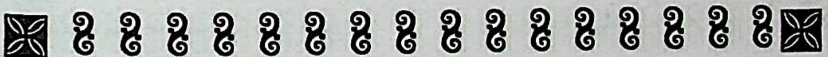
দৈবীকলাভবেত্তস্যত্রৈলোক্যেষ্বপরাজিতঃ॥জীবেদ্ব
র্ষশতংসাগ্রমপমৃত্যুবিবর্জ্জিতঃ।নশ্যন্তিব্যাধয়ঃস
র্ব্বেলূতাবিস্ফোটকাদয়ঃ॥স্থাবরংজঙ্গমঞ্চৈবকৃ
ত্রিমঞ্চাপিযদ্বিষং॥অভিচারাণিসর্ব্বাণিমন্ত্রয
ন্ত্রাণিভূতলে॥ভূচরাঃখেচরাশ্চৈবজলজাশ্চোপ

দেশিকাঃ॥সহজাকুলজামালাডাকিনীশাকিনী
তথা॥অন্তরিক্ষচরাঘোরাডাকিন্যশ্চমহাবলাঃ
গ্রহভূতপিশাচাশ্চযক্ষগন্ধর্ব্বরাক্ষসাঃ॥ব্রহ্মরা
ক্ষসবেতালাঃকুষ্মাণ্ডাভৈরবাদয়ঃ॥নশ্যন্তিদ
র্শনাত্তস্যকবচেহৃদিসংস্থিতে॥মানোন্নতির্ভ্ব



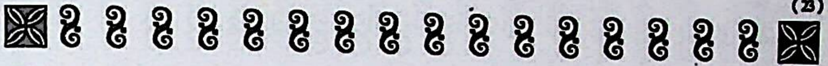


वी जयन्ती पापनाशिनी।। पदमेकन्न गच्छेत्तु यदी
च्छेच्छुभमात्मनः। कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रै
व गच्छति।। तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्व्वकामि
कः।। यं यं चिन्तयते कामं तन्तम्प्राप्नोति लीलया।।
परमैश्वर्य्यमतुलं प्राप्नोत्यविकलः पुमान्। नि
र्भयो जायते मर्त्यः स मेष्वपराजितः।। त्रैलोक्ये स भ
वेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्। इदन्तु देव्या कव
चं देवानामपि दुर्ल्लभम्।। य इदं कवचं कृत्वा स मं प्रवि
शेन्नरः।। जित्वा च स रिपून् सर्व्वान् कल्याणी गृहमाप्नु
यात्।। यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्ये चापराजितः।। जीवेद्व
र्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्ज्जितः ।। नश्यन्ति व्याधयः स
र्व्वे लूताविस्फोटकादयः।। स्थावरं जङ्गमञ्चापि कृ
त्रिमञ्चापि यद्विषम्। अभिचाराणि सर्व्वाणि मन्त्रज
न्त्राणि भूतले।। भूचराःखेचराश्चैव सर्व्वजाश्चोप
देशिकाः। सहजा कुलजा दोषा डाकिनी शाकिनी
तथा।। अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्व्वराक्षसाः।। ब्रह्मरा
क्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः। नश्यन्ति द
र्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।। मानोन्नतिर्भ



রপ্রাপ্তস্তোজাহ্ণহ্ণিঃপরাভরত৷৷যশোমারহিতে
মাপিক্কীমিমণ্ডিতহৃত্যনে৷৷তস্মাজ্জপেন্মেদাভঞা
করতকামদীশ্বনে৷৷জপেন্নেত্ত্রশতী চণ্ডী নরাকরম্ম
শ্রতঃ৷৷শ্মরিন্মুনভারমিহ্নিগুতীজপসমত্তরাঃ৷৷
যারহ্মমণ্ডিনথাত্তমশেন রনকানমম্মু৷৷তারত্রি

তিমোদিন্যীমন্তাতিঃশ্রত্রপৌত্রিকী৷৷দেহান্তেপরমস্থা
নযাস্নেবেবপিহর্লভম্৷৷প্রাপ্নোতিপুরুষোনিত্যমম্ম
মায়াপ্রসাদতঃ৷৷ ❀ ৷৷গতিহরিহরব্রহ্মবিরচিতদেব্যা
কবচমসম্পূর্ণম্৷৷ ❀ ৷৷ ৭ ৷৷ওঁযদক্ষরেরনাদি৷৷:৷৷



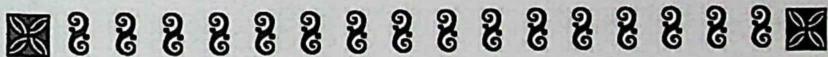
वेत्प्राज्ञस्तेजोवृद्धिः परा भवेत्।। यशसा वर्धते सोपि कीर्त्यामण्डितभूतले।। तस्माज्जपेत्सदा भक्त्या कवचं कामदं मुने।। जपेत्सप्तशतीञ्चण्डीं कृत्वा कवचम ग्रतः। अविघ्नेन भवेत्सिद्धिश्चण्डीजपसमुद्भवा।। यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्। तावत्तिष्ठ ति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी।। देहान्ते परमं स्था नं यत्सुरैरपि दुर्ल्लभम्। प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महा मायाप्रसादतः।। ।। इति हरिहरब्रह्मविरचितं देव्या ष्कवचं सम्पूर्णम्।। ।। ।। ॐ यदक्षरेत्यादि।।

प० भवनाथ मिश्रकृता

कालीस्तुतिः

कालीं सम्मुक्तकेशीं रुचिरचयलसन्मुण्डमालां दधानां
दिग्वस्त्रां कृष्णवर्णां दनुजकरलसत्सप्तकोशोऽभिमध्याम्।
भालेन्दुद्योतिताङ्गीमभयवरयुतां खड्गमुण्डप्रसन्नां
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं दुरितसमुदयध्वंसकर्त्रीं भजामः।।

('मिथिलाशब्दप्रकाश'क मंगलाचरणमे)



দেবীকবচপাঠান্তরং নবার্ণমন্ত্রজপঃ।

অস্যশ্রী নবার্ণমন্ত্রস্য ব্রহ্ম বিষ্ণু রুদ্রা ঋষয়ঃ, গায়ত্র্যুষ্ণিগনুষ্টুভশ্ছন্দাংসি, শ্রীমহাকালী মহা
লক্ষ্মী মহা সরস্বত্যো দেবতাঃ, ঐং বীজম্ হ্রীং শক্তিঃ ক্লীং কীলকম্ শ্রীমহাকালী মহালক্ষ্মী-
মহাসরস্বতী প্রীত্যর্থে শ্রীচণ্ডী সপ্তশতী পাঠাঙ্গত্বেন জপে বিনিয়োগঃ।
ওঁ ব্রহ্ম বিষ্ণু রুদ্র ঋষিভ্যো নমঃ, শিরসি, ওঁ গায়ত্র্যুষ্ণিগনুষ্টুপ্ ছন্দোভ্যো নমঃ মুখে
ওঁ মহাকালী মহালক্ষ্মী মহাসরস্বতী দেবতাভ্যো নমঃ, হৃদি, ওঁ ঐং বীজায় নমঃ, গুহ্যে ওঁ হ্রীং
শক্তয়ে নমঃ, পাদয়োঃ, ওঁ ক্লীং কীলকায় নমঃ, নাভৌ, ইতি ঋষ্যাদিন্যাসমাসমতঃ ওঁ
ঐং হৃদয়ায় নমঃ, ওঁ হ্রীং শিরসে স্বাহা, ওঁ ক্লীং শিখায়ৈ বষট্, ওঁ চামুণ্ডায়ৈ কবচায় হুঁ ওঁ
বিচ্চে নেত্রত্রয়ায় বৌষট্, ওঁ ঐং হ্রীং ক্লীং চামুণ্ডায়ৈ বিচ্চে অস্ত্রায় ফট্. এবমেব করন্যাসমু
প্রকৃতিস্থ বিদধাথযা- ওঁ ঐং অঙ্গুষ্ঠাভ্যাং নমঃ, ওঁ হ্রীং তর্জনীভ্যাং স্বাহা, ওঁ ক্লীং মধ্যমাভ্যাং-
বষট্, ওঁ চামুণ্ডায়ৈ অনামিকাভ্যাং হুং, ওঁ বিচ্চে কনিষ্ঠিকাভ্যাং বৌষট্, ওঁ ঐং হ্রীং ক্লীং
চামুণ্ডায়ৈ বিচ্চে করতলকরপৃষ্ঠাভ্যাং ফট্। অঙ্গন্যাসং করন্যাসং চ বিধায় ধ্যায়েৎ।

अथ देवीकवचपाठोत्तरं नवार्णमन्त्रजपः

ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहा लक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ऐं वीजम् ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थं श्रीदुर्गासप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः॥

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि, ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टप् छन्दोभ्यो नमः मुखे, ॐ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि, ॐ ऐं वीजाय नमः गुह्ये, ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ इति ऋष्यादीन्यस्य षडङ्गान्यसेत्॥

ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्॥ एवमेव करन्यासन्तु पूर्वमेव विदध्याद्यथा ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः,ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ विच्चे कनिष्ठाभ्यां वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलपृष्ठाभ्यां फडिति। ऋष्यादिकराङ्गन्यासोत्तरं ध्यायेत्।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

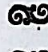
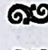
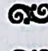
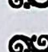
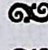


ॐ खड्गिनीत्यादि परिघायुधा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ शूलेनेत्यादि अनेन च तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ प्राच्यामित्यादि तथेश्वरि मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ सौम्यानीत्यादि भुवम् अनामिकाभ्यां हुम्, खड्गशूलगदादीनीत्यादि सर्व्वत कनिष्ठाभ्यां वौषट्, ॐ सर्वस्वरूपे इत्यादि नमोऽस्तुते करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिषडङ्गन्यासङ्कृत्वा श्रीदुर्गान्ध्यात्वाऽध्यायान्ते तमामोल्लेखादिविरामवर्ज्जितमन्त्रदेवाचैक्यभावनया मन्त्रानुसन्धानपूर्व्वकङ्कण्ठपाठाशक्ते आधारपुस्तकं स्थाप्य सम्पूज्य प्रणम्य कम्पादिवर्जितः कृताञ्जलिः प्रणवमुच्चार्य्य मन्त्रान् पठेत्। ध्यानन्तु–

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापङ्गुणं तर्ज्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्राम्भजे।।1।।



ওঁ খড়্গ চক্র গদেষুচাপ পরিঘান্ শূলং ভুশুণ্ডীং শিরঃ। শঙ্খং সন্দধতীং করৈস্ত্রিনয়নাং
সর্ব্বাঙ্গভূষাবৃতাম্॥ নীলাশ্মদ্যুতি মাস্যপাদ দশকাং সেবে মহাকালিকাম্। যামস্তৌৎস্ব-
পিতে হরৌ কমলজো হন্তুং মধুং কৈটভম্॥১॥ ওঁ অক্ষস্রক্ পরশুং গদেষু কুলিশং পদ্মং ধনু-
ষ্কুণ্ডিকাম্। দণ্ডং শক্তিমসিঞ্চ চর্ম্ম জলজং ঘণ্টাং সুরাভাজনম্॥ শূলং পাশসুদর্শনে চ
দধতীং হস্তৈঃ প্রসন্নাননাম্। সেবে সৈরিভমর্দ্দিনীমিহ মহালক্ষ্মীং সরোজস্থিতাম্॥২॥ ওঁ
ঘণ্টাশূল হলানি শঙ্খ মুসলে চক্রং ধনুঃ সায়কম্। হস্তাব্জৈর্দধতীং ঘনান্ত বিলসচ্ছীতাংশুতুল্য
প্রভাম্। গৌরীদেহ সমুদ্ভবাং ত্রিজগতামাধারভূতাং মহাপূর্ব্বামত্র সরস্বতীমনুভজে শুম্ভাদি-
দৈত্যার্দ্দিনীম্॥৩॥ অতিশ্যামাং ওঁ ঐং হ্রীং ক্লীং চামুণ্ডায়ৈ বিচ্চে অতিনবাক্ষরমন্ত্র মার্কণ্ডেয়-
োক্তং জপ্ত্বা সপ্তশতী ন্যাসাদিকং কুর্য্যাদ্যথা —
প্রথম মধ্যমোত্তম চরিত্রাণাং ব্রহ্ম বিষ্ণু রুদ্রা ঋষয়ঃ, শ্রী মহাকালী মহালক্ষ্মী মহাসরস্বত্যো
দেবতাঃ, গায়ত্র্যুষ্ণিগনুষ্টুভশ্ছন্দাংসি, নন্দা শাকম্ভরী ভীমাঃ শক্তয়ঃ, রক্তদন্তিকা দুর্গা
ভ্রামর্য্যো বীজানি, অগ্নিবায়ু সূর্য্যাস্তত্ত্বানি ঋগ্যজুঃ সামবেদা ধ্যানানি, সকল কামনা
সিদ্ধয়ে শ্রী মহাকালী মহালক্ষ্মী মহাসরস্বতী প্রীত্যর্থে পাঠে বিনিয়োগঃ



ॐ खड्गञ्चक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।१।। ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्। दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्। सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।। ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकम्। हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महापूर्व्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।। इति ध्यात्वा ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति नवाक्षरमन्त्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सप्तशतीन्यासादिकङ्कुर्याद्यथा-

प्रथममध्यमोत्तरचरितत्रयाणां ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः गायत्र्यनुष्टुभश्छन्दांसि नन्दाशाकम्भरीभीमाशक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि ऋग्यजुःसामवेदाः ध्यानानि सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।





ওঁ নমশ্চণ্ডিকায়ৈ॥ ওঁ অস্য শ্রীচণ্ডিকাশাপবিমোচ
নমন্ত্রস্য বশিষ্ঠনারদসমবাধিপতিব্রহ্মণঋষয়ঃ স
র্বৈশ্বর্যকারিণী শ্রীদুর্গাদেবতাচরিত্রত্রয়ংবীজংহ্রীং
শক্তিস্বরূপিণী কল্পিতকার্যসিদ্ধ্যর্থে জপে বিনিয়ো
গঃ॥ ওঁ হ্রীং রেতস্বরূপায়ৈ কৈটভমর্দিন্যৈ ব্রহ্ম

नमांहिंस्रापस

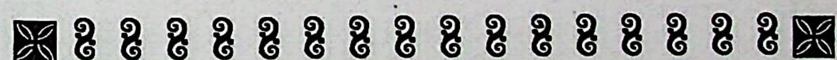
শাপবিমুক্তা ভব॥ ওঁ শ্রীং বুদ্ধিরূপিণ্যৈ সৈন্যনা
শিন্যৈ ব্রহ্মশাপ॥ ওঁ রং রক্তরূপিণ্যৈ মহিষাসুর
মর্দিন্যৈ ব্রহ্মশাপ॥ ওঁ ক্ষুং ক্ষুধারূপিণ্যৈ দেববন্দি
ন্যৈ ব্রহ্মশাপবি॥ ওঁ ছাং ছায়ারূপিণ্যৈ দূতসম্বাদি
ন্যৈ ব্রহ্মশাপবি॥ ওঁ শং শক্তিরূপিণ্যৈ ধূম্রলোচন

ঘাতিন্যৈ ব্রহ্মশাপবি॥ ওঁ হুং তৃষ্ণারূপিণ্যৈ চণ্ডমুণ্ড
বধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ॥ ওঁ ক্ষাং ক্ষান্তিরূপিণ্যৈ রক্তবী
জবধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ॥ ওঁ জাং জাতিরূপিণ্যৈ নিশুম্ভ
বধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ॥ ওঁ লং লজ্জারূপিণ্যৈ শুম্ভব
ধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ॥ ওঁ শাং শান্তিরূপিণ্যৈ দেবস্তু



चण्डिकाशापविमोचनम्

ॐ नमश्चण्डिकायै। ॐ अस्य श्रीचण्डिकाशापविमोचनमन्त्रस्य वशिष्ठनारदसमारा¹धिपतिब्रह्मऋषय: सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गादेवता चरितत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिरूपिणी कल्पितकार्यसिद्धये विनियोग: ॥ ॐ रीं रेतस्स्वरूपायै मधुकैटभमर्द्दिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव॥ ॐ श्रीं बुद्धिरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ रँ रक्तरूपिण्यै महिषासुरमर्द्दिन्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ क्षँ क्षुधारूपिण्यै देववन्दिन्यै ब्रह्मशापवि०। ॐ छाँ छायारूपिण्यै दूतसँवादिन्यै ब्रह्मशापवि०॥ ॐ शँ शक्तिरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्माशापवि०॥ ॐ तृँ तृष्णारूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ क्षाँ क्षान्तिरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ जाँ जातिरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ लँ लज्जारूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ शाँ शान्तिरूपिण्यै देवस्तु

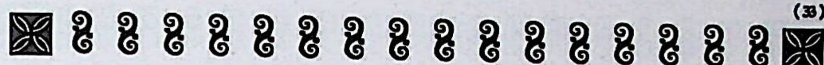





মৈত্রম্মশাপ॰ ॥ ওঁ শ্রীং শ্রীং হ্রাং রূপিণ্যৈ ফলদায়ৈ ব্রহ্মশা
প॰ ॥ ওঁ ক্লীঁ কান্তিরূপিণ্যৈ রাজবরদায়ৈ ব্রহ্মশাপ॰ ॥
ওঁ মাঁ মাহং রূপিণ্যৈ অশ্বিনসহিতায়ৈ ব্রহ্মশাপবিম॰ ॥
ওঁ ক্রীঁ শ্রীঁ হ্রূঁ রুশীয়ৈ সার্দ্ধম্বিধিকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপরি॰ ॥
ওঁ জীঁ ক্রীঁ ওঁ নমঃ শিরায়ৈ ভেদকরঠ রূপিণ্যৈ ব্রহ্ম॰ ॥

ওঁ কালৈ কানি ক্রীঁ ফট্ স্বাহায়ৈ স্বাম্ভে দক্ষরূপিণ্যৈ ব্রহ্ম
শাপবিমুক্তাভর॰ ॥ এই মন্ত্র নজানাতি চণ্ডীপাঠং কা
রাতি যঃ ॥ আত্মানং চৈব দাতারং ক্ষয়ং নির্যাতি সংশ
যঃ ॥ ৩ ॥ ইতি রুদ্রযামলে চণ্ডিকাশাপবিমোচ
নমন্ত্রঃ ॥ ৩ ॥ ওঁ ঘন্টাবগাদি ॥ ৪ ॥ ৩ ॥



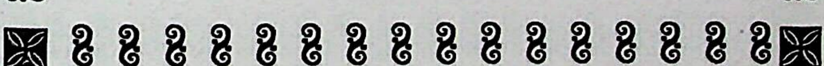



त्यै ब्रह्मशाप०।। ॐ श्रँ श्रद्धारूपिण्यै फलदात्र्यै ब्रह्मशाप०।। ॐ काँ कान्तिरूपिण्यै राजवरदात्र्यै ब्रह्मशाप०।। ॐ माँ मातृरूपिण्यै अर्गलसहितायै ब्रह्मशापविमु०।। ॐ ह्रीं श्रीं हूँ दुर्गायै सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मशापवि०।। ॐ क्लीं ह्रीं ॐ नमः शिवायै अभेदकवचरूपिण्यै ब्रह्म०।।

ॐ काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदरूपिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव।। एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठँ करोति यः । आत्मनश्चैव दातारं क्षयं कुर्यान्न सँशयः।। ।। इति रुद्रजामले चण्डिकाशापविमोचनँ सम्पूर्णम्।। ।। ॐ यदक्षरेत्यादि०।। ।। ।।

---

१ एतय पाण्डुलिपिमे स्पष्ट रूप सँ 'समाराधिपति' अछि। प्रचलितं पाठमे 'सामवेदाधिपति' भेटैछ। मार अर्थात् कामदेवक संग सभक अधिपति' ई अर्थ संगत अछि। एहि पाठान्तरक परम्परा अन्वेष्टव्य अछि।





ওঁ নমশ্চণ্ডিকায়ৈ ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ১ ॥ সাবর্ণিঃ সূৰ্য
তনয়ো যো মনুঃ কথ্যতেঽষ্টমঃ ॥ নিশাময় তদুৎপত্তিং বি
স্তৰাদ্ গদতো মম ॥ ২ ॥ মহামায়ানুভাবেন যথা মন্বন্তৰা
ধিপঃ ॥ স বভূব মহাভাগঃ সাবর্ণিস্তনয়ো ৰবেঃ ॥ ৩ ॥
স্বাৰোচিষেঽন্তৰে পূৰ্ব্বং চৈত্ৰবংশসমুদ্ভবঃ ॥ সুৰথো নাম ৰা
জাভূৎ সমস্তে ক্ষিতিমণ্ডলে ॥ ৪ ॥ তস্য পালয়তঃ সম্যক্ প্ৰজাঃ
পুত্ৰানিবৌৰসান্ ॥ বভূবুঃ শত্ৰবো ভূপাঃ কোলাবিধ্বংসি
নস্তথা ॥ ৫ ॥ তস্য তৈৰভবদ্ যুদ্ধমতিপ্ৰবলদণ্ডিনঃ ॥
ন্যূনৈৰপি স তৈৰ্যুদ্ধে কোলাবিধ্বংসিভিৰ্জ্জিতঃ ॥ ৬ ॥ তত
স্বপুৰমায়াতো নিজদেশাধিপোঽভবৎ ॥ আক্ৰান্তঃ স মহা
ভাগস্তৈস্তদা প্ৰবলাৰিভিঃ ॥ ৭ ॥ অমাত্যৈৰ্বলিভিৰ্দুষ্টৈৰ্দুৰ্বল
স্য দুৰাত্মভিঃ ॥ কোশো বলং চাপহৃতং তত্ৰাপি স্বপুৰে
ততঃ ॥ ৮ ॥ ততো মৃগয়াব্যাজেন হৃতস্বাম্যঃ স ভূপতিঃ
একাকী হয়মাৰুহ্য জগাম গহনং বনম্ ॥ ৯ ॥ স তত্ৰাশ্ৰ
মমদ্ৰাক্ষীদ্ দ্বিজবৰ্য্যস্য মেধসঃ ॥ প্ৰশান্তশ্বাপদাকীৰ্ণম্

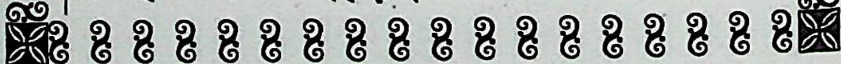


अथ दुर्गासप्तशती प्रारभ्यते

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥१॥ सावर्णिस्सूर्य
तनयो यो मनु कथ्यतेऽष्टमः। निशामय तदुत्पत्तिं वि
स्तराद् गदतो मम॥२॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तरा
धिपः। स बभूव महाभागस्सावर्णिस्तनयो रवेः॥३॥
स्वारोचिषेन्तरे पूर्वञ्चैत्रवंशसमुद्भवः। सुरथो नाम रा
जाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले॥४॥ तस्य पालयतस्सम्यक्प्रजा
पुत्रानिवौरसान्। बभूवुश्शत्रवो भूपा कोलाविध्वंसि
नस्तथा ॥५॥ तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः॥
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः॥६॥ ततः
स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोभवत्। आक्रान्तस्समहा
भागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः॥७॥ अमात्यैर्ब्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्ब्बल
स्य दुरात्मभिः। कोषोबलञ्चापहृतन्तत्रापि स्वपुरे त
तः ॥८॥ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यस्सभूपतिः॥
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्॥९॥ स तत्राश्र
ममद्राक्षीद्द्विजवर्य्यस्य मेधसः। प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मु

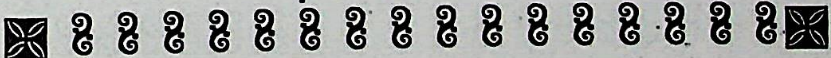


নিশিষ্যোপশোভিতম্॥ ১০॥ তস্থৌ কঞ্চিৎ স কালঞ্চ মুনি
না তেন সৎকৃতঃ॥ ইতশ্চেতশ্চ বিচৰংস্তস্মিন্ মুনিৱৰাশ্র
মে॥ ১১॥ সোঽচিন্তয়ত্তদা তত্র মমত্বাকৃষ্টচেতনঃ॥ মৎপূ
ৰ্বৈঃ পালিতং পূৰ্বং ময়া হীনং পুৰং হি তৎ॥ ১২॥ মদ্ভৃত্যৈস্তৈ
ৰসদ্বৃত্তৈৰ্ধৰ্মতঃ পাল্যতে ন বা॥ ন জানে স প্ৰধানো মে শূ
ৰহস্তী সদামদঃ॥ ১৩॥ মম বৈৰিৱশং যাতঃ কান্ ভোগানুপল
প্স্যতে॥ যে মমানুগতা নিত্যং প্ৰসাদধনভোজনৈঃ॥ ১৪॥
অনুবৃত্তিং ধ্ৰুৱং তেঽদ্য কুৰ্ৱন্ত্যন্যমহীভৃতাম্॥ অসম্যগ্ব্যয়শী
লৈস্তৈঃ কুৰ্ৱদ্ভিঃ সততং ব্যয়ম্॥ ১৫॥ সঞ্চিতঃ সোঽতিদুঃখে
ন ক্ষয়ং কোশো গমিষ্যতি॥ এতচ্চান্যচ্চ সততং চিন্তয়ামাস
পাৰ্থিৱঃ॥ ১৬॥ তত্ৰ বিপ্ৰাশ্ৰমাভ্যাশে বৈশ্যমেকং দদৰ্শ সঃ॥
স পৃষ্টস্তেন কস্ত্বং ভো হেতুশ্চাগমনেঽত্ৰ কঃ॥ ১৭॥ সশোক ই
ৱ কস্মাত্ত্বং দুৰ্মনা ইৱ লক্ষ্যসে॥ ইত্যাকৰ্ণ্য ৱচস্তস্য ভূপ
তেঃ প্ৰণয়োদিতম্॥ ১৮॥ প্ৰত্যুৱাচ স তং বৈশ্যঃ প্ৰশ্ৰয়া
ৱনতো নৃপম্॥ ১৯॥ বৈশ্য উৱাচ॥ ২০॥ সমাধিৰ্না
ম বৈশ্যোঽহমুৎপন্নো ধনিনাং কুলে॥ ২১॥ পুত্ৰদাৰৈৰ্নিৰস্ত
শ্চ ধনলোভাদসাধুভিঃ॥ বিহীনশ্চ ধনৈৰ্দাৰৈঃ পুত্ৰৈ
ৰাদায় মে ধনম্॥ ২২॥ ৱনমভ্যাগতো দুঃখী নিৰস্তশ্চা
প্তবন্ধুভিঃ॥ সোঽহং ন ৱেদ্মি পুত্ৰাণাং কুশলাকুশলাত্মি
কাম্॥ ২৩॥ প্ৰবৃত্তিং স্বজনানাঞ্চ দাৰাণাঞ্চাত্ৰ সংস্থিতঃ॥





निशिष्योपशोभितम् ॥१०॥ तंस्थौ कञ्चित्सकालञ्च मुनि
ना तेन सत्कृतः । इतश्चेतश्च विचरँस्तस्मिन्मुनिवराश्र
मे॥११॥ सोचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः। मत्पू
र्वैं पालितं पूर्व्वम्मया हीनम्पुरं हि तत्॥१२॥ मद्भृत्यैस्तैर
सद्वृत्तैर्धर्म्मत पाल्यते न वा। न जाने स प्रधानो मे शू
रहस्ती सदामदः ॥१३॥ मम वैरिवशय्याँत कान्भोगानुपल
प्स्यते। ये ममानुगतानित्यम्प्रसादधनभोजनैः। । १ ४ । ।
अनुवृत्तिं ध्रुवन्तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्। असम्यग्व्ययशी
लैस्तै कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१५॥ सञ्चितस्सोऽतिदुःखे
न क्षयङ्कोषो गमिष्यति। एतच्चान्यच्च सततञ्चिन्तयामास
पार्थिवः॥१६॥ तत्र विप्राश्रमाभ्यासे वैश्यमेकन्ददर्श सः
स पृष्टस्तेन कस्त्वम्भो हेतुश्चागमनेत्र कः ॥१७॥ सशोक
इव कस्मात्त्वन्दुर्म्मना इव लक्ष्यसे। इत्याकर्ण्य वचस्तस्य
भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥ प्रत्युवाच स तं वैश्य प्रश्रया
वनतो नृपम्॥१९॥ **वैश्य उवाच॥२०॥** समाधिर्न्ना
म वैश्योहमुत्पन्नो धनिनाङ्कुले॥२१॥ पुत्रदारैर्न्निरस्त
श्च धनलोभादसाधुभिः। विहीनश्च धनैर्द्दारै पुत्रै
रादाय मे धनम्॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चा
प्तबन्धुभिः। सोहन्न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मि
काम्॥२३॥ प्रवृत्तिं स्वजनानाञ्च दाराणाञ्चात्र संस्थितः।



কিন্নু তেষাং গৃহে ক্ষেমমক্ষেমং কিন্নু সাম্প্ৰতম্ ।। ২৪ ।। কথন্তে
কিন্নু সদ্বৃত্তা দুৰ্বৃত্তাঃ কিন্নু মে সুতাঃ ।। ২৫ ।। ৰাজোৱাচ ।। ২৬ ।।
যৈৰ্নিৰস্তো ভৱাঁল্লুব্ধৈঃ পুত্ৰদাৰাদিভিৰ্ধনৈঃ ।। ২৭ ।। তে
ষু কিং ভৱতঃ স্নেহমনুবধ্নাতি মানসম্ ।। ২৮ ।। বৈশ্য উৱা
চ ।। ২৯ ।। এৱমেতদ্যথা প্ৰাহ ভৱানস্মদ্গতং ৱচঃ ।। ৩০ ।।

কিং কৰোমি ন বধ্নাতি মম নিষ্ঠুৰতাং মনঃ ।। যৈঃ সন্ত্যজ্য পিতৃ
স্নেহং ধনলুব্ধৈৰ্নিৰাকৃতঃ ।। ৩১ ।। পতিস্বজনহাৰ্দ্দঞ্চ হাৰ্দ্দি
তেষ্বেৱ মে মনঃ ।। কিমেতন্নাভিজানামি জানন্নপি মহাম
তে ।। ৩২ ।। যৎ প্ৰেমপ্ৰৱণং চিত্তং বিগুণেষ্বপি বন্ধুষু ।।
তেষাং কৃতে মে নিশ্বাসো দৌৰ্ম্মনস্যঞ্চ জায়তে ।। ৩৩ ।।

কৰোমি কিং যন্ন মনস্তেষ্বপ্ৰীতিষু নিষ্ঠুৰম্ ।। ৩৪ ।। মাৰ্কণ্ডেয়
উৱাচ ।। ৩৫ ।। ততস্তৌ সহিতৌ বিপ্ৰ তং মুনিং সমুপস্থি
তৌ ।। ৩৬ ।। সমাধিৰ্নাম ৱৈশ্যোঽসৌ স চ পাৰ্থিৱসত্তমঃ ।।
কৃত্বা তু তৌ যথান্যায়ং যথাৰ্হং তেন সম্বিদম্ ।। ৩৭ ।। উপবি
ষ্টৌ কথাঃ কাশ্চিচ্চক্ৰতুৰ্ৱৈশ্যপাৰ্থিৱৌ ।। ৩৮ ।। ৰাজোৱা

চ ।। ৩৯ ।। ভগৱংস্ত্বামহং প্ৰষ্টুমিচ্ছাম্যেকং ৱদস্ব তৎ ।। ৪০ ।।
দুঃখায় যন্মে মনসঃ স্বচিত্তায়ত্ততাং বিনা ।। মমত্বং গতৰাজ্য
স্য ৰাজ্যাঙ্গেষ্বখিলেষ্বপি ।। ৪১ ।। জানতোঽপি যথাজ্ঞস্য
কিমেতন্মুনিসত্তম ।। অয়ঞ্চ নিকৃতঃ পুত্ৰৈৰ্দাৰৈৰ্ভৃত্যৈস্তথো
জ্ঝিতঃ ।। ৪২ ।। স্বজনেন চ সন্ত্যক্তস্তেষু হাৰ্দ্দী তথাপ্যতি

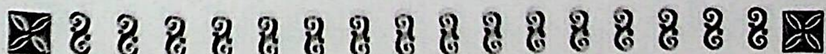


किन्नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमङ्किन्नु साम्प्रतम् ॥२४॥ कथन्ते
किन्नु सद्वृत्ता दुर्व्वृत्ताः किन्नु मे सुताः ॥२५॥ राजोवाच ॥२६॥
यैर्न्निरस्तो भवान् लुब्धै पुत्रदारादिभिर्धनैः॥२७॥ ते
षु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्॥२८॥ वैश्य उवा
च॥२९॥ एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः॥३०॥

किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरताम्मनः॥ यैस्सन्त्यज्य पितृ
स्नेहन्धनलुब्धैर्न्निराकृतः॥३१॥ पतिस्वजनहार्दञ्च हार्दि
तेष्वेव मे मनः। किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महाम
ते ॥३२॥ यत्प्रेमप्रवणञ्चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासादौर्म्मनस्यञ्च जायते॥३३॥

करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥ मार्क्कण्डे
य उवाच ॥३५॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तम्मुनिं समुपस्थि
तौ ॥३६॥ समाधिर्न्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायय्यँथार्हन्तेन संविदम् ॥३७॥ उपवि
ष्टौ कथा काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥३८॥ राजोवा

च ॥३९॥ भगवंस्त्वामहम्प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥
दुःखाय यन्मे मनसस्स्वचित्तायत्ततां विना । ममत्वम्मम राज्य
स्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥४१॥ जानतोपि यथाज्ञस्य
किमेतन्मुनिसत्तम॥ अयञ्च निकृत पुत्रैर्दारैर्भृत्यै
स्तथोज्झितः ॥४२॥ स्वजनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथा

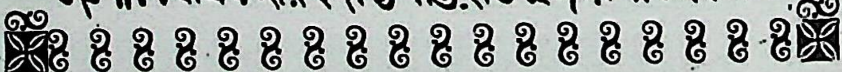


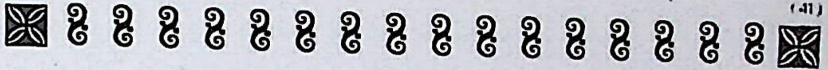


ষ্যতি॥ এবমেষ তথাহঞ্চ দ্বাবপ্যত্যন্তদুঃখিতৌ॥ ৪৩ ॥দৃষ্ট
দোষেঽপি বিষয়ে মমত্বাকৃষ্টমানসৌ॥ তৎকেনৈতন্মহাভাগ য
ন্মোহো জ্ঞানিনোরপি॥ ৪৪ ॥মমাস্য চ ভবত্যেষা বিবেকান্ধ
স্য মূঢ়তা॥ ৪৫ ॥ঋষিরুবাচ॥ ৪৬ ॥জ্ঞানমস্তি সমস্ত
স্য জন্তোর্বিষয়গোচরে॥ ৪৭ ॥বিষয়শ্চ মহাভাগ যাতি

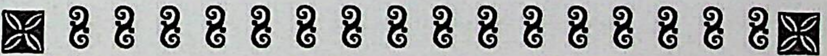
চৈবং পৃথক্ পৃথক্॥ দিবান্ধাঃ প্রাণিনঃ কেচিদ্রাত্রাবন্ধাস্তথা
পরে॥ ৪৮ ॥কেচিদ্দিবা তথা রাত্রৌ প্রাণিনস্তুল্যদৃষ্টয়ঃ॥
জ্ঞানিনো মনুজাঃ সত্যং কিন্তু তে ন হি কেবলম্॥ ৪৯ ॥যতো হি
জ্ঞানিনঃ সর্বে পশুপক্ষিমৃগাদয়ঃ॥ জ্ঞানঞ্চ তন্মনুষ্যাণাং যৎ
তেষাং মৃগপক্ষিণাম্॥ ৫০ ॥মনুষ্যাণাঞ্চ যত্তেষাং তুল্যমন্য
ত্তথোভয়োঃ॥ জ্ঞানেঽপি সতি পশ্যৈতান্ পতঙ্গাঞ্ছাবচঞ্চুষু॥ ৫১ ॥
কণমোক্ষাদৃতান্মোহাৎ পীড্যমানানপি ক্ষুধা॥ মানুষা মনুজ
ব্যাঘ্র সাভিলাষাঃ সুতান্ প্রতি॥ ৫২ ॥লোভাৎ প্রত্যুপকারায় ন
ন্বেতান্ কিং ন পশ্যসি॥ তথাপি মমতাবর্ত্তে মোহগর্ত্তে নিপাতি
তাঃ॥ ৫৩ ॥মহামায়াপ্রভাবেণ সংসারস্থিতিকারিণে॥

তন্নাত্র বিস্ময়ঃ কার্য্যো যোগনিদ্রা জগৎপতেঃ॥ ৫৪ ॥মহামা
য়া হরেশ্চৈষা তয়া সম্মোহ্যতে জগৎ॥ জ্ঞানিনামপি চেতাং
সি দেবী ভগবতী হি সা॥ ৫৫ ॥বলাদাকৃষ্য মোহায় মহামা
য়া প্রযচ্ছতি॥ তয়া বিসৃজ্যতে বিশ্বং জগদেতচ্চরাচরং॥
৫৬ ॥সৈষা প্রসন্না বরদা নৃণাং ভবতি মুক্তয়ে॥ সা বিদ্যা প





प्यति। एवमेष तथाहञ्च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥४३॥ दृष्ट दोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ । तत्केनैतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥४४॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥४५॥ ऋषिरुवाच ॥४६॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्व्विषयगोचरे ॥४७॥ विषयश्च महाभाग जातिश्चैवं पृथक् पृथक्। दिवान्धा प्राणिन केचिद्रात्रावन्धास्तथा परे ॥४८॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः। ज्ञानिनो मनुजास्सत्यङ्किन्तु ते नहि केवलम्॥४९॥ यतो हि ज्ञानिनस्सर्व्वे पशुपक्षिमृगादयः॥ ज्ञानञ्च तन्मनुष्याणां यत्तेषाम्मृगपक्षिणाम् ॥५०॥ मनुष्याणाञ्च यत्तेषान्तुल्यमन्यत्तथोभयोः॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतगाञ्छावचञ्चुषु॥५१॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा॥ मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषास्सुतान्प्रति॥५२॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेते किन्न पश्यसि॥ तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्त्ते निपातिताः ॥५३॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणः। तन्नात्र विस्मय कार्य्यो योगनिद्रा जगत्पतेः॥५४॥ महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्। ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा॥५५॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति। तया विसृज्यते विश्वञ्जगदेतच्चराचरम् ॥५६॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणाम्भवति मुक्तये॥ सा विद्या प



ৰমামুক্তেৰ্হেতুভূতাসনাতনী ॥ ৫৭ ॥ সংসাৰবন্ধহেতুশ্চসৈ
ৱসৰ্ব্বেশ্বৰেশ্বৰী ॥ ৫৮ ॥ ৰাজোৱাচ ॥ ৫৯ ॥ ভগৱন্কাহি
সাদেৱীমহামায়েতিযাংভৱান্ ॥ ৬০ ॥ ব্ৰবীতিকথমুৎপন্না
কৰ্ম্মাস্যাশ্চকিংদ্বিজ ॥ যৎস্বভাৱাচসাদেৱীযৎস্বৰূপাযদুদ্ভৱা ॥
৬১ ॥ তৎসৰ্ব্বংশ্ৰোতুমিচ্ছামিত্বত্তোব্ৰহ্মবিদাম্বৰ ॥ ৬২ ॥

ঋষিৰুৱাচ ॥ ৬৩ ॥ নিত্যৈৱসাজগন্মূৰ্ত্তিস্তয়াসৰ্ব্বমিদন্ততম্ ॥
৬৪ ॥ তথাপিতৎসমুৎপত্তিৰ্বহুধাশ্ৰূয়তাম্মম ॥ দেৱানাংকা
ৰ্য্যসিদ্ধ্যৰ্থমাৱিৰ্ভৱতিসাযদা ॥ ৬৫ ॥ উৎপন্নেতিতদালো
কেসানিত্যাপ্যভিধীয়তে ॥ যোগনিদ্ৰাংযদাবিষ্ণুৰ্জ্জগত্যেকা
ৰ্ণৱীকৃতে ॥ ৬৬ ॥ আস্তীৰ্য্যশেষমভজৎকল্পান্তেভগৱান্

প্ৰভুঃ ॥ তদাদ্বাৱসুৰৌঘোৰৌবিখ্যাতৌমধুকৈটভৌ ॥ ৬৭ ॥ বি
ষ্ণুকৰ্ণমলোদ্ভূতৌহন্তুংব্ৰহ্মাণমুদ্যতৌ ॥ সনাভিকমলেবিষ্ণোঃ
স্থিতোব্ৰহ্মাপ্ৰজাপতিঃ ॥ ৬৮ ॥ দৃষ্ট্বাতাৱসুৰৌচোগ্ৰৌপ্ৰসু
প্তঞ্চজনাৰ্দ্দনম্ ॥ তুষ্টাৱযোগনিদ্ৰান্তামেকাগ্ৰহৃদয়স্থি
তঃ ॥ ৬৯ ॥ বিবোধনাৰ্থায়হৰেৰ্হৰিনেত্ৰকৃতালয়াম্ ॥ ৭০ ॥

ব্ৰহ্মোৱাচ ॥ ৭১ ॥ বিশ্বেশ্বৰীংজগদ্ধাত্ৰীংস্থিতিসংহাৰকাৰিণী
ম্ ॥ নিদ্ৰাংভগৱতীংবিষ্ণোৰতুলাংতেজসঃ ॥ ৭২ ॥ ত্বংস্বা
হাত্বংস্বধাত্বংহিৱষট্কাৰস্বৰাত্মিকা ॥ ৭৩ ॥ সুধাত্বমক্ষৰেনি
ত্যেত্ৰিধামাত্ৰাত্মিকাস্থিতা ॥ অৰ্দ্ধমাত্ৰাস্থিতানিত্যাযানুচ্চাৰ্য্যা
বিশেষতঃ ॥ ৭৪ ॥ ত্বমেৱসাসাৱিত্ৰীত্বংদেৱিজননীপৰা ॥



रमामुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥५७॥ संसारबन्धहेतुश्च सै
व सर्वेश्वरेश्वरी॥५८॥ राजोवाच ॥५९॥ भगवन् का हि
सा देवी महामायेति याम्भवान्॥६०॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा
कर्मास्याश्च किन्द्विज॥ यत्स्वभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा
॥६१॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदाम्बँर॥६२॥

ऋषिरुवाच ॥६३॥ नित्यैव सा जगन्मूर्त्तिस्तया सर्व्वमिदन्ततम्
॥६४॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयताम्मम। देवानाङ्का
र्य्य सिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा॥६५॥ उत्पन्नेति तदा लो
के सा नित्याप्यभिधीयते। योगनिद्राय्यँदा विष्णुर्ज्जगत्येका
र्णवीकृते ॥६६॥ आस्तीर्य्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवा

न्प्रभुः। तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ॥६७॥ वि
ष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ। स नाभिकमले विष्णोः
स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः॥६८॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसु
प्तञ्च जनार्द्दनम्। तुष्टाव योगनिद्रान्तामेकाग्रहृदयस्थि
तः॥६९॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्॥७०॥

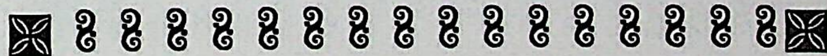
ब्रह्मोवाच ॥७१॥ विश्वेश्वरीञ्जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणी
म्। स्तौमि निद्राम्भगवतीं विष्णोरतुलतेजसः ॥७२॥ त्वं स्वा
हा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारस्वरात्मिका॥७३॥ सुधा त्वमक्षरे नि
त्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता। अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्य्या
विशेषतः ॥७४॥ त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वन्देवि जननी परा।



ত্বয়ৈতদ্ধার্য্যতে বিশ্বন্ত্বয়ৈতৎসৃজ্যতে জগৎ ॥ ৭৫ ॥ ত্বয়ৈতৎপা
ল্যতে দেবি ত্বমৎস্যন্তে চ সর্ব্বদা ॥ বিসৃষ্টৌ সৃষ্টিরূপা ত্বং স্থিতি
রূপা চ পালনে ॥ ৭৬ ॥ তথা সংহৃতিরূপান্তে জগতোহস্য জগন্ম
য়ে ॥ মহাবিদ্যা মহামায়া মহামেধা মহাস্মৃতিঃ ॥ ৭৭ ॥ মহা
মোহা চ ভবতী মহাদেবী মহাসুরী ॥ প্রকৃতিস্ত্বঞ্চ সর্ব্বস্য গুণ
ত্রয়বিভাবিনী ॥ ৭৮ ॥ কালরাত্রির্ম্মহারাত্রির্ম্মোহরাত্রিশ্চ দা
রুণা ॥ ত্বং শ্রীস্ত্বমীশ্বরী ত্বং হ্রীস্ত্বং বুদ্ধির্ব্বোধলক্ষণা ॥ ৭৯ ॥ ল
জ্জা পুষ্টিস্তথা তুষ্টিস্ত্বং শান্তিঃ ক্ষান্তিরেব চ ॥ খড়্গিনী শূলি
নী ঘোরা গদিনী চক্রিণী তথা ॥ ৮০ ॥ শঙ্খিনী চাপিনী বাণ
ভুশুণ্ডীপরিঘায়ুধা ॥ সৌম্যা সৌম্যতরাশেষসৌম্যেভ্যস্ত্ব
তিসুন্দরী ॥ ৮১ ॥ পরাপরাণাং পরমা ত্বমেব পরমেশ্বরী ॥ যচ্চ কি
ঞ্চিৎ ক্বচিদ্বস্তু সদসদ্বাখিলাত্মিকে ॥ ৮২ ॥ তস্য সর্ব্বস্য যা শ
ক্তিঃ সা ত্বং কিং স্তূয়সে তদা ॥ যয়া ত্বয়া জগৎস্রষ্টা জগৎপাত্যত্তি
যো জগৎ ॥ ৮৩ ॥ সোহপি নিদ্রাবশং নীতঃ কস্ত্বাং স্তোতুমিহে
শ্বরঃ ॥ বিষ্ণুঃ শরীরগ্রহণমহমীশান এব চ ॥ ৮৪ ॥ কারি
তাস্তে যতোহতস্ত্বাং কঃ স্তোতুং শক্তিমান্ভবেৎ ॥ সা ত্বমিত্থং প্রভাবৈঃ
স্বৈরুদারৈর্দ্দেবি সংস্তুতা ॥ ৮৫ ॥ মোহয়ৈতৌ দুরাধর্ষাবসুরৌ
মধুকৈটভৌ ॥ প্রবোধঞ্চ জগৎস্বামী নীয়তামচ্যুতো লঘু ॥
৮৬ ॥ বোধশ্চ ক্রিয়তামস্য হন্তুমেতৌ মহাসুরৌ ॥ ৮৭ ॥
ঋষিরুবাচ ॥ ৮৮ ॥ এবং স্তুতা তদা দেবী তামসী তত্র বেধসা

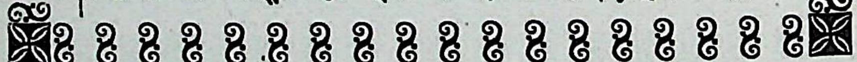


त्वयैतद्धार्य्यते विश्वन्त्वयैतत्सृज्यते जगत्॥७५॥ त्वयैतत्पा
ल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्व्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थिति
रूपा च पालने॥७६॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्म
ये। महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः॥७७॥ महा
मोहा च भवती महादेवी महासुरी। प्रकृतिस्त्वञ्च सर्वस्य गुण
त्रयविभाविनी॥७८॥ कालरात्रिर्म्महारात्रिर्म्मोहरात्रिश्च दा
रुणा। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वम्बुद्धिर्ब्बोधलक्षणा॥७९॥ ल
ज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च। खड्गिनी शूलि
नी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥८०॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा
भुशुण्डी परिघायुधा। सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्व
तिसुन्दरी॥८१॥ परापराणाम्परमा त्वमेव परमेश्वरी। यच्च कि
ञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥८२॥ तस्य सर्व्वस्य या श
क्तिस्सा त्वं किं स्तूयसे तदा। यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पातात्ति
यो जगत् ॥८३॥ सोपि निद्रावशन्नीत कस्त्वां स्तोतुमिहे
श्वरः । विष्णुश्शरीरग्रहणमहमीशान एव च॥८४॥ कारि
तास्ते यतोतस्त्वाङ्कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्। सा त्वमित्थम्प्रभावै
स्स्वैरुदारैर्द्देवि संस्तुता ॥८५॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ
मधुकैटभौ। प्रबोधञ्च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु
॥८६॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥
ऋषिरुवाच ॥८८॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेध





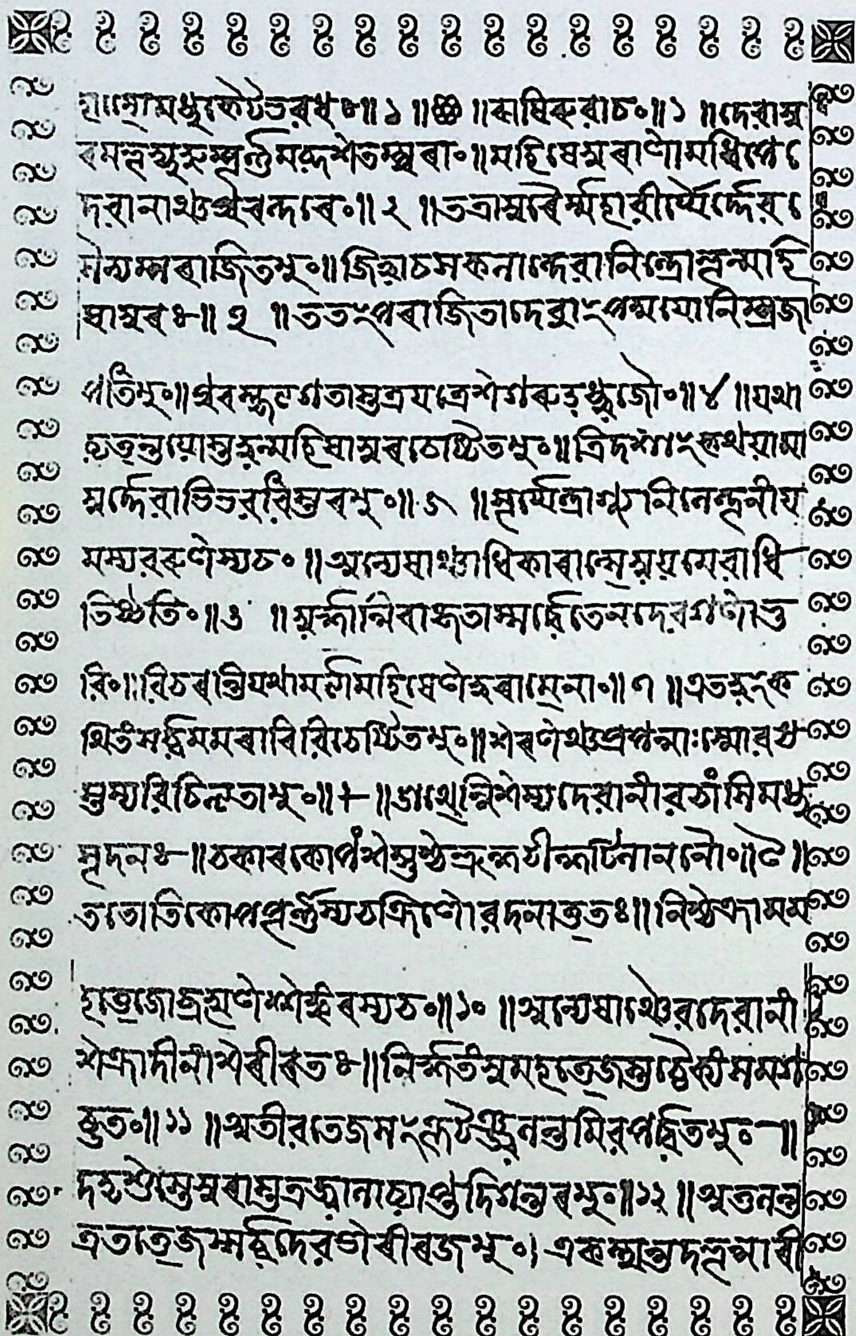
মা॥৮৯॥বিষ্ণোপ্রবোধনার্থায়নিহন্তুংমধুকৈটভৌ॥নেত্রা
স্যনাসিকাবাহুহৃদয়েভ্যস্তথোরসঃ॥৯০॥নির্গম্যদর্শ
নেতস্থৌব্রহ্মণোব্যক্তজন্মনঃ॥উত্তস্থৌচজগন্নাথস্ত
য়ামুক্তোজনার্দ্দনঃ॥৯১॥একার্ণবেহিশয়নাত্ততস্স
দদৃশেচতৌ॥মধুকৈটভৌদুরাত্মানাবতিবীর্য্যপরা
ক্রমৌ॥৯২॥ক্রোধরক্তেক্ষণাবত্তুংব্রহ্মাণঞ্জনিতোদ্য
মৌ॥সমুত্থায়ততস্তাভ্যাংযুযুধেভগবান্হরিঃ॥৯৩॥
পঞ্চবর্ষসহস্রাণিবাহুপ্রহরণোবিভুঃ॥তাবপ্যতিব
লোন্মত্তৌমহামায়াবিমোহিতৌ॥৯৪॥উক্তবন্তৌব
রোস্মত্তোব্রিয়তামিতিকেশবং॥৯৫॥শ্রীভগবানু
বাচ॥৯৬॥ভবেতামদ্যমেতুষ্টৌমমবধ্যাবুভাবপি॥৯৭॥
কিমন্যেনবরেণাত্রএতাবদ্ধিবৃতম্ময়া॥৯৮॥ঋষিরুবা
চ॥৯৯॥বঞ্চিতাভ্যামিতিতদাসর্ব্বমাপোময়ঞ্জগৎ॥
১০০॥বিলোক্যতাভ্যাংগদিতোভগবান্কমলেক্ষণঃ॥প্রীতৌ
স্বস্তবযুদ্ধেনশ্লাঘ্যস্ত্বম্মৃত্যুরাবয়োঃ॥আবাঞ্জহিনযত্রো
র্ব্বীসলিলেনপরিপ্লুতা॥১০১॥ঋষিরুবাচ॥১০২॥তথেত্যু
ক্ত্বাভগবতাশঙ্খচক্রগদাভৃতা॥কৃত্বাচক্রেণবৈছিন্নেজ
ঘনেশিরসীতয়োঃ॥১০৩॥এবমেষাসমুৎপন্নাব্রহ্মণাসং
স্তুতাস্বয়ম্॥প্রভাবমস্যাদেব্যাস্তুভূয়ঃশৃণুবদামিতে॥
১০৪॥ইতিমার্কণ্ডেয়পুরাণেসাবর্ণিকেমন্বন্তরেদেবীম



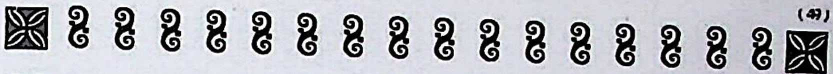


सा ॥८९॥ विष्णोप्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ। नेत्रा
स्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः।।९०।। निर्गम्य दर्श
ने तस्थौ ब्रह्मणोव्यक्तजन्मनः । उत्तस्थौ च जगन्नाथस्त
या मुक्तो जनार्द्दनः ।।९१।। एकार्णवेहिशयनात्ततस्स
ददृशे च तौ। मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्य्यपरा
क्रमौ।।९२।। क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणञ्जनितोद्य
मौ। समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान्हरिः ।।९३।।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः। तावप्यतिब
लोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ।।९४।। उक्तवन्तौ व
रोस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।९५।। श्रीभगवानु
वाच ।।९६।। भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।९७।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतम्मया।।९८।। ऋषिरुवा
च ।।९९।। वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्व्वमापोमयञ्जगत्।।
१००।। विलोक्य ताभ्याङ्गदितो भगवान्कमलेक्षणः।। प्रीतौ
स्वस्तव युद्धेन श्लाघ्यस्त्वन्मृत्युरावयोः।। आवाञ्जहि न यत्रो
र्व्वी सलिलेन परिप्लुता ।।१०१।। ऋषिरुवाच।।१०२।। तथेत्यु
क्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता। कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने ज
घने शिरसी तयोः ।। १०३।। एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा सं
स्तुता स्वयम् । प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते
।।१०४।। इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी मा

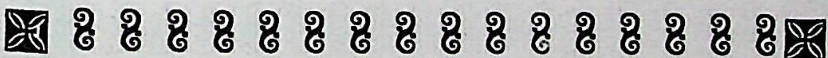




ম মধুকৈটভবধঃ ॥ ১ ॥ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ১ ॥ দেবাসু
রমভূদ্যুদ্ধং পূর্ণমব্দশতং পুরা ॥ মহিষেঽসুরাণামধিপে
দেবানাঞ্চ পুরন্দরে ॥ ২ ॥ তত্রাসুরৈর্মহাবীর্যৈর্দেব
সৈন্যং পরাজিতং ॥ জিত্বা চ সকলান্দেবানিন্দ্রোঽভূন্মহি
ষাসুরঃ ॥ ৩ ॥ ততঃ পরাজিতা দেবাঃ পদ্মযোনিং প্রজা
পতিম্ ॥ পুরস্কৃত্য গতাস্তত্র যত্রেশগরুড়ধ্বজৌ ॥ ৪ ॥ যথা
বৃত্তং তয়োস্তদ্বন্মহিষাসুরচেষ্টিতম্ ॥ ত্রিদশাঃ কথয়ামা
সুর্দেবাভিভববিস্তরম্ ॥ ৫ ॥ সূর্যেন্দ্রাগ্ন্যনিলেন্দূনাং য
মস্য বরুণস্য চ ॥ অন্যেষাঞ্চাধিকারান্ স স্বয়মেবাধি
তিষ্ঠতি ॥ ৬ ॥ স্বর্গান্নিরাকৃতাঃ সর্বে তেন দেবগণা ভু
বি ॥ বিচরন্তি যথা মর্ত্যা মহিষেণ দুরাত্মনা ॥ ৭ ॥ এতদ্বঃ ক
থিতং সর্বমমরারিবিচেষ্টিতম্ ॥ শরণঞ্চ প্রপন্নাঃ স্মো বস্ত
স্য বধশ্চিন্ত্যতাম্ ॥ ৮ ॥ ইত্থং নিশম্য দেবানাং বচাংসি মধু
সূদনঃ ॥ চকার কোপং শম্ভুশ্চ ভ্রুকুটীকুটিলাননৌ ॥ ৯ ॥
ততোঽতিকোপপূর্ণস্য চক্রিণো বদনাত্ততঃ ॥ নিশ্চক্রাম মহ
তেজো ব্রহ্মণঃ শঙ্করস্য চ ॥ ১০ ॥ অন্যেষাঞ্চৈব দেবানাং
শক্রাদীনাং শরীরতঃ ॥ নির্গতং সুমহত্তেজস্তচ্চৈক্যং সমগ
চ্ছত ॥ ১১ ॥ অতীব তেজসঃ কূটং জ্বলন্তমিব পর্বতম্ ॥
দদৃশুস্তে সুরাস্তত্র জ্বালাব্যাপ্তদিগন্তরম্ ॥ ১২ ॥ অতুলং ত
ত্র তত্তেজঃ সর্বদেবশরীরজম্ ॥ একস্থং তদভূন্নারী

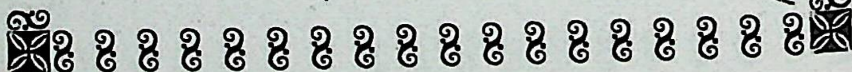


हात्म्ये मधुकैटभवधः॥१॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ देवासु
रमभूद्युद्धम्पूर्णमब्दशतम्पुरा। महिषेसुराणामधिपे
देवानाञ्च पुरन्दरे॥२॥ तत्रासुरैर्म्महावीर्य्यैर्द्देव
सैन्यम्पराजितम्। जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोभून्महि
षासुरः ॥३॥ तत पराजिता देवा पद्मयोनिम्प्रजा
पतिम्। पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुड़ध्वजौ॥४॥ यथा
वृत्तन्तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्। त्रिदशा कथया
मासुर्द्देवाभिभवविस्तरम् ॥५॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां य
मस्य वरुणस्य च। अन्येषाञ्चाधिकारान्स स्वयमेवाधि
तिष्ठति॥६॥ स्वर्गान्निराकृतास्सर्वे तेन देवगणाभु
वि। विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना॥७॥ एतद्व क
थितं सर्वममरारिविचेष्टितम्। शरणञ्च प्रपन्नाः स्मो वध
स्तस्य विचिन्त्यताम्॥८। इत्थन्निशम्य देवानां वचांसि मधु
सूदनः। चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ॥९॥
ततोतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः। निश्चक्राम म
हत्तेजो ब्रह्मणः श्शङ्करस्य च॥१०॥ अन्येषाञ्चैव देवानां
शक्रादीनां शरीरतः। निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समग
च्छत॥११॥ अतीव तेजस कूटञ्ज्वलन्तमिव पर्व्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥१२॥ अतुलन्त
त्र तत्तेजस्सर्व्वदेवशरीरजम्॥ एकस्थन्तदभून्नारी



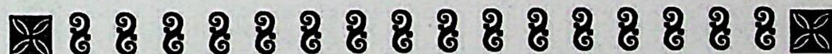


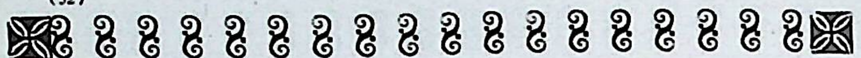
ব্যাপ্তলোকত্রয়ন্ত্বিষা॥১৩॥যদভূচ্ছাম্ভবন্তেজস্তেনাজায়ত
তন্মুখম্॥যাম্যেন চাভবন্কেশা বাহবো বিষ্ণুতেজসা॥১৪॥
সৌম্যেন স্তনয়োর্যুগ্মম্মধ্যঞ্চৈন্দ্রেণ চাভবৎ॥বারুণেন চ জ
ঙ্ঘোরূ নিতম্বস্তেজসা ভুবঃ॥১৫॥ব্রহ্মণস্তেজসা পাদৌ তদ
ঙ্গুল্যোঽর্কতেজসা॥বসূনাঞ্চ করাঙ্গুল্যঃ কৌবেরেণ চ নাসি
কা॥১৬॥তস্যাস্তু দন্তাঃ সম্ভূতাঃ প্রাজাপত্যেন তেজসা॥নয়ন
ত্রিতয়ঞ্জজ্ঞে তথা পাবকতেজসা॥১৭॥ভ্রুবৌ চ সন্ধ্যয়োস্তে
জঃ শ্রবণাবনিলস্য চ॥অন্যেষাঞ্চৈব দেবানাং সম্ভবস্তেজ
সাং শিবা॥১৮॥ততঃ সমস্তদেবানাং তেজোরাশিসমুদ্ভব
াম্॥তাং বিলোক্য মুদম্প্রাপুরমরা মহিষার্দ্দিতাঃ॥১৯॥শূলং
শূলাদ্বিনিষ্কৃষ্য দদৌ তস্যৈ পিনাকধৃক্॥চক্রঞ্চ দত্তবান্কৃষ্ণঃ
সমুৎপাদ্য স্বচক্রতঃ॥২০॥শঙ্খঞ্চ বরুণঃ শক্তিং দদৌ তস্যৈ
হুতাশনঃ॥মারুতো দত্তবাংশ্চাপং বাণপূর্ণে তথেষুধী॥২১॥
বজ্রমিন্দ্রঃ সমুৎপাদ্য কুলিশাদমরাধিপঃ॥দদৌ তস্যৈ
সহস্রাক্ষো ঘণ্টামৈরাবতাদ্গজাৎ॥২২॥কালদণ্ডাদ্য
মো দণ্ডম্পাশঞ্চাম্বুপতির্দ্দদৌ॥প্রজাপতিশ্চাক্ষমালান্দদৌ ব্র
হ্মা কমণ্ডলুম্॥২৩॥সমস্তরোমকূপেষু নিজরশ্মীন্দিবাক
রঃ॥কালশ্চ দত্তবান্খড্গন্তস্যাশ্চর্ম্ম চ নির্ম্মলম্॥২৪॥
ক্ষীরোদশ্চামলং হারমজরে চ তথাম্বরে॥চূডামণিন্তথা
দিব্যং কুণ্ডলে কটকানি চ॥২৫॥অর্দ্ধচন্দ্রন্তথা শুভ্রং কেয়ূ



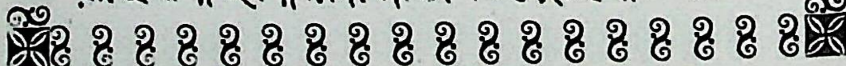


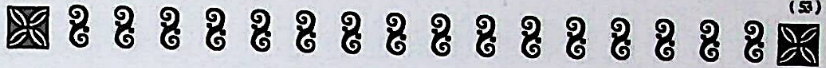
व्याप्तलोकत्रयन्त्विषा॥१३॥ यद्भूच्छाम्भवन्तेजस्तेनाजायत
तन्मुखम्॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥१४॥
सौम्येन स्तनयोर्युग्ममध्यञ्चैन्द्रेण चाभवत्। वारुणेन च ज
ङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः॥१५॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तद
ङ्गुल्योर्क्कतेजसा। वसूनां च कराङ्गुल्य कौबेरेण च नासि
का ॥१६॥ तस्यास्तु दन्तास्सम्भूता प्राजापत्येन तेजसा। नयन
त्रितयञ्जज्ञे तथा पावकतेजसा॥१७॥ भ्रूवौ च सन्ध्ययोस्ते
जश्रवणावनिलस्य च। अन्येषाञ्चैव देवानां सम्भवस्तेज
सां शिवा ॥१८॥ ततस्समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवा
म्। तां विलोक्य मुदम्प्रापुरमरामहिषार्द्दिताः॥१९॥ शूलं
शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। चक्रञ्च दत्तवान्कृष्ण
स्समुत्पाट्य स्वचक्रतः॥२०॥ शङ्खञ्च वरुणश्शक्तिन्ददौ तस्यै
हुताशनः। मारुतो दत्तवाँश्चापम्बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२१॥
वज्रमिन्द्रस्समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः । ददौ तस्यै
सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात्॥२२॥ कालदण्डाद्य
मोदण्डं पाशञ्चाम्बुपतिर्द्ददौ। प्रजापतिश्चाक्षमालान्ददौ ब्र
ह्मा कमण्डलुम् ॥२३॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाक
रः। कालश्च दत्तवान्खड्गन्तस्यै चर्म्म च निर्म्मलम्॥२४॥
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे। चूडामणिन्त
था दिव्यं कुण्डले कटकानि च॥२५॥ अर्धचन्द्रन्तथा शुभ्रङ्केयू





বাহুষু ॥ নূপুৰৌ বিমলৌ তদ্বদ্‌ গ্ৰৈবেয়কমনুত্ত
ম্‌ ॥ ২৬ ॥ অঙ্গুলীয়কৰত্নানি সমস্তাস্বঙ্গুলীষু চ ॥
বিশ্বকৰ্ম্মা দদৌ তস্যৈ পৰশুঞ্চাতিনিৰ্ম্মলম্‌ ॥ ২৭ ॥ অ
স্ত্ৰাণ্যনেকৰূপাণি তথাভেদ্যঞ্চ দংশনম্‌ ॥ অম্লানপঙ্ক
জাং মালাং শিৰস্যুৰসি চাপৰাম্‌ ॥ ২৮ ॥ অদদজ্জলধিস্ত
স্যৈ পঙ্কজঞ্চাতিশোভনম্‌ ॥ হিমবান্‌ বাহনং সিংহং ৰত্নানি বিবি
ধানি চ ॥ ২৯ ॥ দদাবশূন্যং সুৰয়া পানপাত্ৰং ধনাধিপঃ ॥ শে
ষশ্চ সৰ্ব্বনাগেশো মহামণিবিভূষিতম্‌ ॥ ৩০ ॥ নাগহাৰং
দদৌ তস্যৈ ধত্তে যঃ পৃথিবীমিমাম্‌ ॥ অন্যৈৰপি সুৰৈ
ৰ্দ্দেবী ভূষণৈৰায়ুধৈস্তথা ॥ ৩১ ॥ সম্মানিতা ননাদোচ্চৈ
ঃ সাট্টহাসং মুহুৰ্ম্মুহুঃ ॥ তস্যা নাদেন ঘোৰেণ কৃৎস্নমাপূৰিত
ং নভঃ ॥ ৩২ ॥ অমায়তাতিমহতা প্ৰতিশব্দো মহানভূৎ ॥
চুক্ষুভুঃ সকলা লোকাঃ সমুদ্ৰাশ্চ চকম্পিৰে ॥ ৩৩ ॥ চচাল
বসুধা চেলুঃ সকলাশ্চ মহীধৰাঃ ॥ জয়েতি দেবাশ্চ মুদা তা
মূচুঃ সিংহবাহিনীম্‌ ॥ ৩৪ ॥ তুষ্টুবুৰ্ম্মুনয়শ্চৈনাং ভক্তিন
ম্ৰাত্মমূৰ্ত্তয়ঃ ॥ দৃষ্ট্বা সমস্তং সংক্ষুব্ধং ত্ৰৈলোক্যমমৰাৰয়ঃ ॥ ৩৫
সন্নদ্ধাখিলসৈন্যাস্তে সমুত্তস্থুৰুদায়ুধাঃ ॥ আঃ কিমেতদি
তি ক্ৰোধাদাভাষ্য মহিষাসুৰঃ ॥ ৩৬ ॥ অভ্যধাৱত তং শব্দম
শেষৈৰসুৰৈৰ্বৃতঃ ॥ স দদৰ্শ ততো দেবীং ব্যাপ্তলোকত্ৰ
য়াং ত্বিষা ॥ ৩৭ ॥ পাদাক্ৰান্ত্যা নতভুৱং কিৰীটোল্লিখিতা





रान्तसर्वबाहुषु। नूपुरौ विमलौ तद्वत्‍ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥२६॥ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वाङ्गुलीषु च। विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुञ्चातिनिर्म्मलम्॥२७॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यञ्च दंशनम्। अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्॥२८॥ अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजञ्चातिशोभनम्। हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च॥२९॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः। शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्॥३०॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते य पृथिवीमिमाम्। अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा॥३१॥ सम्मानिता ननादोच्चैस्साट्टहासं मुहुर्म्मुहुः। तस्यानादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितन्नभः ॥३२॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्। चुक्षुभुस्सकला लोकास्समुद्राश्च चकम्पिरे॥३३॥ चचाल वसुधा चेलुस्सकलाश्च महीधराः। जयेति देवाश्च मुदा तामूचुस्सिंहवाहिनीम्॥३४॥ तुष्टुवुर्म्मुनयश्चैनाम्भक्तिनम्रात्ममूर्त्तयः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धन्त्रैलोक्यममरारयः॥३५॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः। आ किमेतदिति क्रोधादाकृष्य महिषासुरः॥३६॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्व्वृतः। स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयान्त्विषा॥३६॥ पादाक्रान्त्या नतभुवङ्किरीटोल्लिखिता



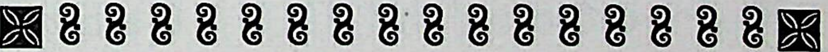


ম্বৰাম্ ॥ ক্ষোভিতাশেষপাতালাং ধনুৰ্জ্যানিস্বনেন তাম্ ॥ ৩৮ ॥
দিশো ভুজসহস্ৰেণ সমন্তাদ্ব্যাপ্য সংস্থিতাম্ ॥ ততঃ প্ৰৱবৃ
তে যুদ্ধং তয়া দেৱ্যা সুৰদ্বিষাম্ ॥ ৩৯ ॥ শস্ত্ৰাস্ত্ৰৈৰ্বহুধামু
ক্তৈৰাদীপিতদিগন্তৰম্ ॥ মহিষাসুৰসেনানীশ্চিক্ষুৰা
খ্যো মহাসুৰঃ ॥ ৪০ ॥ যুযুধে চামৰশ্চান্যৈশ্চতুৰঙ্গ
বলান্বিতঃ ॥ ৰথানামযুতৈঃ ষড্ভিৰুদগ্ৰাখ্যো মহাসুৰঃ ॥ ৪১ ॥
অযুধ্যতাযুতানাঞ্চ সহস্ৰেণ মহাহনুঃ ॥ পঞ্চাশদ্ভিশ্চ নিযু
তৈৰসিলোমা মহাসুৰঃ ॥ ৪২ ॥ অযুতানাং শতৈঃ ষড্ভিৰ্বা
ষ্কলো যুযুধে ৰণে ॥ গজবাজিসহস্ৰৌঘৈৰনেকৈঃ প
ৰিবাৰিতঃ ॥ ৪৩ ॥ বৃতো ৰথানাং কোট্যা চ যুদ্ধে তস্মি
ন্নযুধ্যত ॥ বিডালাখ্যোযুতানাঞ্চ পঞ্চাশদ্ভিৰথাযু
তৈঃ ॥ ৪৪ ॥ যুযুধে সংযুগে তত্ৰ ৰথানাং পৰিবাৰিতঃ ॥
অন্যে চ তত্ৰাযুতশো ৰথনাগহযৈৰ্বৃতাঃ ॥ ৪৫ ॥ যুযু
ধুঃ সংযুগে দেৱ্যা সহ তত্ৰ মহাসুৰাঃ ॥ কোটিকোটিস
হস্ৰৈস্তু ৰথানাং দন্তিনাং তথা ॥ ৪৬ ॥ হযানাঞ্চ বৃতো
যুদ্ধে তত্ৰাভূন্মহিষাসুৰঃ ॥ তোমৰৈৰ্ভিন্দিপালৈশ্চ শক্তি
ভিৰ্মুষলৈস্তথা ॥ ৪৭ ॥ যুযুধুঃ সংযুগে দেৱ্যা খড্গৈঃ প
ৰশুপট্টিশৈঃ ॥ কেচিচ্চ চিক্ষিপুঃ শক্তীঃ কেচিৎ পাশাং
স্তথাপৰে ॥ ৪৮ ॥ দেৱীং খড্গপ্ৰহাৰৈস্তু তে তাং হন্তুং প্ৰ
চক্ৰমুঃ ॥ সাপি দেৱী ততস্তানি শস্ত্ৰাণ্যস্ত্ৰাণি চণ্ডিকা ॥





म्बराम्॥ क्षोभिताशेषपातालान्धनुर्ज्ज्यानिस्वनेन ताम्॥३८॥
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम्। तत प्रववृ
ते युद्धन्तया देव्या सुरद्विषाम्॥३९॥ शस्त्रास्त्रैर्ब्बहुधा मु
क्तैरादीपितदिगन्तरम्। महिषासुरसेनानीश्चिक्षुरा
ख्यो महासुरः॥४०॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गब
लान्वितः। रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्योमहासुरः॥४१॥
अयुध्यतायुतानाञ्च सहस्रेण महाहनुः। पञ्चाशद्भिश्च नियु
तैरसिलोमा महासुरः॥४२॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्ब्बा
ष्कलो युयुधे रणे। गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः प
रिवारितः॥४३॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मि
न्नयुध्यत। विडालाख्यो युतानाञ्च पञ्चाशद्भिरथायु
तैः॥४४॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानाम्परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्व्वृताः॥४५॥ युयु
धुस्संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः। कोटिकोटिस
हस्रैस्तु रथानान्दन्तिनान्तथा॥४६॥ हयानाञ्च वृतो
युद्धे तत्राभून्महिषासुरः। तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्ति
भिर्म्मुसलैस्तथा॥४७॥ युयुधुः संयुगे देव्याष्खड्गैः प
रशुपट्टिशैः। केचिच्च चिक्षिपुश्शक्तीष्केचित्पाशाँ
स्तथापरे॥४८॥ देवीङ्खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुम्प्र
चक्रमुः। सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका॥



৪৯॥ লীলয়ৈব প্রচিচ্ছেদ নিজশস্ত্রাস্ত্রবর্ষিণী ॥ অনায়স্তা
ননা দেবী স্তূয়মানা সুরর্ষিভিঃ ॥ ৫০ ॥ মুমোচাসুরদেহেষু
শস্ত্রাণ্যস্ত্রাণি চেশ্বরী ॥ সোঽপি কোপাদ্ধুতসটো দেব্যা বাহ
নকেশরী ॥ ৫১ ॥ চচারাসুরসৈন্যেষু বনেষ্বিব হুতাশ
নঃ ॥ নিঃশ্বাসান্মুমুচে যাংশ্চ যুধ্যমানা রণেঽম্বিকা ॥ ৫২ ॥
ত এব সদ্যঃ সম্ভূতা গণাঃ শতসহস্রশঃ ॥ যুযুধুস্তে পর
শুভির্ভিন্দিপালাসিপট্টিশৈঃ ॥ ৫৩ ॥ নাশয়ন্তোঽসুরগ
ণান্দেবীশক্ত্যুপবৃংহিতাঃ ॥ অবাদয়ন্ত পটহান্গণাঃ
শঙ্খাংস্তথাপরে ॥ ৫৪ ॥ মৃদঙ্গাংশ্চ তথৈবান্যে ত
স্মিন্যুদ্ধমহোৎসবে ॥ ততো দেবী ত্রিশূলেন গদয়া
শক্তিবৃষ্টিভিঃ ॥ ৫৫ ॥ খড়্গাদিভিশ্চ শতশো নিজঘা
ন মহাসুরান্ ॥ পাতয়ামাস চৈবান্যান্ঘণ্টাস্বনবিমো
হিতান্ ॥ ৫৬ ॥ অসুরান্ভুবি পাশেন বদ্ধ্বা চান্যানকর্ষ
য়ৎ ॥ কেচিদ্দ্বিধাকৃতাস্তীক্ষ্ণৈঃ খড়্গপাতৈস্তথাপরে ॥
৫৭ ॥ বিপোথিতা নিপাতেন গদয়া ভুবি শেরতে ॥ বেমু
শ্চ কেচিদ্রুধিরং মুষলেন ভৃশং হতাঃ ॥ ৫৮ ॥ কেচিন্নিপ
তিতা ভূমৌ ভিন্নাঃ শূলেন বক্ষসি ॥ নিরন্তরাঃ শরৌ
ঘেণ কৃতাঃ কেচিদ্রণাজিরে ॥ ৫৯ ॥ শ্যেনানুকারি
ণঃ প্রাণান্মুমুচুস্ত্রিদশার্দনাঃ ॥ কেষাঞ্চিদ্বাহবশ্ছি
ন্নাশ্ছিন্নগ্রীবাস্তথাপরে ॥ ৬০ ॥ শিরাংসি পেতুরন্যে

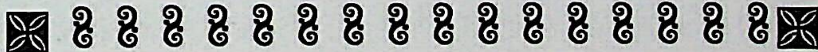


४९॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी । अनायस्ता
नना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः॥५०॥ मुमोचासुरदेहेषु
शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी। सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाह
नकेसरी॥५१॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताश
नः। निःश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेम्बिका॥५२॥

त एव सद्यस्सम्भूतागणाश्शतसहस्रशः ॥ युयुधुस्ते पर
शुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः॥५३॥ नाशयन्तोसुरग
णान्देवीशक्त्युपबृंहिताः । अवादयन्त पटहान् गणा
श्शङ्खाँस्तथा परे॥५४॥ मृदङ्गाँश्च तथैवान्ये त
स्मिन्युद्धमहोत्सवे। ततो देवी त्रिशूलेन गदया

शक्तिवृष्टिभिः॥५५॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघा
न महासुरान्। पातयामास चैवान्याञ्घण्टास्वनविमो
हितान्॥५६॥ असुरान्भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्ष
यत्। केचिद्द्विधा कृतास्तीक्ष्णैष्खड्गपातैस्तथापरे
॥५७॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते। वेमु

श्च केचिद्रुधिरम्मुसलेन भृशं हताः॥५८॥ केचिन्निप
तिता भूमौ भिन्नाशूलेन वक्षसि। निरन्तराश्शरौ
घेण कृता केचिद्रंणाजिरे॥५९॥ श्येनानुकारि
ण प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्द्दनाः। केषाञ्चिद्बाहवश्छि
न्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे॥६०॥ शिरांसि पेतुरन्ये

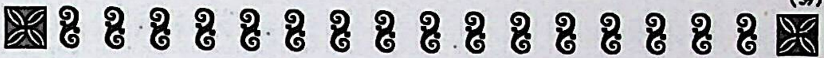


সামন্যমধ্যারিদারিতাঃ॥ ৰিচ্ছিন্নজঘনাস্ত্বপৰে পেত
ৰুৰ্ব্যাং মহাসুৰাঃ॥৬১॥ একবাহ্বক্ষিচৰণাঃ কেচিদ্দে
ব্যা দ্বিধা কৃতাঃ॥ ছিন্নেঽপি চান্যে শিৰসি পতিতাঃ পু
নৰুত্থিতাঃ॥৬২॥ কবন্ধা যুযুধুৰ্দেব্যা গৃহীতপৰ
মায়ুধাঃ॥ ননৃতুশ্চাপৰে তত্ৰ যুদ্ধে তূৰ্য্যলয়াশ্ৰিতাঃ

৬৩॥ কবন্ধাশ্ছিন্নশিৰসঃ খড়্গশক্ত্যৃষ্টিপাণয়ঃ॥ তিষ্ঠ
তিষ্ঠেতি ভাষন্তো দেবীমন্যে মহাসুৰাঃ॥৬৪॥ পাতিতৈ ৰথ
নাগাশ্বৈৰসুৰৈশ্চ বসুন্ধৰা॥ অগম্যা সাভবত্তত্ৰ যত্ৰাভূৎস
মহাৰণঃ॥৬৫॥ শোণিতৌঘা মহানদ্যস্সদ্যস্তত্ৰ প্ৰসু
স্ৰুবুঃ॥ মধ্যে চাসুৰসৈন্যস্য বাৰণাসুৰবাজিনাং॥৬৬॥

ক্ষণেন তন্মহাসৈন্যমসুৰাণাং তথাম্বিকা॥ নিন্যে ক্ষয়ং যথা বহ্নি
স্তৃণদাৰুমহাচয়ং॥৬৭॥ স চ সিংহো মহানাদমুৎসৃজ
ন্ধুতকেসৰঃ॥ শৰীৰেভ্যোঽমৰাৰীণামসূনিব বিচিন্বতি॥
৬৮॥ দেব্যা গণৈশ্চ তৈস্তত্ৰ কৃতং যুদ্ধং তথাসুৰৈঃ॥ যথৈষাং
তুতুষুৰ্দেবাঃ পুষ্পবৃষ্টিমুচো দিবি॥৬৯॥ ইতি মাৰ্কণ্ডে

য়পুৰাণে সাবৰ্ণিকে মন্বন্তৰে দেবীমাহাত্ম্যে মহিষাসু
ৰসৈন্যবধঃ॥২॥ ॥ ঋষিৰুবাচ॥১॥ নিহন্যমানং
তৎসৈন্যমৱলোক্য মহাসুৰঃ॥ সেনানীশ্চিক্ষুৰঃ কোপা
দ্যযৌ যোদ্ধুমথাম্বিকাং॥২॥ স দেবীং শৰবৰ্ষেণ ববৰ্ষ
সমৰেঽসুৰঃ॥ যথা মেৰুগিৰেঃ শৃঙ্গং তোয়বৰ্ষেণ তোয়

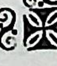


षामन्ये मध्ये विदारिताः। विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतु
रुर्व्याम्महासुराः॥६१॥ एकबाह्वक्षिचरणा केचिद्दे
व्या द्विधा कृताः। छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिता पु
नरुत्थिताः॥६२॥ कबन्धा युयुधुर्द्देव्यागृहीतपर
मायुधाः। ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्य्यलयाश्रिताः
६३॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः। तिष्ठ
तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः॥६४॥ पातितैरथ
नागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा। अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स
महारणः॥६५॥ शोणितौघा महानद्यस्सद्यस्तत्र विसु
स्रुवुः। मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्॥६६॥
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणान्तथाम्बिका। निन्ये क्षयय्यँथा व
ह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥६७॥ स च सिंहो महानादमुत्सृज
न्धुतकेसरः। शरीरेभ्योमरारीणामसूनिव विचिन्वति
॥६८॥ देव्यागणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः॥ यथैषां
न्तुष्टुवुर्द्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥६९॥ इति मार्क्क
ण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासु
रसैन्यवधः॥२॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ निहन्यमान
न्तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः। सेनानीश्चिक्षुरः कोपा
द्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥२॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष
समरेऽसुरः॥ यथा मेरुगिरेश्शृंगन्तोयवर्षेण तोय





দষ্টম্॥৩ ॥ততশ্ছিন্নাততাদ্দেবীলীলয়ৈবশরোৎকরান্।
জঘানতুরগান্বাণৈর্যন্তারঞ্চৈববাজিনাম্॥৪ ॥চিচ্ছে
দচধনুঃসদ্যোধ্বজঞ্চাতিসমুচ্ছ্রিতম্।॥বিব্যাধচৈবগা
ত্রেষুছিন্নধন্বানমাশুগৈঃ॥ ৫ ॥সচ্ছিন্নধন্বাবিরথো
হতাশ্বোহতসারথিঃ॥অভ্যধাবততাংদেবীংখড্গচর্মধ
রোঽসুরঃ॥৬ ॥সিংহমাহত্যখড্গেনতীক্ষ্ণধারেণমূর্দ্ধনি।
আজঘানভুজেসব্যেদেবীমপ্যতিবেগবান্॥৭ ॥ত
স্যাঃখড্গোভুজংপ্রাপ্যপফালনৃপনন্দন।॥ততোজ
গ্রাহশূলংসকোপাদরুণলোচনঃ॥৮ ॥চিক্ষেপচ
ততস্তত্তুভদ্রকাল্যাংমহাসুরঃ॥জাজ্বল্যমানন্তেজো
ভীরবিবিম্বমিবাম্বরাৎ॥৯ ॥দৃষ্ট্বাতদাপতচ্ছূলন্দে
বীশূলমমুঞ্চত।॥তচ্ছূলংশতধাতেননীতংসচমহা
সুরঃ॥১০ ॥হতেতস্মিন্মহাবীর্যেমহিষস্যচমূপতৌ।
আজগামগজারূঢ়শ্চামরস্ত্রিদশার্দ্দনঃ॥১১ ॥
সোঽপিশক্তিংমুমোচাথদেব্যাস্তামম্বিকাদ্রুতম্।॥
হুঙ্কারাভিহতাংভূমৌপাতয়ামাসনিষ্প্রভাম্॥১২ ॥ভগ্নাংশ
ক্তিংনিপতিতাংদৃষ্ট্বাক্রোধসমন্বিতঃ॥চিক্ষেপচামরঃশূ
লংবাণৈস্তদপিসাচ্ছিনৎ॥১৩ ॥ততঃসিংহঃসমুৎপত্যগ
জকুম্ভান্তরস্থিতঃ॥বাহুযুদ্ধেনযুযুধেতেনোচ্চৈস্ত্রি
দশারিণা॥১৪ ॥যুধ্যমানৌততস্তৌতুতস্মান্নাগা

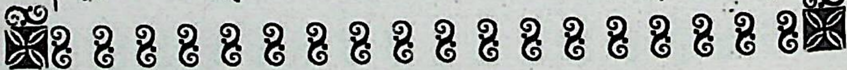


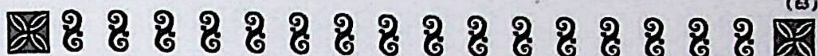


दः॥३॥ तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान्बाणैर्य्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥४। चिच्छे
द च धनुस्सद्यो ध्वजञ्चातिसमुच्छ्रितम्। विव्याध चैव गा
त्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः॥५॥ स च्छिन्नधन्वा विरथो
हताश्वो हतसारथिः । अभ्यधावत तान्देवीङ्खड्गचर्मध
रोसुरः॥६॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्द्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्॥७॥ त
स्याष्खड्गो भुजम्प्राप्य पफाल नृपनन्दन। ततो ज
ग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः॥८॥ चिक्षेप च
ततस्तत्तु भद्रकाल्याम्महासुरः। जाज्वल्यमानन्तेजो
भीरविबिम्बमिवाम्बरात्॥९॥ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं दे
वी शूलममुञ्चत। तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महा
सुरः॥१०॥ हते तस्मिन्महावीर्य्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः॥११॥
सोपि शक्तिम्मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुङ्काराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥१२॥ भग्नां श
क्तिन्निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः। चिक्षेप चामरः शू
लम्बाणैस्तदपि साच्छिनत्॥१३॥ ततस्सिंहस्समुत्पत्य ग
जकुम्भान्तरस्थितः। बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रि
दशारिणा॥१४॥ युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागा

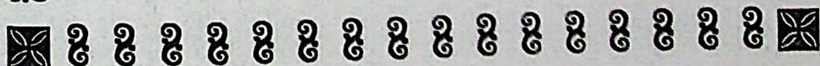


ন্মহীধ্রাতৌ॥ যুযুধাতে ততিসংরব্ধৌ প্রহারৈরতিদারুণৈ-
১৫॥ ততো বেগাৎ খমুৎপত্য নিপত্য চ মৃগারিণা॥ করপ্র-
হারেণ শিরশ্চামরস্য পৃথক্ কৃতম্॥১৬॥ উদগ্রশ্চ রণে
দেব্যা শিলাবৃক্ষাদিভির্হতঃ॥ দন্তমুষ্টিতলৈশ্চৈব ক-
রালশ্চ নিপাতিতঃ॥১৭॥ দেবী ক্রুদ্ধা গদাপাতৈশ্চূ-
র্ণয়ামাস চোদ্ধতম্॥ বাষ্কলং ভিন্দিপালেন বাণৈস্তাম্রং ত-
থান্ধকম্॥১৮॥ উগ্রাস্যমুগ্রবীর্যং চ তথৈব চ মহাহনু-
ম্॥ ত্রিনেত্রা চ ত্রিশূলেন জঘান পরমেশ্বরী॥১৯॥
বিড়ালস্যাসিনা কায়াৎ পাতয়ামাস বৈ শিরঃ॥ দুর্ধ-
রং দুর্মুখং চোভৌ শরৈর্নিন্যে যমক্ষয়ম্॥২০॥ এবং সংক্ষী-
য়মাণে তু স্বসৈন্যে মহিষাসুরঃ॥ মাহিষেণ স্বরূপেণ ত্রাস-
য়ামাস তান্ গণান্॥২১॥ কাংশ্চিত্তুণ্ডপ্রহারেণ খুরক্ষে-
পৈস্তথাপরান্॥ লাঙ্গূলতাড়িতাংশ্চান্যান্ শৃঙ্গাভ্যাং চ
বিদারিতান্॥২২॥ বেগেন কাংশ্চিদপরান্নাদেন ভ্র-
মণেন চ॥ নিঃশ্বাসপবনেনান্যান্ পাতয়ামাস ভূত-
লে॥২৩॥ নিপাত্য প্রমথানীকমভ্যধাবত সোঽসুরঃ॥
সিংহং হন্তুং মহাদেব্যাঃ কোপং চক্রে ততোঽম্বিকা॥২৪॥
সোঽপি কোপান্মহাবীর্যঃ খুরক্ষুণ্ণমহীতলঃ॥ শৃঙ্গা-
ভ্যাং পর্বতানুচ্চাংশ্চিক্ষেপ চ ননাদ চ॥২৫॥ বেগভ্র-
মণবিক্ষুণ্ণা মহী তস্য ব্যশীর্যত॥ লাঙ্গূলেনাহত





न्महीङ्गतौ। युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः
॥१५॥ ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा। करप्र
हारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्॥१६॥ उदग्रश्च रणे
देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः। दन्तमुष्टितलैश्चैव क
रालश्च निपातितः॥१७॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चू
र्णयामास चोद्धतम्। बाष्कलम्भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रन्त-
थान्धकम्॥१८। उग्रास्यमुग्रवीर्य्यञ्च तथैव च महाहनु
म्। त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी॥१९॥
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः। दुर्धरं
न्दुर्म्मुखञ्चोभौ शरैर्न्निन्ये यमक्षयम् ॥२०॥ एवं संक्षी
यमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः। माहिषेण स्वरूपेण त्रा-
सयामास तान् गणान्॥२१॥ काँश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षे
पैस्तथापरान्। लाङ्गूलताडिताँश्चान्याञ्छृङ्गाभ्याञ्च
विदारितान्॥२२॥ वेगेन काँश्चिदपरान्नादेन भ्र
मणेन च। निश्श्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूत
ले ॥२३॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्या कोपं चक्रे ततोऽम्बिका॥२४॥
सोऽपि कोपान्महावीर्य्यः खुरक्षुण्णमहीतलः। शृङ्गा
भ्याम्पर्वतानुच्चाँश्चिक्षेप च ननाद च॥२५॥ वेगभ्र
मणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्य्यत। लाङ्गूलेनाहत



শ্বাব্ধিঃ প্লাবয়ামাস সর্বতঃ ॥২৬॥ ধুতশৃঙ্গবিভিন্নাশ্চ খ
ণ্ডং খণ্ডং যযুর্ঘনাঃ ॥ শ্বাসানিলাস্তাঃ শতশো নিপেতুর্নভ
সোঽচলাঃ ॥২৭॥ ইতি ক্রোধসমাধ্মাতমাপতন্তং মহাসুর
ম্ ॥ দৃষ্ট্বা সা চণ্ডিকা কোপং তদ্বধায় তদাকরোৎ ॥২৮॥
সা ক্ষিপ্ত্বা তস্য বৈ পাশং তং ববন্ধ মহাসুরম্ ॥ তত্যাজ মাহি
ষং রূপং সোঽপি বদ্ধো মহামৃধে ॥২৯॥ ততঃ সিংহোঽভবৎসদ্যো
যাবত্তস্যাম্বিকা শিরঃ ॥ ছিনত্তি তাবৎপুরুষঃ খড়্গপা
ণিরদৃশ্যত ॥৩০॥ তত এবাশু পুরুষং দেবী চিচ্ছেদ সা
য়কৈঃ ॥ তং খড়্গচর্মণা সার্ধং ততঃ সোঽভূন্মহাগজঃ ॥৩১॥
করেণ চ মহাসিংহং তং চকর্ষ জগর্জ চ ॥ কর্ষতস্তু করং দে
বী খড়্গেন নিরকৃন্তত ॥৩২॥ ততো মহাসুরো ভূয়ো মা
হিষং বপুরাস্থিতঃ ॥ তথৈব ক্ষোভয়ামাস ত্রৈলোক্যং সচ
রাচরম্ ॥৩৩॥ ততঃ ক্রুদ্ধা জগন্মাতা চণ্ডিকা পানমুত্ত
মম্ ॥ পপৌ পুনঃ পুনশ্চৈব জহাসারুণলোচনা ॥৩৪॥
ননর্দ চাসুরঃ সোঽপি বলবীর্যমদোদ্ধতঃ ॥ বিষাণাভ্যাং চ
চিক্ষেপ চণ্ডিকাং প্রতি ভূধরান্ ॥৩৫॥ সা চ তান্প্রহিতাংস্তেন চূ
র্ণয়ন্তী শরোৎকরৈঃ ॥ উবাচ তং মদোদ্ধূতমুখরাগাকু
লাক্ষরম্ ॥৩৬॥ দেব্যুবাচ ॥৩৭॥ গর্জ গর্জ ক্ষণং মূ
ঢ় মধু যাবৎপিবাম্যহম্ ॥ ময়া ত্বয়ি হতেঽত্রৈব গর্জি
ষ্যন্ত্যাশু দেবতাঃ ॥৩৮॥ ঋষিরুবাচ ॥৩৯॥ এবমুক্ত্বা



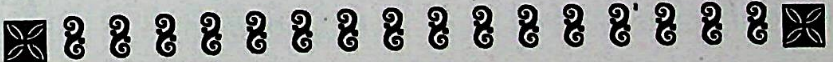
श्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः॥२६॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च ख
ण्डखण्डं ययुर्घनाः। श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्न
भसोऽचलाः ॥२७॥ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुर
म्। दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपन्तद्वधाय तदाऽकरोत्॥२८॥
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तम्बबन्ध महासुरम्। तत्याज माहि
षं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे॥२९॥ ततः सिंहोऽभवत्स
द्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः। छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपा
णिरदृश्यत॥३०॥ तत एवाशु पुरुषन्देवी चिच्छेद सा
यकैः। तङ्खड्गचर्मणा सार्द्धन्ततस्सोभून्महागजः॥३१॥
करेण च महासिंहन्तञ्चकर्ष जगर्ज्ज च। कर्षतस्तु करन्दे
वी खड्गेन निरकृन्तत॥३२॥ ततो महासुरो भूयो माहि
षं वपुरास्थितः। तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सच
राचरम्॥३३॥ ततष्क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्त
मम्। पपौ पुन पुनश्चैव जहासारुणलोचना॥३४॥
ननर्द चासुरस्सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः। विषाणाभ्याञ्च
चिक्षेप चण्डिकाम्प्रति भूधरान्॥३५॥ सा च तान् प्रहितांस्तेन चू
र्णयन्ती शरोत्करैः। उवाच तम्मदोद्धूतमुखरागाकु
लाक्षरम्॥३६॥ देव्युवाच ॥३७॥ गर्ज गर्ज क्षणं मू
ढ मधु यावत्पिबाम्यहम्। मया त्वयि हतेत्रैव गर्ज्जि
ष्यन्त्याशु देवताः॥३८॥ ऋषिरुवाच॥३९॥ एवमुक्त्वा



সম্যাৰুহ্য তং মহাসুৰম্ ।। পাদেনাক্ৰম্য কণ্ঠে চ শূ
লেনৈনমতাড়য়ৎ ।। ৪০ ।। ততঃ সোঽপি পদাক্ৰান্তস্তয়া
নিজমুখাত্ততঃ ।। অৰ্দ্ধনিষ্ক্ৰান্ত এৱাসীদ্দেৱ্যা বীৰ্য্যে
ণ সংবৃতঃ ।। ৪১ ।। অৰ্দ্ধনিষ্ক্ৰান্ত এৱাসৌ যুধ্যমানো ম
হাসুৰঃ ।। তয়া মহাসিনা দেৱ্যা শিৰশ্ছিত্ত্বা নিপাতিতঃ
৪২ ।। ততো হাহাকৃতং সৰ্ব্বং দৈত্যসৈন্যং ননাশ তৎ ।। প্ৰহ
ৰ্ষঞ্চ পৰং জগ্মুঃ সকলা দেৱতাগণাঃ ।। ৪৩ ।। তুষ্টুৱু
স্তাং সুৰা দেৱীং সহ দিৱ্যৈৰ্মহৰ্ষিভিঃ ।। জগুৰ্গন্ধৰ্ৱপ
তয়ো ননৃতুশ্চাপ্সৰোগণাঃ ।। ৪৪ ।। ইতি মাৰ্কণ্ডে
য়পুৰাণে সাৱৰ্ণিকে মন্বন্তৰে দেৱীমাহাত্ম্যে মহি
ষাসুৰৱধঃ ।। ৩ ।। ঋষিৰুৱাচ ।। শক্ৰাদয়স্সু
ৰগণা নিহতেঽতিবীৰ্য্যে তস্মিন্দুৰাত্মনি সুৰাৰিবলে
চ দেৱ্যা ।। তাং তুষ্টুৱুঃ প্ৰণতিনম্ৰশিৰোধৰাংসা ৱা
গ্ভিঃ প্ৰহৰ্ষপুলকোদ্গমচাৰুদেহাঃ ।। ১ । দেৱ্যা
যয়া ততমিদং জগদাত্মশক্ত্যা নিঃশে
ষদেৱগণশক্তিসমূহমূৰ্ত্ত্যা ।। তামম্বিকামখিলদেৱমহ
ৰ্ষিপূজ্যাং ভক্ত্যা নতাঃ স্ম বিদধাতু শুভানি সা নঃ ।। ২ ।। যস্যা
প্ৰভাৱমতুলং ভগৱাননন্তো ব্ৰহ্মা হৰশ্চ নহি বক্তুমলং
বলঞ্চ ।। সা চণ্ডিকাখিলজগৎপৰিপালনায় নাশায়
চাশুভভয়স্য মতিং কৰোতু ।। ৩ ।। যা শ্ৰীঃ স্বয়ং সুকৃতি

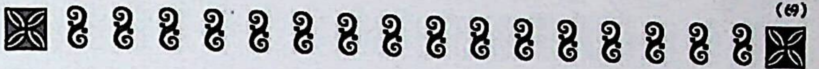


समुत्पत्य सारूढ़ा तं महासुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च शू
लेनैनमताड़यत्।।४०।। ततस्सोपि पदाक्रान्तस्तया
निजमुखात्ततः। अर्धनिष्क्रान्त एवातिदेव्यावीर्य्ये
ण सम्वृतः।।४१।। अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो म
हासुरः। तया महासिना देव्या शिरश्छित्वा निपातितः
।।४२।। ततो हाहाकृतं सर्व्वं दैत्यसैन्यन्ननाश तत्। प्रह
षञ्च परञ्जग्मुस्सकला देवतागणाः।।४३।। तुष्टुवु
स्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्म्महर्षिभिः। जगुर्गन्धर्व्वप
तयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः।।४४।। इति मार्क्कण्डे
यपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महि
षासुरवधः।।३।।।। ।। ऋषिरुवाच ।। शक्रादयस्सु
रगणा निहतेऽतिवीर्य्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले
च देव्याः। तान्तुष्टुवु प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वा
ग्भि प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ।।१।। देवा ऊ
चुः।। देव्या यया ततमिदञ्जगदात्मशक्त्या निश्शे
षदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या तामम्बिकामखिलदेवमह
र्षिपूज्याम्भक्त्या नतास्म विदधातु शुभानि सा नः।।२।। यस्या
प्रभावमखिलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलम्ब
लञ्च।। सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय
चाशुभभयस्य मतिङ्करोतु।३। या श्रीः स्वयं सुकृति

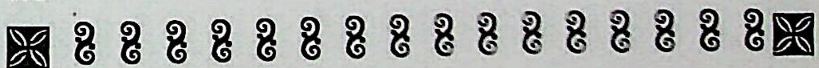


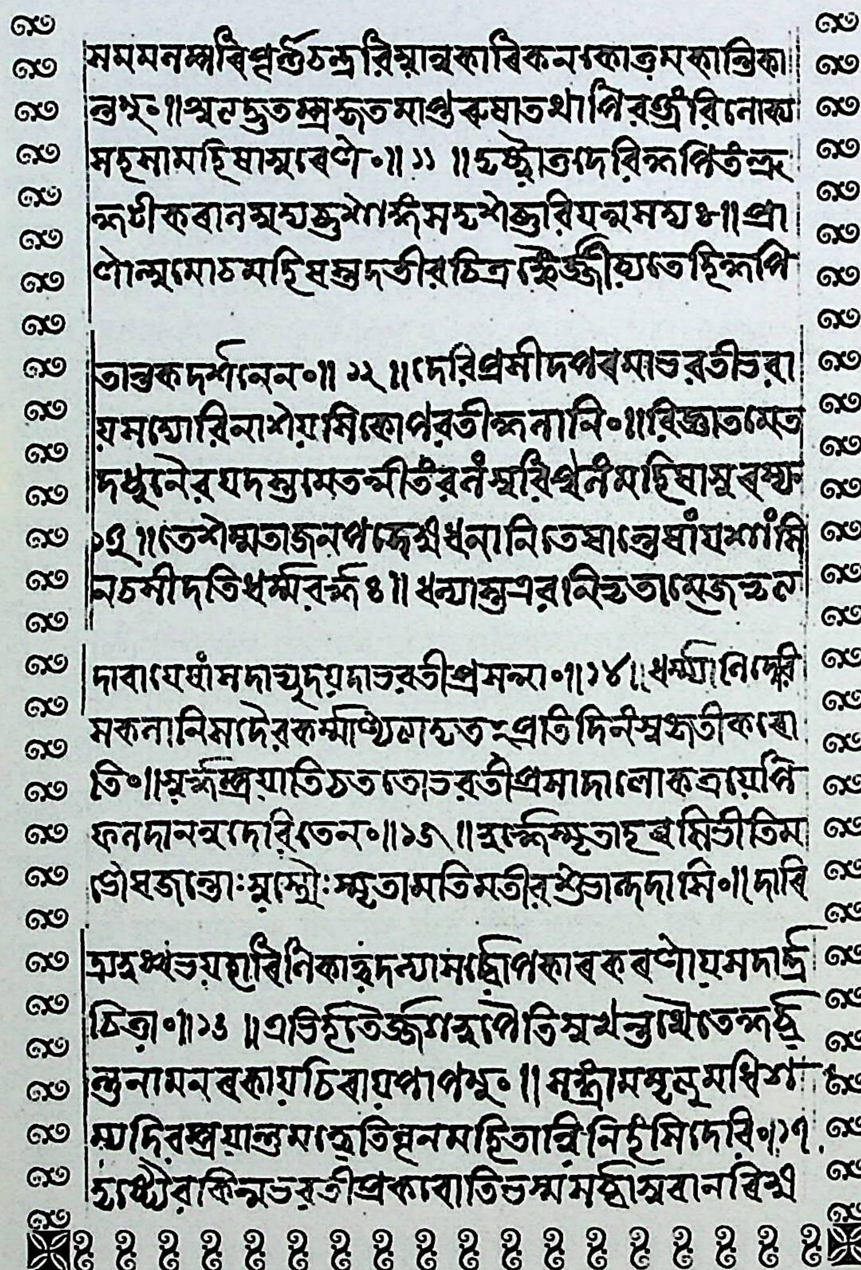



নাংভবনেষ্বলক্ষ্মীঃপাপাত্মনাংকৃতধিয়াংহৃদয়েষুবুদ্ধি
ঃ॥শ্রদ্ধাসতাংকুলজনপ্রভবস্যলজ্জাতাংত্বাংনতাঃস্ম
পরিপালয়দেবিবিশ্বম্॥ ৪ ॥কিংবর্ণয়ামতবরূ
পমচিন্ত্যমেতৎকিঞ্চাতিবীর্য্যমসুরক্ষয়কারিভূ
রি॥কিঞ্চাহবেষুচরিতানিতবাতিযানিসর্ব্বে
ষুদেব্যসুরদেবগণাদিকেষু॥ ৫ ॥হেতুঃসমস্তজগতাং
ত্রিগুণাপিদোষৈর্নজ্ঞায়সেহরিহরাদিভিরপ্যপারা॥সর্ব্বা
শ্রয়াখিলমিদংজগদংশভূতমব্যাকৃতাহিপরমাপ্রকৃতি
স্ত্বমাদ্যা॥ ৬ ॥যস্যাঃসমস্তসুরতাসমুদীরণেনতৃপ্তিং
প্রয়াতিসকলেষুমখেষুদেবি॥স্বাহাসিবৈপিতৃগণ
স্যচতৃপ্তিহেতুরুচ্চার্য্যসেত্বমতএবজনৈঃস্বধাচ॥ ৭ ॥
যামুক্তিহেতুরবিচিন্ত্যমহাব্রতাত্বমভ্যস্যসেসুনিয়তে
ন্দ্রিয়তত্ত্বসারৈঃ॥মোক্ষার্থিভির্মুনিভিরস্তসমস্ত
দোষৈর্বিদ্যাসিসাভগবতীপরমাহিদেবি॥ ৮ ॥শব্দা
ত্মিকাসুবিমলর্গ্যজুষাংনিধানমুদ্গীথরম্যপদপা
ঠবতাঞ্চসাম্নাম্॥দেবীত্রয়ীভগবতীভবভাবনায়বা
র্ত্তাসিসর্ব্বজগতাংপরমার্ত্তিহন্ত্রী॥ ৯ ॥মেধাসিদেবি
বিদিতাখিলশাস্ত্রসারাদুর্গাসিদুর্গভবসাগরনৌ
রসঙ্গা॥শ্রীঃকৈটভারিহৃদয়ৈককৃতাধিবাসাগৌ
রীত্বমেবশশিমৌলিকৃতপ্রতিষ্ঠা॥ ১০ ॥ঈষৎসহা

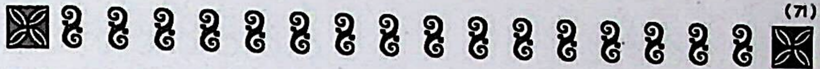


नां भवनेष्वलक्ष्मी पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि
:। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तान्त्वान्नतास्स्म
परिपालय देवि विश्वम्।४।। किं वर्णयाम तव रू
पमचिन्त्यमेतत्किञ्चातिवीर्य्यमसुरक्षयकारि भू
रि।। किञ्चाहवेषु चरितानि तवातियानि सर्व्वे
षु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।५।। हेतुस्समस्तजगता
न्त्रिगुणापि दोषैर्न्न ज्ञायते हरिहरादिभिरप्यपारा।। स
र्वाश्रयाखिलमिदञ्जगदंशभूतमव्याहृता हि परमा प्रकृति
स्त्वमाद्या।।६।। यस्यास्समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं
प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।। स्वाहासि वै पितृगण
स्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्य्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ।।७।।
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता च अभ्यस्यसे सुनियते
न्द्रियतत्वसारैः। मोक्षार्थिभिर्म्मुनिभिरस्तसमस्त
दोषैर्व्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।८। शब्दा
त्मिका सुविमलर्ग्यजुषान्निधानमुद्गीथरम्यपदपा
ठवताञ्च साम्नाम्। देवी त्रयी भगवती भवभावनाय वा
र्त्ता च सर्व्वजगताम्परमार्त्तिहन्त्री।।९।। मेधासि देवि वि
दिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागरनौ
रसङ्गा ।। श्री कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौ
रीत्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।१०।। ईषत्सहा

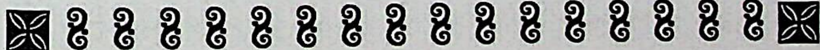




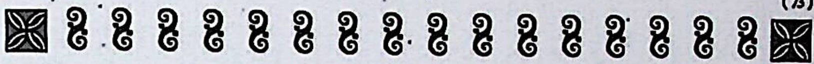
সমমলম্পরিপূর্ণচন্দ্রবিম্বানুকারিকনকোত্তমকান্তিকা
ন্তম্॥ অত্যদ্ভুতম্প্রহৃতমাপ্তরুষা তথাপি বক্ত্রং বিলোক্য
সহসা মহিষাসুরেণ॥ ১১ ॥ দৃষ্ট্বা তু দেবি কুপিতম্ভ্রু
কুটীকরালমুদ্যচ্ছশাঙ্কসদৃশচ্ছবি যন্ন সদ্যঃ॥ প্রা
ণান্মুমোচ মহিষস্তদতীব চিত্রঙ্কৈর্জীব্যতে হি কুপি
তান্তকদর্শনেন॥ ১২ ॥ দেবি প্রসীদ পরমা ভবতী ভবা
য় সদ্যো বিনাশয়সি কোপবতী কুলানি॥ বিজ্ঞাতমেত
দধুনৈব যদস্তমেতন্নীতম্বলং সুবিপুলম্মহিষাসুরস্য
১৩ ॥ তে সম্মতা জনপদেষু ধনানি তেষান্তেষাং যশাংসি
ন চ সীদতি ধর্ম্মবর্গঃ॥ ধন্যাস্ত এব নিভৃতাত্মজভৃ
ত্যদারা যেষাং সদাভ্যুদয়দা ভবতী প্রসন্না॥ ১৪॥ ধর্ম্ম্যাণি দেবি
সকলানি সদৈব কর্ম্মাণ্যত্যাদৃতঃ প্রতিদিনং সুকৃতী করো
তি॥ স্বর্গম্প্রয়াতি চ ততো ভবতীপ্রসাদাল্লোকত্রয়েঽপি
ফলদা ননু দেবি তেন॥ ১৫ ॥ দুর্গে স্মৃতা হরসি ভীতিম
শেষজন্তোঃ স্বস্থৈঃ স্মৃতা মতিমতীব শুভান্দদাসি॥ দারি
দ্র্যদুঃখভয়হারিণি কা ত্বদন্যা সর্ব্বোপকারকরণায় সদার্দ্র
চিত্তা॥ ১৬ ॥ এভির্হতৈর্জ্জগদুপৈতি সুখন্তথৈতে কুর্ব্ব
ন্তু নাম নরকায় চিরায় পাপম্॥ সংগ্রামমৃত্যুমধিগ
ম্য দিবম্প্রয়ান্তু মত্বেতি নূনমহিতান্বিনিহংসি দেবি॥ ১৭॥
দৃষ্ট্বৈব কিন্ন ভবতী প্রকরোতি ভস্ম সর্ব্বাসুরানরিষু



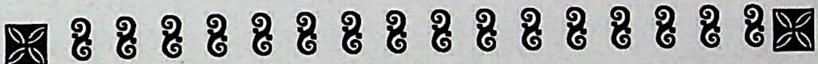
सममलम्परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारिकनकोत्तमकान्तिकान्तम्। अत्यद्भुतम्प्रहृतमाप्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥११॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः॥ प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रङ्कैर्ज्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥१२॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१३॥ ते सम्मताजनपदेषु धनानि तेषान्तेषां यशांसि न च सीदति धर्म्मवर्गः॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥१४॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृत प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेपि फलदा ननु देवि तेन ॥१५॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभान्ददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥१६॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखन्तथैते कुर्व्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्॥ सङ्ग्राममृत्युमधिगम्य दिवम्प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि॥१७॥ दृष्ट्वैव किन्न भवती प्रकरोति भस्म सर्व्वासुरानरिषु

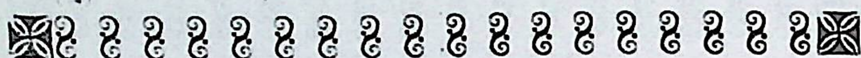


যাপ্রহিণোষিশস্ত্রম্।।লোকান্প্রয়ান্তুৰিপৰোপিহিশস্ত্রপূ
তাইত্থম্মতিৰ্ভ্ৱৰতিতেষ্বপিতেঽতিসাধ্বী।।১৮।।খড্গপ্রভা
নিকৰবিস্ফুৰণৈস্তথোগ্রৈঃশূলাগ্রকান্তিনিবহেনদৃশোঽসু
ৰাণাম্।।যন্নাগতাবিলয়মংশুমদিন্দুখণ্ডযোগ্যানন
ন্তৱবিলোকয়তান্তদেতৎ।।১৯।।দুৰ্ব্বৃত্তবৃত্তশমনং
তৱদেৱিশীলংৰূপন্তথৈতদৱিচিন্ত্যমতুল্যমন্যৈঃ।।বীৰ্য্যং
চহন্তৃহৃতদেৱপৰাক্ৰমাণাংবৈৰিষ্বপিপ্রকটিতৈৱদয়া
ত্বয়েত্থম্।।২০।।কেনোপমাভৱতুতেঽস্যপৰাক্ৰমস্য
ৰূপঞ্চশত্ৰুভয়কাৰ্য্যতিহাৰিকুত্ৰ।।চিত্তেকৃপাসমৰ
নিষ্ঠুৰতাচদৃষ্টাত্বয্যেৱদেৱিৱৰদেভুৱনত্ৰয়েপি।।২১।।
ত্ৰৈলোক্যমেতদখিলংৰিপুনাশনেনত্ৰাতন্ত্বয়াসমৰমূৰ্দ্ধ
নিতেপিহত্বা।।নীতাদিৱংৰিপুগণাভয়মপ্যপাস্তমস্মা
কমুন্মদসুৰাৰিভৱন্নমস্তে।।২২।।শূলেনপাহিনো
দেৱিপাহিখড্গেনচাম্বিকে।।ঘণ্টাস্বনেননঃপাহি
চাপজ্যানিস্বনেনচ।।২৩।।প্ৰাচ্যাংৰক্ষপ্ৰতীচ্যাঞ্চ
চণ্ডিকেৰক্ষদক্ষিণে।।ভ্ৰামণেনাত্মশূলস্যউত্তৰস্যা
ন্তথেশ্বৰি।।২৪।।সৌম্যানিযানিৰূপাণিত্ৰৈলোক্যেৱি
চৰন্তিতে।।যানিচাত্যৰ্থঘোৰাণিতৈৰক্ষাস্মাংস্তথা
ভুৱম্।।২৫।।খড্গশূলগদাদীনিযানিচাস্ত্ৰাণিতেঽম্বি
কে।।কৰপল্লৱসঙ্গীনিতৈৰস্মাৰক্ষসৰ্ব্বতঃ।।২৬।।স

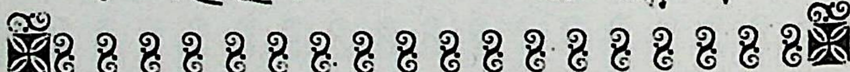


यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोपि हि शस्त्रपू
ता इत्थम्मंतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥१८॥ खड्गप्रभा
निकरविस्फुरणैस्तथोग्रैश्शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशो
ऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्यान
नन्तव विलोकयतान्तदेतत् ॥१९॥ दुर्वृत्तवृत्तशमन
न्तव देवि शीलं रूपन्तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः॥ वीर्य्य
ञ्च हन्तृहतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया
त्वयेत्थम्॥२०॥ केनोपमा भवतु तेस्य पराक्रमस्य
रूपञ्च शत्रुभयकार्य्यतिहारि कुत्र॥ चित्ते कृपा समर
निष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेपि ॥२१॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातन्त्वया समरमूर्द्ध
नि तेपि हत्वा॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्मा
कमुन्मदसुरारिभवन्नमस्ते॥२२॥ शूलेन पाहि नो
देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन न पाहि
चापज्यानिःस्वनेन च॥२३॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च
चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्या
न्तथेश्वरि ॥२४॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये
विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्माँस्तथा
भुवम् ॥२५॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्रणि तेम्बि
के । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मात्रक्ष सर्व्वतः॥२६॥ ऋ





ষিৰুৱাচ॥২৭॥এৱং স্তুতা সুৰৈৰ্দ্দিব্যৈঃ কুসুমৈৰ্নন্দ
নোদ্ভৱৈঃ॥অৰ্চ্চিতা জগতাং ধাত্ৰী তথা গন্ধানুলেপনৈঃ
২৮॥ভক্ত্যা সমস্তৈস্ত্ৰিদশৈৰ্দ্দিব্যৈৰ্ধূপৈস্তু ধূপিতা॥
প্ৰাহ প্ৰসাদসুমুখী সমস্তান্ প্ৰণতান্ সুৰান্॥২৯॥
দেৱ্যুৱাচ॥৩০॥ব্ৰিয়তাং ত্ৰিদশাঃ সৰ্ব্বে যদস্মত্তোঽ
ভিৱাঞ্ছিতম্॥৩১॥দদাম্যহমতিপ্ৰীত্যা স্তৱৈৰেভিঃ সুপূ
জিতা॥দেৱা ঊচুঃ॥৩২॥ভগৱত্যা কৃতং সৰ্ব্বং ন কিঞ্চিদৱশি
ষ্যতে॥৩৩॥যদয়ং নিহতঃ শত্ৰুৰস্মাকং মহিষাসুৰঃ
যদি চাপি ৱৰো দেয়স্ত্বয়াস্মাকং মহেশ্বৰি॥৩৪॥সংস্মৃতা
সংস্মৃতা ত্বং নো হিংসেথাঃ পৰমাপদঃ॥যশ্চ মৰ্ত্ত্যঃ স্তৱৈৰেভি
স্ত্বাং স্তোষ্যত্যমলাননে॥৩৫॥তস্য ৱিত্তৰ্দ্ধিৱিভৱৈৰ্ধনদা
ৰাদিসম্পদাম্॥বৃদ্ধয়েঽস্মৎপ্ৰসন্না ত্বং ভৱেথাঃ সৰ্ব্বদাম্বি
কে॥৩৬॥ঋষিৰুৱাচ॥৩৭॥ইতি প্ৰসাদিতা দেৱৈৰ্জ্জ
গতোঽৰ্থে তথাত্মনঃ॥তথেত্যুক্ত্বা ভদ্ৰকালী বভূৱান্তৰ্হিতা
নৃপ॥৩৮॥ইত্যেতৎ কথিতং ভূপ সম্ভূতা সা যথা পুৰা॥
দেৱী দেৱশৰীৰেভ্যো জগত্ত্ৰয়হিতৈষিণী॥৩৯॥পুন
শ্চ গৌৰীদেহাৎ সা সমুদ্ভূতা যথাভৱৎ॥ৱধায় দুষ্ট
দৈত্যানাং তথা শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥৪০॥ৰক্ষণায় চ
লোকানাং দেৱানামুপকাৰিণী॥তচ্ছৃণুষ্ব ময়াখ্যা
তং যথাৱৎ কথয়ামি তে॥৪১॥ইতি মাৰ্কণ্ডেয়পু

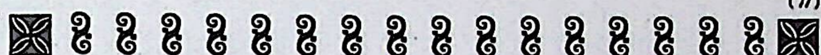




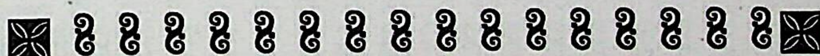
षिरुवाच ॥२७॥ एवं स्तुता सुरैर्द्दिव्यैष्कुसुमैर्न्नन्द
नोद्भवैः । अर्च्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः
॥२८॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्द्दिव्यैर्द्धूपैस्तुधूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुरान्॥२९॥
देव्युवाच ॥३०॥ व्रियतान्त्रिदशास्सर्व्वं यदस्मत्तोऽ
भिवाञ्छितम् । ददाम्यहमतिप्रीत्या स्तवैरेभिस्सुपू
जिता ॥ देवाऊचुः ॥३२॥ भगवत्या कृतं सर्व्वन्न किञ्चिदवशि
ष्यते ॥३३॥ यदयन्निहतश्शत्रुरस्माकं महिषासुरः
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि॥३४॥ संस्मृता
संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ यश्च मर्त्यः स्तवैरेभि
स्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥३५॥ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदा
रादिसम्पदाम् ॥ वृद्धयेस्मत्प्रसन्ना त्वम्भवेथास्सर्वदाम्बि
के ॥३६॥ ऋषिरुवाच ॥३७॥ इति प्रसादिता देवैर्ज्ज
गतोर्थे तथात्मनः । तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता
नृप ॥३८॥ इत्येतत्कथितम्भूप सम्भूता सा यथा पुरा
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी॥३९॥ पुन
श्च गौरीदेहा सा समुद्भूता यथाभवत्। वधाय दुष्ट
दैत्यानान्तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥४०॥ रक्षणाय च
लोकानान्देवानामुपकारिणी । तच्छृणुष्व मयाख्या
तं यथावत्कथयामि ते ॥४१॥ इति मार्क्कण्डेयपु



বাণেশাবর্ত্তিকমন্ত্রবাদরীমাহাত্ম্যোমাহেশ্বর
রথপ্রাপ্ত্যাদিস্তুতিঃ॥ ৪ ॥ ॥ঋষিরুবাচ॥ ১ ॥
পুরাশুম্ভনিশুম্ভাভ্যামসুরাভ্যাংশচীপতেঃ॥ত্রৈলোক্যং
যজ্ঞভাগাশ্চহৃতামদবলাশ্রয়াৎ॥ ২ ॥তাবেবসূর্য্য
তান্তদ্বদধিকারন্তথৈন্দবম্॥কৌবেরমথযাম্যঞ্চ
চক্রাতেবরুণস্যচ॥ ৩ ॥তাবেবপবনর্দ্ধিঞ্চচক্রতুর্বহ্নি
কর্ম্মচ॥ততোদেবাবিনির্দ্ধূতাভ্রষ্টরাজ্যাঃপরাজি
তাঃ॥ ৪ ॥হৃতাধিকারাস্ত্রিদশাস্তাভ্যাংসর্ব্বেনি
রাকৃতাঃ॥মহাসুরাভ্যাংতাংদেবীংসংস্মরন্ত্যপরাজি
তাম্॥ ৫ ॥তয়াস্মাকংবরোদত্তোযথাপৎসুস্মৃতা
খিলাঃ॥ভবতাংনাশয়িষ্যামিতৎক্ষণাৎপরমাপদঃ॥
৬ ॥ইতিকৃত্বামতিংদেবাহিমবন্তংনগেশ্বরম্॥জগ্মু
স্তত্রততোদেবীংবিষ্ণুমায়াংপ্রতুষ্টুবুঃ॥ ৭ ॥দেবাঊ
চুঃ॥ ৮ ॥নমোদেব্যৈমহাদেব্যৈশিবায়ৈসততংনমঃ
নমঃপ্রকৃত্যৈভদ্রায়ৈনিয়তাঃপ্রণতাঃস্মতাম্॥ ৯ ॥
রৌদ্রায়ৈনমোনিত্যায়ৈগৌর্য্যৈধাত্র্যৈনমোনমঃ॥জ্যো
ৎস্নায়ৈচেন্দুরূপিণ্যৈসুখায়ৈসততংনমঃ॥ ১০ ॥ক
ল্যাণ্যৈপ্রণতাংবৃদ্ধ্যৈসিদ্ধ্যৈকুর্ম্মোনমোনমঃ॥
নৈর্ঋত্যৈভূভৃতাংলক্ষ্ম্যৈশর্ব্বাণ্যৈতেনমোনমঃ॥
১১ ॥দুর্গায়ৈদুর্গপারায়ৈসারায়ৈসর্ব্বকারিণ্যৈ॥



राणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासु
रवधे शक्रादिस्तुतिः।।४।।।। ।। ऋषिरुवाच ।।१।।
पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।। त्रैलोक्यं
यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्।।२।। तावेव सूर्य्य
तान्तद्वदधिकारन्तथैन्दवम्। कौवेरमथ याम्यञ्च च
क्राते वरुणस्य च।।३।। तावेव पवनर्द्धिञ्च चक्रतुर्व्वह्नि
कर्म्म च। ततो देवाविनिर्द्धूताभ्रष्टराज्या परा
जिताः।।४।। हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्व्वे नि
राकृताः। महासुराभ्यां तान्देवीं संस्मरन्त्यपराजि
ताम्।।५।। तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृता
खिलाः। भवतान्नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः।।
६।। इति कृत्वा मतिन्देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्। जग्मु
स्तत्र ततो देवीं विष्णुमायाम्प्रतुष्टुवुः।।७।। देवा ऊ
चुः ।।८।। नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततन्नमः।।
नम प्रकृत्यै भद्रायै नियता प्रणताः स्म ताम्।।९।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्य्यै धात्र्यै नमोनमः। ज्यो
त्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततन्नमः।।१०।। क
ल्याण्यै प्रणतावृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्म्मो नमोनमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्व्वाण्यै ते नमोनमः।।
११।। दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्व्वकारिण्यै।



খ্যাতৈতথৈবকৃষ্ণায়ৈধূম্রায়ৈসততংনমঃ॥১২॥
অতিসৌম্যাতিরৌদ্রায়ৈনতাস্তস্যৈনমোনমঃ॥
নমোজগৎপ্রতিষ্ঠায়ৈদেব্যৈকৃত্যৈনমোনমঃ॥
১৩॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষু বিষ্ণুমায়েতিশব্দি
তানমস্তস্যৈ॥১৪॥নমস্তস্যৈ॥১৫॥নমস্তস্যৈনমো

নমঃ॥১৬॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুচেতনেত্যভিধীয়তে।
নমস্তস্যৈ॥১৭॥নমস্তস্যৈ॥১৮॥নমস্তস্যৈনমো
নমঃ॥১৯॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুবুদ্ধিরূপেণসংস্থিতা।
নমস্তস্যৈ॥২০॥নমস্তস্যৈ॥২১॥নমস্তস্যৈনমো
নমঃ॥২২॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুনিদ্রারূপেণসংস্থিতা।

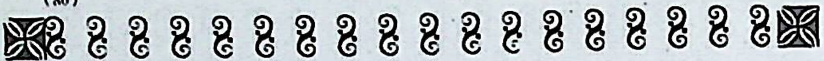
নমস্তস্যৈ॥২৩॥নমস্তস্যৈ॥২৪॥নমস্তস্যৈনমো
নমঃ॥২৫॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুক্ষুধারূপেণসংস্থি
তা।নমস্তস্যৈ॥২৬॥নমস্তস্যৈ॥২৭॥নমস্তস্যৈ
নমোনমঃ॥২৮॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুচ্ছায়ারূপে
ণসংস্থিতা।নমস্তস্যৈ॥২৯॥নমস্তস্যৈ॥৩০॥

নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৩১॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুশক্তি
রূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৩২॥নমস্তস্যৈ॥৩৩॥
নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৩৪॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষু
তৃষ্ণারূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৩৫॥নমস্তস্যৈ
৩৬॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৩৭॥যাদেবীসর্ব্বভূ

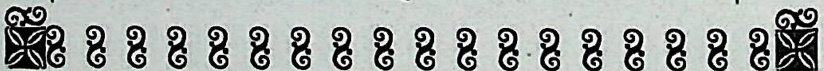


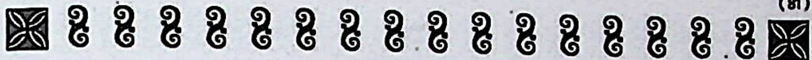
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततन्नमः।।१२।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः।।
१३।। या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दि
ता नमस्तस्यै ।।१४।। नमस्तस्यै ।।१५।। नमस्तस्यै नमो
नमः।।१६।। या देवी सर्व्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।।
नमस्तस्यै।।१७।। नमस्तस्यै।।१८।। नमस्तस्यै नमो
नमः ।।१९।। या देवी सर्व्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।।
नमस्तस्यै।।२०।। नमस्तस्यै।।२१।। नमस्तस्यै नमो
नमः।।२२।। या देवी सर्व्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै।।२३।। नमस्तस्यै।।२४।। नमस्तस्यै नमो
नमः ।।२५।। या देवी सर्व्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थि
ता ।। नमस्तस्यै ।।२६।। नमस्तस्यै।।२७।। नमस्तस्यै
नमोनमः ।।२८।। या देवी सर्व्वभूतेषु छायारूपे
ण संस्थिता ।। नमस्तस्यै ।।२९।। नमस्तस्यै।।३०।।
नमस्तस्यै नमोनमः ।।३१।। या देवी सर्व्वभूतेषु शक्ति
रूपेण संस्थिता।। नमस्तस्यै ।।३२।। नमस्तस्यै ।।३३।।
नमस्तस्यै नमोनमः ।।३४।। या देवी सर्व्वभूतेषु
तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।३५।। नमस्तस्यै
।।३६।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।३७।। या देवी सर्व्वभू



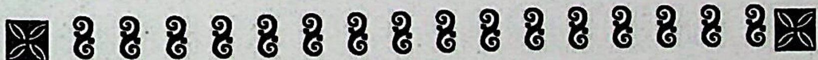


তেষুক্ষান্তিরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৩৮॥নমস্ত
স্যৈ॥৩৯॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৪০॥যাদেবীস
র্বভূতেষুজাতিরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৪১॥
নমস্তস্যৈ॥৪২॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৪৩॥
যাদেবীসর্বভূতেষুলজ্জারূপেণসংস্থিতানমস্ত
স্যৈ॥৪৪॥নমস্তস্যৈ॥৪৫॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥
৪৬॥যাদেবীসর্বভূতেষুশান্তিরূপেণসংস্থিতানম
স্তস্যৈ॥৪৭॥নমস্তস্যৈ॥৪৮॥নমস্তস্যৈনমো
নমঃ॥৪৯॥যাদেবীসর্বভূতেষুশ্রদ্ধারূপেণসং
স্থিতানমস্তস্যৈ॥৫০॥নমস্তস্যৈ॥৫১॥নমস্ত
স্যৈনমোনমঃ॥৫২॥যাদেবীসর্বভূতেষুকান্তি
রূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৫৩॥নমস্তস্যৈ॥৫৪
নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৫৫॥যাদেবীসর্বভূতেষু
লক্ষ্মীরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৫৬॥নমস্ত
স্যৈ॥৫৭॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৫৮॥যাদেবী
সর্বভূতেষুবৃত্তিরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৫৯॥
নমস্তস্যৈ॥৬০॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৬১॥
যাদেবীসর্বভূতেষুধৃতিরূপেণসংস্থিতানমস্ত
স্যৈ॥৬২॥নমস্তস্যৈ॥৬৩॥নমস্তস্যৈনমোন
মঃ॥৬৪॥যাদেবীসর্বভূতেষুস্মৃতিরূপেণসংস্থি





तेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।। नमस्तस्यै ।।३८।। नमस्त
स्यै।।३९।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।४०।। या देवी स
र्व्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।४१।।
नमस्तस्यै।।४२।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।४३।।
या देवी सर्व्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्त
स्यै ।।४४।। नमस्तस्यै ।।४५।। नमस्तस्यै नमोनमः
।।४६।। या देवी सर्व्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नम
स्तस्यै ।।४७।। नमस्तस्यै ।।४८।। नमस्तस्यै नमो
नमः।।४९।। या देवी सर्व्वभूतेषु श्रद्धारूपेण सं
स्थिता नमस्तस्यै ।।५०।। नमस्तस्यै ।।५१।। नमस्त
स्यै नमोनमः ।।५२।। या देवी सर्व्वभूतेषु कान्ति
रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।५३।। नमस्तस्यै।।५४।।
नमस्तस्यै नमोनमः ।।५५।। या देवी सर्व्वभूतेषु
लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।५६।। नमस्त
स्यै ।।५७।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।५८।। या देवी
सर्व्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।५९।।
नमस्तस्यै।।५६।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।६१।।
या देवी सर्व्वभूतेषु धृतिरूपेण संस्थिता नमस्त
स्यै ।।६२।। नमस्तस्यै ।।६३।। नमस्तस्यै नमोन
मः ।।६४।। या देवी सर्व्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थि



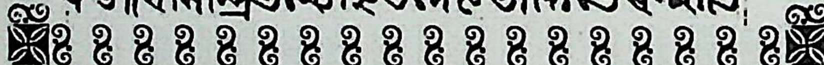


তানমস্তস্যৈ॥ ৬৫ ॥নমস্তস্যৈ॥ ৬৬ ॥নমস্তস্যৈ
নমোনমঃ॥৬৭॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুদয়ারূপেণ
সংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৬৮॥নমস্তস্যৈ॥৬৯॥নম
স্তস্যৈনমোনমঃ॥৭০॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষুতুষ্টি
রূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৭১॥নমস্তস্যৈ॥৭২॥

নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৭৩॥যাদেবীসর্ব্বভূতেষু
পুষ্টিরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৭৪॥নমস্ত
স্যৈ॥৭৫॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৭৬॥যাদেবী
সর্ব্বভূতেষুমাতৃরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥৭৭॥
নমস্তস্যৈ॥৭৮॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥৭৯॥

যাদেবীসর্ব্বভূতেষুভ্রান্তিরূপেণসংস্থিতানমস্ত
স্যৈ॥৮০॥নমস্তস্যৈ॥৮১॥নমস্তস্যৈনমোনমঃ
৮২॥ইন্দ্রিয়াণামধিষ্ঠাত্রীভূতানাঞ্চাখিলেষু
যা॥ভূতেষুসততংতস্যৈব্যাপ্তৈদেব্যৈনমোন
মঃ॥৮৩॥চিতিরূপেণযাকৃৎস্নমেতদ্ব্যাপ্যস্থি

তাজগৎ॥নমস্তস্যৈ॥৮৪॥নমস্তস্যৈ॥৮৫॥ন
মস্তস্যৈনমোনমঃ॥৮৬॥স্তুতাসুরৈঃপূর্ব্বমভীষ্টসং
শ্রয়াত্তথাসুরেন্দ্রেণদিনেষুসেবিতা॥করোতুসা
নঃশুভহেতুরীশ্বরীশুভানিভদ্রাণ্যভিহন্তুচাপদঃ
৮৭॥যাসাম্প্রতঞ্চোদ্ধতদৈত্যতাপিতৈরস্মাভি



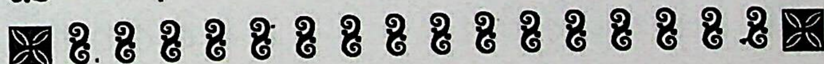


ता नमस्तस्यै ॥६५॥ नमस्तस्यै ॥६६॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥६७॥ या देवी सर्व्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥६८॥ नमस्तस्यै ॥६९॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥७०॥ या देवी सर्व्वभूतेषु तुष्टि रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥७१॥ नमस्तस्यै ॥७२॥

नमस्तस्यै नमोनमः ॥७३॥ या देवी सर्व्वभूतेषु पुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै ॥७५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥७६॥ या देवी सर्व्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥७७॥ नमस्तस्यै ॥७८॥ नमस्तस्यै नमोनमः॥७९॥

या देवी सर्व्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥८०॥ नमस्तस्यै ॥८१॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥८२॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानाञ्चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततन्तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमोनमः ॥८३॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थि

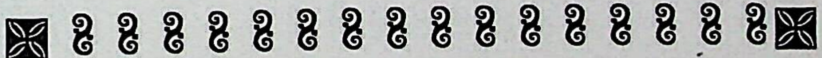
ता जगत् ॥ नमस्तस्यै ॥८४॥ नमस्तस्यै ॥८५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥८६॥ स्तुता सुरै पूर्व्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नश्शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥८६॥ या साम्प्रतञ्चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभि



ৰীশাচসুৰৈৰ্নমস্যতে॥যাচস্মৃতাতৎক্ষণমেবহ
ন্তিনঃসৰ্ব্বাপদোভক্তিবিনম্রমূৰ্ত্তিভিঃ॥৮৭॥ঋ
ষিৰুবাচ॥ ৮৮ ॥এবংস্তবাদিযুক্তানান্দেবানা
ন্তত্রপাৰ্ব্বতী॥ স্নাতুমভ্যাযযৌতোয়েজাহ্নব্যানৃ
পনন্দন॥ ৮৯ ॥সাব্রবীত্তান্সুৰান্সুভ্রূৰ্ভবদ্ভিঃ
স্তূয়তেঽত্রকা॥শৰীৰকোশতশ্চাস্যাস্সমুদ্ভূতাব্র
বীচ্ছিবা॥ ৯০ ॥স্তোত্রম্মমৈতৎক্রিয়তেশুম্ভদৈত্য
নিৰাকৃতৈঃ॥দেবৈস্সমেতৈস্সমৰেনিশুম্ভেনপৰা
জিতৈঃ॥ ৯১ ॥শৰীৰকোশাদ্যত্তস্যাঃপাৰ্ব্বত্যানিঃ
সৃতাম্বিকা॥কৌশিকীতিসমস্তেষুততোলোকে
ষুগীয়তে॥ ৯২ ॥তস্যাংবিনিৰ্গতায়ান্তুকৃষ্ণাভূৎসাপি
পাৰ্ব্বতী॥কালিকেতিসমাখ্যাতাহিমাচলকৃতা
শ্রয়া॥ ৯৩॥ততোঽম্বিকাম্পৰংৰূপংবিভ্রাণাংসুমনো
হৰম্॥দদৰ্শচণ্ডোমুণ্ডশ্চভৃত্যৌশুম্ভনিশুম্ভয়োঃ
৯৪॥তাভ্যাংশুম্ভায়চাখ্যাতাঅতীবসুমনোহৰা॥
কাপ্যাস্তেস্ত্রীমহাৰাজভাসয়ন্তীহিমাচলম্॥ ৯৫॥
নৈবতাদৃক্ক্বচিদ্রূপন্দৃষ্টঙ্কেনচিদুত্তমম্॥জ্ঞায়তা
ঙ্কাপ্যসৌদেবীগৃহ্যতাঞ্চাসুৰেশ্বৰ॥ ৯৬ ॥স্ত্রীৰ
ত্নমতিচাৰ্ব্বঙ্গীদ্যোতয়ন্তীদিশস্ত্বিষা॥সাতুতিষ্ঠ
তিদৈত্যেন্দ্রতাম্ভবান্দ্রষ্টুমৰ্হতি॥ ৯৭ ॥যানিৰত্না



रीशा च सुरैर्न्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव ह
न्ति नस्सर्व्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥८७॥ ऋ
षिरुवाच ॥८८॥ एवं स्तवादियुक्तानान्देवाना
न्तत्र पार्व्वती॥ स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृ
पनन्दन ॥८९॥ साब्रवीत्तान्त्सुरान्त्सुभ्रूर्भवद्भिः
स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्चास्यास्समुद्भूताब्र
वीच्छिवा ॥९०॥ स्तोत्रम्ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्य
निराकृतैः ॥ देवैस्समस्तैस्समरे निशुम्भेन परा
जितैः ॥९१॥ शरीरकोशाद्यत्तस्या पार्व्वत्या नि
स्सृताम्बिका ॥ कौशिकी तु समस्तेषु ततो लोके
षु गीयते ॥९२॥ तस्यां विनिर्गतायान्तु कृष्णाभूत्सा
पि पार्व्वती॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृता
श्रया॥९३॥ ततोम्बिकाम्परं रूपं बिभ्राणां सुमनो
हरम् ॥ ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः
॥९४॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीवसुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्॥९५॥
नैव तादृक्क्वचिद्रूपं दृष्टङ्केनचिदुत्तमम्। ज्ञायता
ङ्काप्यसौ देवी गृह्यताञ्चासुरेश्वर ॥९६॥ स्त्रीर
त्नमतिचार्व्वंगी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ॥ सा तु तिष्ठ
तु दैत्येन्द्र ताम्भवान्द्रष्टुमर्हति ॥९७॥ यानि रत्ना



নিমণোয়োগজাখ্যাদীনিরেপ্রভো॥ ত্রৈলোক্যেতুসম
স্তানিসাম্প্রতম্ভান্তিতেগৃহে॥ ৯৮॥ ঐরাবতস্সমা
নীতোগজরত্নংপুরন্দরাৎ॥ পারিজাততরুশ্চায়
ন্তথৈবোচ্চৈঃশ্রবাহয়ঃ॥ ৯৯॥ বিমানংহংসসংযুক্তমে
তত্তিষ্ঠতিতেঙ্গণে॥ রত্নভূতমিহানীতংযদাসী
দ্বেধসোদ্ভুতম্॥ ১০০॥ নিধিরেষমহাপদ্মস্সমানী
তোধনেশ্বরাৎ॥ কিঞ্জল্কিনিন্দদৌচাব্ধির্মালাম
ম্লানপঙ্কজাম্॥ ১০১॥ ছত্রন্তেবারুণংগেহেকাঞ্চ
নস্রাবিতিষ্ঠতি॥ তথায়ংস্যন্দনবরোযঃপুরাসী
ৎপ্রজাপতেঃ॥ ১০২॥ মৃত্যোরুৎক্রান্তিদানামশক্তি
রীশত্বয়াহৃতা॥ পাশস্সলিলরাজস্যভ্রাতুস্তবপ
রিগ্রহে॥ ১০৩॥ নিশুম্ভস্যাব্ধিজাশ্চসমস্তারত্ন
জাতয়ঃ॥ বহ্নিরপিদদৌতুভ্যমগ্নিশৌচেচবাস
সী॥ ১০৪॥ এবন্দৈত্যেন্দ্ররত্নানিসমস্তান্যাহৃতানি
তে॥ স্ত্রীরত্নমেষাকল্যাণীত্বয়াকস্মান্নগৃহ্যতে
১০৫॥ ঋষিরুবাচ॥ ১০৬॥ নিশম্যেতিবচশ্শুম্ভঃসত
দাচণ্ডমুণ্ডয়োঃ॥ প্রেষয়ামাসসুগ্রীবন্দূতন্দেব্যামহা
সুরম্॥ ১০৭॥ ইতিচেতিচবক্তব্যাসাগত্বাবচনান্ম
ম॥ যথাচাভ্যেতিসম্প্রীত্যাতথাকার্য্যংত্বয়ালঘু॥
১০৮॥ ঋষিরুবাচ॥ সতত্রগত্বাযত্রাস্তেশৈলোদ্দে



नि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु सम
स्तानि साम्प्रतम्भ्रान्ति ते गृहे ॥९८॥ ऐरावतस्समा
नीतो गजरत्नं पुरन्दरात् । पारिजाततरुश्चाय
न्तथैवोच्चैःश्रवा हयः॥९९॥ विमानं हंससंयुक्तमे
तत्तिष्ठति तेङ्गणे । रत्नभूतमिहानीतं यदासी
द्वेधसोद्भुतम् ॥१००॥ निधिरेषमहापद्मस्समानी
तो धनेश्वरात् । किञ्जल्किनिन्ददौ चाब्धिर्म्मालाम
म्लानपङ्कजाम् ॥१०१॥ छत्रन्ते वारुणङ्गेहे काञ्च
नस्रावि तिष्ठति । तथायं स्यन्दनवरो य पुरासी
त्प्रजापतेः ॥१०२॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्ति
रीश त्वया हृता । पाशस्सलिलराजस्य भ्रातुस्तव प
रिग्रहे ॥१०३॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्तारत्न
जातयः। वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वास
सी ॥१०४॥ एवन्दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि
ते॥ स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते
॥१०५॥ ऋषिरुवाच ॥१०६॥ निशम्येति वचश्शुम्भः स त
दा चण्डमुण्डयोः । प्रेषयामास सुग्रीवन्दूतन्देव्या महा
सुरः ॥१०७॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्म
म ॥ यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्य्यन्त्वया लघु॥
१०८॥ ऋषिरुवाच॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्दे

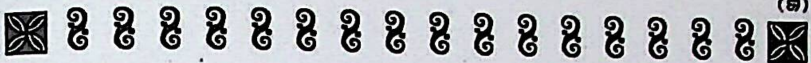


জ্যোতিঃশোভনে ।। তাঞ্চ দেবীন্ততঃ প্রাহ শ্লক্ষ্ণং ম
ধুরয়া গিরা ।। ১০৯ ।। দূত উবাচ ।। ১১০ ।। দেবি দৈত্যে
শ্বরঃ শুম্ভস্ত্রৈলোক্যে পরমেশ্বরঃ ।। দূতোহহং প্রেষি
তস্তেন ত্বৎসকাশমিহাগতঃ ।। ১১১ ।। অব্যাহতাজ্ঞঃ স
র্বাসু যঃ সদা দেবযোনিষু ।। নির্জ্জিতাখিলদৈত্যা

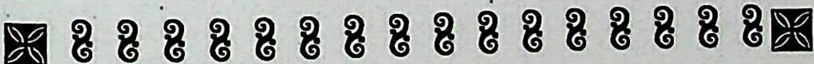
রিঃ স যদাহ শৃণুষ্ব তৎ ।। ১১২ ।। মম ত্রৈলোক্যমখিলং
মম দেবা বশানুগাঃ ।। যজ্ঞভাগানহং সর্ব্বানুপাশ্না
মি পৃথক্ পৃথক্ ।। ১১৩ ।। ত্রৈলোক্যে বররত্নানি
মম বশ্যান্যশেষতঃ ।। তথৈব গজরত্নঞ্চ হৃত্বা দে
বেন্দ্রবাহনম্ ।। ১১৪ ।। ক্ষীরোদমথনোদ্ভূতমশ্ব

রত্নং মমামরৈঃ ।। উচ্চৈঃশ্রবসসংজ্ঞন্তৎপ্রণিপত্য সম
র্পিতম্ ।। ১১৫ ।। যানি চান্যানি দেবেষু গন্ধর্ব্বেষূরগে
ষু চ ।। রত্নভূতানি ভূতানি তানি ময্যেব শোভনে
।। ১১৬ ।। স্ত্রীরত্নভূতাং ত্বাং দেবি লোকে মন্যামহে ব
য়ম্ ।। সা ত্বমস্মানুপাগচ্ছ যতো রত্নভুজো বয়ম্ ।।

১১৭ ।। মাং বা মমানুজং বাপি নিশুম্ভমুরুবিক্রমম্ ।।
ভজ ত্বং চঞ্চলাপাঙ্গি রত্নভূতাসি বৈ যতঃ ।। ১১৮ ।।
পরমৈশ্বর্য্যমতুলং প্রাপ্স্যসে মৎপরিগ্রহাৎ ।। এতদ্বু
দ্ধ্যা সমালোচ্য মৎপরিগ্রহতাং ব্রজ ।। ১১৯ ।। ঋষিরু
বাচ ।। ১২০ ।। ইত্যুক্তা সা তদা দেবী গম্ভীরান্তঃস্মিতা



शेऽति शोभने । ताञ्च देवीन्तत प्राहश्लक्ष्णं म
धुरया गिरा ॥१०९॥ दूत उवाच ॥११०॥ देवि दैत्ये
श्वरश्शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः । दूतोहम्प्रेषि
तस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥१११॥ अव्याहताज्ञस्स
र्व्वासु यस्सदा देवयोनिषु। निर्ज्जिताखिलदैत्या
रिस्स यदाह शृणुष्व तत्॥११२॥ मम त्रैलोक्यमखिल
म्मम देवा वशानुगाः॥ यज्ञभागानहं सर्व्वानुपाश्ना
मि पृथक् पृथक्॥११३॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि
मम वश्यान्यशेषतः। तथैव गजरत्नानि हृत्वा दे
वेन्द्रवाहनम्॥११४॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्व
रन्तम्ममामरैः। उच्चैश्श्रवससंज्ञन्तत्प्रणिपत्य सम
र्प्पितम् ॥११५॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्व्वेषूर
गेषु च। रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभ
ने ॥११६। स्त्रीरत्नभूतान्त्वान्देवि लोके मन्यामहे व
यम् । सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्॥
११७॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वञ्चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥११८॥
परमैश्वर्य्यमतुलम्प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ॥ एतद्बु
द्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहताम्व्रज ॥११९॥ ऋषिरु
वाच॥१२०॥ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता



জগৌ॥দুর্গাভগবতীভদ্রাযয়েদন্ধার্য্যতেজগৎ॥
১২১॥দেব্যুবাচ॥১২২॥সত্যমুক্তন্ত্বয়ানাত্রমিথ্যা
কিঞ্চিত্ত্বয়োদিতম্॥ত্রৈলোক্যাধিপতিশ্শুম্ভোনিশু
ম্ভশ্চাপিতাদৃশঃ॥১২৩॥কিন্ত্বত্রযৎপ্রতিজ্ঞাতম্মিথ্যা
তৎক্রিয়তেকথম্॥শ্রূয়তামল্পবুদ্ধিত্বাৎপ্রতিজ্ঞাযা

কৃতাপুরা॥১২৪॥যোমাঞ্জয়তিসংগ্রামেযোমেদর্পংব্য
পোহতি॥যোমেপ্রতিবলোলোকেসমেভর্ত্তাভবিষ্যতি
১২৫॥তদাগচ্ছতুশুম্ভোঽত্রনিশুম্ভোবামহাসুরঃ॥মাঞ্জি
ত্বাকিঞ্চিরেণাত্রপাণিংগৃহ্ণাতুমেলঘু॥১২৬॥দূতউ
বাচ॥১২৭॥অবলিপ্তাসিমৈবন্ত্বন্দেবিব্রূহিমমাগ্র

তঃ॥ত্রৈলোক্যেকঃপুমাংস্তিষ্ঠেদগ্রেশুম্ভনিশুম্ভয়োঃ
১২৮॥অন্যেষামপিদৈত্যানাংসর্ব্বেদেবানবৈযুধি॥
তিষ্ঠন্তিসম্মুখেদেবিকিম্পুনঃস্ত্রীত্বমেকিকা॥১২৯॥
ইন্দ্রাদ্যাঃসকলাদেবাস্তস্থুর্য্যেষান্নসংযুগে॥শুম্ভা
দীনাঙ্কথন্তেষাংস্ত্রীপ্রয়াস্যসিসম্মুখম্॥১৩০॥সা

ত্বঙ্গচ্ছময়ৈবোক্তাপার্শ্বংশুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥কেশাক
র্ষণনির্দ্ধূতগৌরবামাগমিষ্যসি॥১৩১॥দেব্যুবা
চ॥১৩২॥এবমেতদ্বলীশুম্ভোনিশুম্ভশ্চাতিবীর্য্যবা
ন্॥কিঙ্করোমিপ্রতিজ্ঞামেযদনালোচিতাপুরা॥
১৩৩॥সত্বঙ্গচ্ছময়োক্তন্তেযদেতৎসর্ব্বমাদৃতঃ॥



जगौ। दुर्ग्गा भगवती भद्रा ययेदन्धार्य्यते जगत्॥
१२१॥ देव्युवाच ॥१२२॥ सत्यमुक्तन्त्वयानात्र मिथ्या
किञ्चित्त्वयोदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिश्शुम्भो निशु
म्भश्चापि तादृशः॥१२३॥ किन्त्वत्र यत्प्रतिज्ञातम्मिथ्या
तत्क्रियते कथम् । श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या
कृता पुरा॥१२४॥ यो माञ्जयति सङ्ग्रामे यो मे दर्प्पं व्य
पोहति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्त्ता भविष्यति
॥१२५॥ तदा गच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः। माञ्जि
त्वा किञ्चिरेणात्र पाणिङ्गृह्णातु मे लघु ॥१२६॥ दूत उ
वाच ॥१२७॥ अवलिप्तासि मैवन्त्वन्देवि ब्रूहि ममाग्र
तः॥ त्रैलोक्ये क पुमाँस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः
॥१२८॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्व्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका॥१२९॥
इन्द्राद्यास्सकलादेवास्तस्थुर्य्येषान्न संयुगे । शुम्भा
दीनाङ्कथन्तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्॥१३०॥ सा
त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः। केशाक
र्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥१३१॥देव्युवा
च ॥१३२॥ एवमेतद्बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्य्यवा
न् । किङ्करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा
॥१३३॥ स त्वङ्गच्छ मयोक्तन्ते यदेतत्सर्व्वमादृतः।



তদাচষ্টাসুরেন্দ্রায় সমঞ্জস্বরাত্তযতং ॥১২৯॥
ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবী
মাহাত্ম্যে দূতবাক্যম্ ॥ ॐ ॥ ১ ॥ ঋষিরুবাচ ॥
ইত্যাকর্ণ্য বচো দেব্যাঃ স দূতোঽমর্ষপূরিতঃ ॥ সমা
চষ্ট সমাগম্য দৈত্যরাজায় বিস্তরাৎ ॥ ২ ॥ তস্য

দূতস্য তদ্বাক্যমাকর্ণ্যাসুররাট্ ততঃ ॥ সক্রোধঃ প্রাহ দৈ
ত্যানামধিপং ধূম্রলোচনম্ ॥ ৩ ॥ হে ধূম্রলোচনাশু
ত্বং স্বসৈন্যপরিবারিতঃ ॥ তামানয় বলাদ্দুষ্টাং কে
শাকর্ষণবিহ্বলাম্ ॥ ৪ ॥ তৎপরিত্রাণদঃ কশ্চি
দ্যদি বোত্তিষ্ঠতেঽপরঃ ॥ স হন্তব্যোঽমরো বাপি য

ক্ষো গন্ধর্ব এব বা ॥ ৫ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ৬ ॥ তেনাজ্ঞ
প্তস্ততঃ শীঘ্রং স দৈত্যো ধূম্রলোচনঃ ॥ বৃতঃ ষষ্ট্যা
সহস্রাণামসুরাণাং দ্রুতং যযৌ ॥ ৭ ॥ স দৃষ্ট্বা তাং
ততো দেবীং তুহিনাচলসংস্থিতাম্ ॥ জগাদোচ্চৈঃ প্র
যাহীতি মূলং শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ ॥ ৮ ॥ ন চেৎ প্রীত্যাদ্য

ভবতী মদ্ভর্তারমুপৈষ্যতি ॥ ততো বলান্নয়াম্যেষ কেশা
কর্ষণবিহ্বলাম্ ॥ ৯ ॥ দেব্যুবাচ ॥ ১০ ॥ দৈত্যেশ্বরে
ণ প্রহিতো বলবান্ বলসংবৃতঃ ॥ বলান্নয়সি মামে
বং ততঃ কিং তে করোম্যহম্ ॥ ১১ ॥ ঋষিরুবাচ ॥
১২ ॥ ইত্যুক্তঃ সোঽভ্যধাবত্তামসুরো ধূম্রলোচনঃ ॥

(ख)

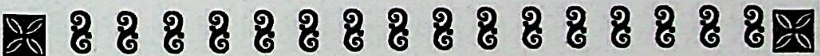


तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ।।१३४।।
इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी
माहात्म्ये दूतवाक्यम्।।५।।।। ।। ऋषिरुवाच।।
इत्याकर्ण्य वचो देव्यास्स दूतोमर्षपूरितः । समा
चष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्।।२।। तस्य

दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट्ततः । सक्रोध प्राह दै
त्यानामधिपन्धूम्रलोचनम् ।।३।। हे धूम्रलोचनाशु
त्वं स्वसैन्यपरिवारितः। तामानय बलाद्दुष्टाङ्के
शाकर्षणविह्वलाम् ।४।। तत्परित्राणद कश्चि
द्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः । स हन्तव्योऽमरोवापि य

क्षो गन्धर्व्वएव वा ।।५।। ऋषिरुवाच ।।६।। तेनाज्ञ.
प्तस्ततश्शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः। वृतः षष्ठ्या
सहस्त्राणामसुराणान्द्रुतं ययौ।।६।। स दृष्ट्वा तान्त
तो देवीन्तुहिमाचलसंस्थिताम् । जगादोच्चै प्र
याहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ।।८।। न चेत्प्रीत्याद्य

भवती मद्भर्तारमुपैष्यति । ततो बलान्नयाम्येष केशा
कर्षणविह्वलाम् ।।९।। देव्युवाच ।।१०।। दैत्येश्व
रेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः । बलान्नयसि मामे
वन्तत किन्ते करोम्यहम् ।।११।। ऋषिरुवाच ।।
१२।। इत्युक्तस्सोभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।

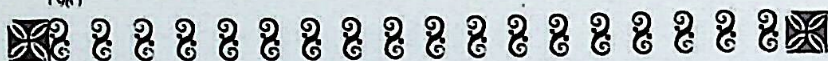


হুঙ্কাৰেণৈৱতম্ভস্মসাচকাৰাম্বিকাততঃ॥১৩॥অ
থক্রুদ্ধম্মহাসৈন্যমসুৰাণান্তথাম্বিকা॥ৱৱৰ্ষসা
য়কৈস্তীক্ষ্ণৈস্তথাশক্তিপৰশ্বধৈঃ॥১৪॥ততোধু
তসটঃকোপাৎকৃত্বানাদংসুভৈৰৱং॥পপাতাসু
ৰসেনায়াংসিংহোদেৱ্যাস্সুৱাহনঃ॥১৫॥কাংশ্চিৎক
ৰপ্রহাৰেণদৈত্যানাস্যেনচাপৰান্॥আক্রম্যচাধৰে
ণান্যান্সজঘানমহাসুৰান্॥১৬॥কেষাঞ্চিৎপাট
য়ামাসনখৈঃকোষ্ঠানিকেসৰী॥তথাতলপ্রহাৰে
ণশিৰাংসিকৃতৱান্পৃথক্॥১৭॥ৱিচ্ছিন্নবাহু
শিৰসঃকৃতাস্তেনতথাপৰে॥পপৌচৰুধিৰং
কোষ্ঠাদন্যেষাংধুতকেসৰঃ॥১৮॥ক্ষণেনতদ্বলং
সৰ্ব্বংক্ষয়ন্নীতংমহাত্মনা॥তেনকেসৰিণাদেৱ্যা
ৱাহনেনাতিকোপিনা॥১৯॥শ্রুত্বাতমসুৰন্দে
ৱ্যানিহতন্ধূম্রলোচনং॥বলঞ্চক্ষয়িতঙ্কৃৎস্নন্দে
ৱীকেসৰিণাততঃ॥২০॥চুকোপদৈত্যাধিপতিঃ
শুম্ভঃপ্রস্ফুৰিতাধৰঃ॥আজ্ঞাপয়ামাসচতৌচণ্ডমু
ণ্ডৌমহাসুৰৌ॥২১॥হেচণ্ডহেমুণ্ডবলৈৰ্ব্বহুভিঃপ
ৰিৱাৰিতৌ॥তত্ৰগচ্ছতগত্বাচসাসমানীয়তাংল
ঘু॥২২॥কেশেষ্বাকৃষ্যবদ্ধ্বাৱাযদিৱঃসংশয়ো
যুধি॥তদাশেষায়ুধৈস্সৰ্ব্বৈৰসুৰৈৰ্ব্বিনিহন্যতাং

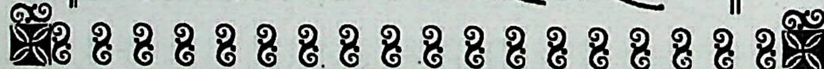


हूङ्कारेणैव तम्भस्मसाच्चकाराम्बिका ततः ।।१३।। अ
थ क्रुद्धम्महासैन्यमसुराणान्तथाम्बिका । ववर्ष शा
यकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः।।१४।। ततो धु
तसट कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्। पपातासु
रसेनायां सिंहो देव्यास्स्ववाहनः ।।१५।। काँश्चित्क
रप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् । आक्रान्त्या चाधरे
णान्याञ्जघानाशु महासुरान्।।१६।। केषाञ्चित्पाट
यामास नखैः कोष्ठानि केसरी । तथा तलप्रहारे
ण शिरांसि कृतवान्पृथक् ।।१७।। विच्छिन्नबाहु
शिरसः कृतास्तेन तथापरे । पपौ च रुधिरं
कोष्ठादन्येषान्धुतकेसरः ।।१८।। क्षणेन तद्बलं
सर्व्वं क्षयन्नीतं महात्मना । तेन केसरिणा देव्या
वाहनेनातिकोपिना ।।१९।। श्रुत्वा तमसुरन्दे
व्या निहतन्धूम्रलोचनम् । बलञ्च क्षयितं कृत्स्नन्दे
वीकेसरिणा ततः।।२०।। चुकोप दैत्याधिपति
श्शुम्भ प्रस्फुरिताधरः। आज्ञापयामास च तौ चण्डमु
ण्डौ महासुरौ ।।२१।। हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्ब्बहुलैः प
रिवारितौ। तत्र गच्छतङ्गत्वा च सा समानीयतां ल
लघु ।।२२।। केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो
युधि। तदाशेषायुधैस्सर्वैरसुरैर्विनिहन्यता





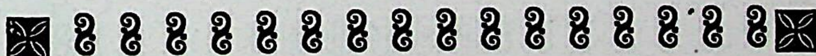
মূঃ॥২৩॥তস্মীহতায়াংহুঙ্কাৰ্য্যাংসিংহেনবিনি
পাতিতে॥শীঘ্ৰমাগম্যতাম্বদ্ধ্বাগৃহীত্বাতাম
থাম্বিকাম্॥২৪॥ইতিমাৰ্কণ্ডেয়পুৰাণেসাৱ
ৰ্ণিকেমন্বন্তৰেদেবীমাহাত্ম্যেধূম্ৰ
লোচনবধঃ॥৪॥৬॥ঋষিৰুবাচ॥১॥
আজ্ঞপ্তাস্তেততোদৈত্যাশ্চণ্ডমুণ্ডপুৰোগমাঃ॥চতু
ৰঙ্গবলোপেতাযযুৰভ্যুদ্যতায়ুধাঃ॥২॥দদৃশু
স্তেততোদেবীমীষদ্ধাসাংব্যৱস্থিতাম্॥সিংহ
স্যোপৰিশৈলেন্দ্ৰশৃঙ্গেমহতিকাঞ্চনে॥৩॥তে
দৃষ্ট্বাতাংসমাদাতুমুদ্যমংচক্ৰুৰুদ্যতাঃ॥আকৃ
ষ্টচাপাসিধৰাস্তথান্যেতৎসমীপগাঃ॥৪॥ত
তঃকোপংচকাৰোচ্চৈৰম্বিকাতানৰীন্প্ৰতি॥কো
পেনচাস্যাবদনংমষীবৰ্ণমভূত্তদা॥৫॥ভ্ৰূ
কুটীকুটিলাত্তস্যাললাটফলকাদ্দ্ৰুতম্॥কা
লীকৰালবদনাবিনিষ্ক্ৰান্তাসিপাশিনী॥৬॥বি
চিত্ৰখট্বাঙ্গধৰানৰমালাবিভূষণা॥দ্বীপিচ
ৰ্মপৰীধানাশুষ্কমাংসাতিভৈৰৱা॥৭॥অতি
বিস্তাৰবদনাজিহ্বাললনভীষণা॥নিমগ্না
ৰক্তনয়নানাদাপূৰিতদিঙ্মুখা॥৮॥সাবে
গেনাভিপতিতাঘাতয়ন্তীমহাসুৰান্॥সৈ





म् ॥२३॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनि
पातिते । शीघ्रमागम्यताम्बद्ध्वा गृहीत्वा ताम
थाम्बिकाम् ॥२४॥ इति मार्क्कण्डेयपुरा
णे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये धूम्र
लोचनवधः ॥ ॥६॥ ऋषिरुवाच ॥१॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः। चतु
रङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥२॥ ददृशु
स्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्। सिंह
स्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥३॥ ते
दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमञ्चक्रुरुद्यताः। आकृ
ष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः॥४॥ त
तः कोपञ्चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति। को
पेन चास्यावदनम्मसीवर्णमभूत्तदा॥५॥ भ्रू
कुटीकुटिलात्तस्य ललाटफलकाद्द्रुतम् । का
ली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी॥६॥ वि
चित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा। द्वीपिच
र्म्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा॥७॥ अति
विस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा । निमग्ना
रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा॥८॥ सा वे
गेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्। सै



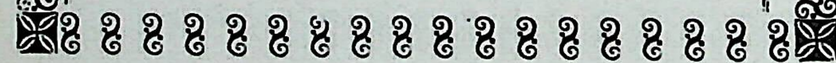


ন্যতত্রসুৰাৰীণামভক্ষয়ততদ্বলম্॥৯॥পা
র্ষ্ণিগ্রাহাঙ্কুশগ্রাহীযোধঘন্টাসমন্বিতান্।
সমাদায়ৈকহস্তেনমুখেচিক্ষেপৱাৰণান্॥
১০॥তথৈৱযোধন্তুৰগৈৰথংসাৰথিনাসহ।
নিঃক্ষিপ্যৱক্ত্রেদশনৈশ্চর্ব্বয়ন্ত্যতিভৈৰৱম্॥

একঞ্জগ্রাহকেশেষুগ্রীৱায়ামথচাপৰম্।পাদেনা
ক্রম্যচৈৱান্যমুৰসান্যমপোথয়ৎ॥১২॥তৈর্মুক্তা
নিচশস্ত্রানিমহাস্ত্রানিতথাসুৰৈঃ॥মুখেনজগ্রা
হৰুষাদশনৈর্মথিতান্যপি॥১৩॥বলিনান্তদ্বলং
সর্ব্বমসুৰাণাঙ্দুৰাত্মনাম্॥মমর্দ্দাভক্ষয়চ্চান্যা

নন্যাংশ্চাতাড়য়ত্তদা॥১৪॥অসিনানিহতাঃকেচি
ৎকেচিৎখট্বাঙ্গতাড়িতাঃ জগ্মুর্ব্বিনাশমসুৰাদ
ন্তাগ্রাভিহতাস্তথা॥১৫॥ক্ষণেনতদ্বলংসর্ব্বমসু
ৰাণান্নিপাতিতম্॥দৃষ্ট্বাচণ্ডোভিদুদ্ৰাৱতাঙ্কা
লীমতিভীষণাম্॥১৬॥শৰৱর্ষৈর্মহাভীমৈর্ভী

মাক্ষীন্তাঁমহাসুৰঃ॥ছাদয়ামাসচক্রৈশ্চমুণ্ডঃক্ষি
প্তৈঃসহস্রশঃ॥১৭॥তানিচক্রাণ্যনেকানিৱিশ
মানানিতন্মুখম্॥বভুর্যথার্কবিম্বানিসুবহূ
নিঘনোদৰম্॥১৮॥ততোজহাসাতিৰুষাভীমং
ভৈৰৱনাদিনী॥কালীকৰালৱক্ত্রান্তর্দুর্দ্দর্শদশ





न्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्॥९॥ पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहीयोधघण्टासमन्वितान्। समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्॥१०॥ तथैव योधन्तुरगैरथं सारथिना सह। निःक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्व्वयत्यतिभैरवम्॥११॥

एकञ्जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्। पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥१२॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः। मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्म्मथितान्यपि॥१३॥ बलिनान्तद्बलं सर्व्वमसुराणाम्महात्मनाम्। ममर्द्दाभक्षयच्चान्या

नन्याँश्चाताडयत्तदा ॥१४॥ असिना निहता केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः। जग्मुर्व्विनाशमसुरादन्ताग्राभिहतास्तथा ॥१५॥ क्षणेन तद्बलं सर्व्वमसुराणान्निपातितम् । दृष्ट्वा चण्डोभिदुद्राव ताङ्कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥ शरवर्षैर्म्महाभीमैर्ब्भी

माक्षीन्तां महासुरः । छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैस्सहस्रशः ॥१७॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् । बभुर्य्यथार्क्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥१८॥ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी । काली करालवक्त्रान्तर्द्दर्शदश

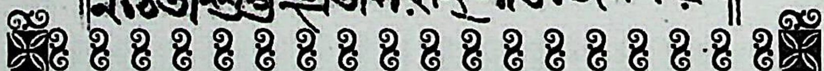


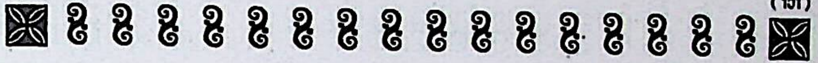


নোজ্জ্বলা॥ ১৯ ॥ উত্থায় চ মহাসিংহং দেবী চণ্ডং
মধাবত। ॥ গৃহীত্বা চাস্য কেশেষু শিরস্তেনাসি
নাচ্ছিনৎ॥ ২০ ॥ অথ মুণ্ডোঽভ্যধাবত্তাং দৃষ্ট্বা চ
ণ্ডং নিপাতিতম্। ॥ তমপ্যপাতয়দ্ভূমৌ সা খড়্গা
ভিহতং রুষা॥ ২১ ॥ হতশেষং ততঃ সৈন্যং দৃষ্ট্বা
চণ্ডং নিপাতিতম্। ॥ মুণ্ডং চ সুমহাবীর্যং দিশো ভেজে
ভয়াতুরম্॥ ২২ ॥ শিরশ্চণ্ডস্য কালী চ গৃহীত্বা মুণ্ড
মেব চ। ॥ প্রাহ প্রচণ্ডাট্টহাসমিশ্রমভ্যেত্য চণ্ডিকাম্॥
২৩ ॥ ময়া তবাত্রোপহৃতৌ চণ্ডমুণ্ডৌ মহাপশূ। ॥
যুদ্ধযজ্ঞে স্বয়ং শুম্ভং নিশুম্ভং চ হনিষ্যসি॥ ২৪ ॥

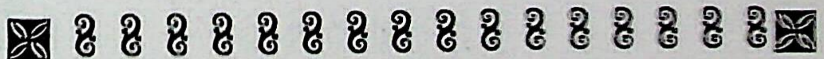
ঋষিরুবাচ॥ ২৫ ॥ তাবানীতৌ ততো দৃষ্ট্বা চণ্ডমু
ণ্ডৌ মহাসুরৌ। ॥ উবাচ কালীং কল্যাণী ললিতং চণ্ডি
কা বচঃ॥ ২৬ ॥ যস্মাচ্চণ্ডং চ মুণ্ডং চ গৃহীত্বা ত্বমু
পাগতা। ॥ চামুণ্ডেতি ততো লোকে খ্যাতা দেবি ভ
বিষ্যসি॥ ২৭ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণি

কে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে চণ্ডমুণ্ডবধঃ॥ ৭ ॥
ঋষিরুবাচ॥ ১ ॥ চণ্ডে চ নিহতে দৈত্যে মুণ্ডে
চ বিনিপাতিতে। ॥ বহুলেষু চ সৈন্যেষু ক্ষয়ি
তেষ্বসুরেশ্বরঃ॥ ২ ॥ ততঃ কোপপরাধী
নচেতাঃ শুম্ভঃ প্রতাপবান্। ॥ উদ্যোগং সর্ব





नोज्ज्वला ॥१९॥ उत्थाय च महासिंहाद्देवी चण्ड
मधावत । गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासि
नाच्छिनत् ॥२०॥ अथ मुण्डोप्यधावत्तान्दृष्ट्वा च
ण्डन्निपातितम् । तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गा
भिहतं रुषा ॥२१॥ हतशेषन्ततस्सैन्यन्दृष्ट्वा
चण्डन्निपातितम् । मुण्डञ्च सुमहावीर्य्यन्दिशो भेजे
भयातुरम् ॥२२॥ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्ड
मेव च । प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्॥
२३॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भन्निशुम्भञ्च हनिष्यसि॥२४॥
ऋषिरुवाच ॥२५॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमु
ण्डौ महासुरौ । उवाच कालीङ्कल्याणी ललितञ्चण्डि
का वचः ॥२६॥ यस्माच्चण्डञ्च मुण्डञ्च गृहीत्वा त्वमु
पागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भ
विष्यसि ॥२७॥ इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णि
के मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डवधः॥२७॥
ऋषिरुवाच ॥१॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे
च विनिपातिते । बहुलेषु च सैन्येषु क्षयि
तेष्वसुरेश्वरः ॥२॥ तत कोपपराधी
नचेताश्शुम्भ प्रतापवान् । उद्योगं सर्व्वसै



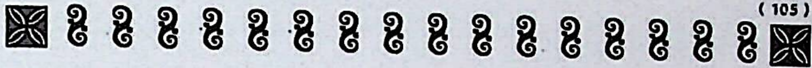
ন্যানাং দৈত্যানামাদিদেশ হ॥ ২ ॥অদ্য সৰ্ব্বব
লৈৰ্দ্দৈত্যাঃ ষড়শীতিৰুদায়ুধাঃ ॥কম্বূনাঞ্চতুৰ
শীতিৰ্নিৰ্য্যান্তু স্ববলৈৰ্বৃতাঃ॥ ৪ ॥কোটিবীৰ্য্যা
নি পঞ্চাশদসুৰাণাং কুলানি বৈ। শতং কুলানি ধৌ
ম্ৰাণাং নিৰ্গচ্ছন্তু মমাজ্ঞয়া॥ ৫ ॥কালকা দৌৰ্
হৃদা মৌৰ্য্যাঃ কালকেয়াস্তথাসুৰাঃ। যুদ্ধায় সজ্জা
নিৰ্য্যান্তু আজ্ঞয়া ত্বৰিতা মম॥ ৬ ॥ইত্যাজ্ঞাপ্যা
সুৰপতিঃ শুম্ভো ভৈৰৱশাসনঃ। নিৰ্জ্জগাম মহা
সৈন্যসহস্ৰৈৰ্বহুভিৰ্বৃতঃ॥ ৭ ॥আয়ান্তং চণ্ডি
কা দৃষ্ট্বা তৎসৈন্যমতিভীষণম্। জ্যাস্বনৈঃ পূৰ
য়ামাস ধৰণীগগনান্তৰম্॥ ৮ ॥ততঃ সিংহো ম
হানাদমতীৱ কৃতবান্নৃপ। ঘণ্টাস্বনেন তান্না
দানম্বিকা চোপবৃংহয়ৎ॥ ৯ ॥ধনুৰ্জ্যাসিংহ
ঘণ্টানাং নাদাপূৰিতদিঙ্মুখা। নিনাদৈৰ্ভীষণৈঃ
কালী জিগ্যে বিস্তাৰিতাননা॥ ১০ ॥তং নিনা
দমুপশ্ৰুত্য দৈত্যসৈন্যৈশ্চতুৰ্দ্দিশম্। দেবী সিংহ
স্তথা কালী সৰোষৈঃ পৰিৱাৰিতাঃ॥ ১১ ॥এতস্মি
ন্নন্তৰে ভূপ বিনাশায় সুৰদ্বিষাম্। ভৱায়া
মৰসিংহানামতিবীৰ্য্যবলান্বিতাঃ॥ ১২ ॥ব্ৰহ্মে
শগুহবিষ্ণূনাং তথেন্দ্ৰস্য চ শক্তয়ঃ। শৰীৰ



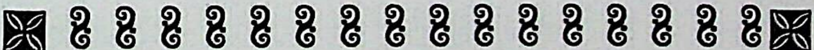
न्यानान्दैत्यानामादिदेश ह ॥३॥ अद्य सर्व्वब
लैर्द्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः । कम्बूनाञ्चतुर
शीतिन्निर्यान्तु स्वलैर्व्वृताः ॥४॥ कोटिवीर्य्या
णि पञ्चाशदसुराणाङ्कुलानि वै । शतङ्कुलानि धौ
म्राणान्निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥५॥ कालकादौ
र्हदा मौर्य्या कालकेयास्तथासुराः ॥ युद्धाय सज्जा
निर्य्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥६॥ इत्याज्ञाप्या
सुरपतिश्शुम्भो भैरवशासनः। निर्ज्जगाम महा
सैन्य सहस्त्रैर्ब्बहुभिर्व्वृतः ॥७॥ आयातञ्चण्डि
का दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् । ज्यास्वनै पूर
यामास धरणीगगनान्तरम् ॥८॥ ततस्सिंहो म
हानादमतीव कृतवान्नृप। घण्टास्वनेन तान्ना
दानम्बिका चोपबृंहयत् ॥९॥ धनुर्ज्यासिंह
घण्टानान्नादापूरितदिङ्मुखा । निनादैर्भीषणै
ष्काली जिग्ये विस्तारिताननना ॥१०॥ तन्निना
दमुपश्रुत्यदैत्यसैन्यैश्चतुर्द्दिशम् । देवी सिंह
स्तथाकाली सरोषै परिवारिताः ॥११॥ एतस्मि
न्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् । भवाया
मरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥१२॥ ब्रह्मे
शगुहविष्णूनान्तथेन्द्रस्य च शक्तयः । शरी



ৰেভ্যোবিনিষ্ক্ৰম্যতদ্ৰূপৈশ্চণ্ডিকাংযযুঃ॥ ১৩ ॥
যস্যদেবস্যযদ্ৰূপংযথাভূষণবাহনম্‌॥তদ্বদেব
হিতচ্ছক্তিৰসুৰান্যোদ্ধুমাযযৌ॥ ১৪ ॥হংসযুক্ত
বিমানাগ্ৰেসাক্ষসূত্ৰকমণ্ডলুঃ॥আযাতাব্ৰহ্মণঃ
শক্তিৰ্ব্ৰহ্মাণীসাভিধীয়তে॥ ১৫ ॥মাহেশ্বৰী
বৃষাৰূঢাত্ৰিশূলবৰধাৰিণী॥মহাহিবলযাপ্ৰাপ্তাচ
ন্দ্ৰৰেখাবিভূষণা॥ ১৬ ॥কৌমাৰীশক্তিহস্তাচময়ূ
ৰবৰবাহনা॥যোদ্ধুমভ্যাযযৌদৈত্যানম্বিকাগুহৰূ
পিণী॥ ১৭ ॥তথৈববৈষ্ণবীশক্তিৰ্গৰুড়োপৰিসংস্থি
তা॥শঙ্খচক্ৰগদাশাৰ্ঙ্গখড়্গহস্তাভ্যুপাযযৌ॥ ১৮ ॥
যজ্ঞবাৰাহমতুলংৰূপংযাবিভ্ৰতোহৰেঃ॥শক্তিঃসা
প্যাযযৌতত্ৰবাৰাহীংবিভ্ৰতীতনুম্‌॥ ১৯ ॥নাৰ
সিংহীনৃসিংহস্যবিভ্ৰতীসদৃশংবপুঃ॥প্ৰাপ্তাতত্ৰ
সটাক্ষেপক্ষিপ্তনক্ষত্ৰসংহতিঃ॥ ২০ ॥বজ্ৰহস্তাত
থৈবৈন্দ্ৰীগজৰাজোপৰিস্থিতা॥প্ৰাপ্তাসহ
স্ৰনযনাযথাশক্ৰস্তথৈবসা॥ ২১ ॥ততঃপৰিবৃত
স্তাভিৰীশানোদেবশক্তিভিঃ॥হন্যন্তামসুৰাঃশী
ঘ্ৰংমমপ্ৰীত্যাহচণ্ডিকাম্‌॥ ২২ ॥ততোদেবীশৰী
ৰাত্তুবিনিষ্ক্ৰান্তাতিভীষণা॥চণ্ডিকাশক্তিৰত্যু
গ্ৰাশিবাশতনিনাদিনী॥ ২৩ ॥সাচাহধূম্ৰজটিল

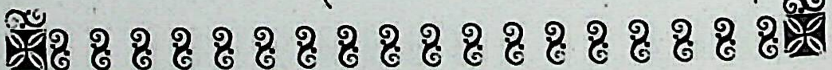


रेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकायँय्युः ॥१३॥
यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम्। तद्वदेव
हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥१४॥ हंसयुक्त
विमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः। आयाता ब्रह्मण
श्शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥१५॥ माहेश्वरी
वृषारूढ़ा त्रिशूलवरधारिणी। महाहिवलया प्राप्ता च
न्द्ररेखा विभूषणा ॥१६॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयू
रवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरू
पिणी ॥१७॥ तथैव वैष्णवीशक्तिर्गरुड़ोपरि संस्थि
ता । शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ॥१८॥
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः । शक्तिस्सा
प्याययौ तत्र वाराहीम्बिभ्रती तनुम् ॥१९॥ नार
सिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः । प्राप्ता तत्र
सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥२०॥ वज्रहस्ता त
थैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिताः । प्राप्ता सह
स्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥२१॥ तत परिवृत
स्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः । हन्यन्तामसुराश्शी
घ्रम्ममप्रीत्याह चण्डिकाम् ॥२२॥ ततो देवीशरी
रात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा । चण्डिका शक्तिरत्यु
ग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥२३॥ सा चाह धूम्रजटिल





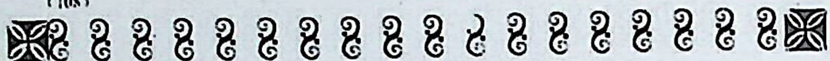
মীশানমপৰাজিতাং॥ দূতত্বংগচ্ছভগৱন্পার্শ্বংশু
ম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥২৪ ॥ব্রূহিশুম্ভংনিশুম্ভঞ্চদান
ৱাৱতিগৰ্ব্বিতৌ ॥যেচান্যেদানৱাস্তত্রযুদ্ধা
য়সমুপস্থিতাঃ॥২৫ ॥ত্রৈলোক্যমিন্দ্রোলভতাংদে
ৱাঃসন্তুহবির্ভুজঃ ॥যূয়ংপ্রয়াতপাতালংযদি
জীৱিতুমিচ্ছথ॥২৬ ॥বলাৱলেপাদথচেদ্ভৱন্তোযু
দ্ধকাঙ্ক্ষিণঃ॥তদাগচ্ছততৃপ্যন্তুমচ্ছিৱাঃপিশি
তেনৱঃ॥২৭ ॥যতোনিযুক্তোদৌত্যেনতয়াদেৱ্যা
শিৱঃস্বয়ম্॥শিৱদূতীতিলোকেস্মিংস্ততঃসাখ্যাতি
মাগতা॥২৮ ॥তেপিশ্রুত্বাৱচোদেৱ্যাঃশৰ্ব্বাখ্যাতংম
হাসুৰাঃ॥অমর্ষাপূৰিতাজগ্মুর্যত্রকাত্যায়নীস্থিতাঃ॥
২৯ ॥ততঃপ্রথমমেৱাগ্রেশৰশক্ত্যৃষ্টিৱৃষ্টিভিঃ॥ৱৱ
র্ষুৰুদ্ধতামর্ষাস্তান্দেৱীমমৰাৰয়ঃ॥৩০ ॥সাচতান্প্র
হিতান্বাণাঞ্ছূলশক্তিপৰশ্বধান্॥চিচ্ছেদলীলয়া
ধ্মাতধনুর্ম্মুক্তৈর্ম্মহেষুভিঃ॥৩১ ॥তস্যাগ্রতস্তথা
কালীশূলপাতৱিদাৰিতান্॥খট্বাঙ্গপোথিতাংশ্চাৰী
ন্কুর্ব্বতীৱ্যচৰত্তদা॥৩২ ॥কমণ্ডলুজলাক্ষেপহত
ৱীর্য্যান্হতৌজসঃ॥ব্রহ্মাণীচাকৰোচ্ছত্রূন্যেনযেন
স্মধাৱতি॥৩৩ ॥মাহেশ্বৰীত্রিশূলেনতথাচক্রেণবৈ
ষ্ণৱী॥দৈত্যাঞ্জঘানকৌমাৰীতথাশক্ত্যাতিকো



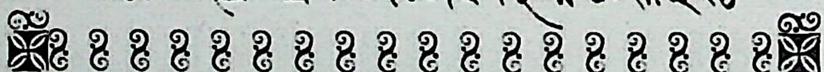


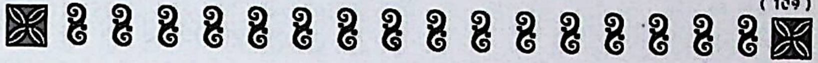
मीशानमपराजिता । दूतत्वं गच्छ भगवन्पार्श्वं शु
म्भनिशुम्भयोः ॥२४॥ ब्रूहि शुम्भन्निशुम्भञ्च दान
वावतिगर्व्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धा
य समुपस्थिताः ॥२५॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतान्दे
वास्सन्तु हविर्भुजः॥ यूयं प्रयात पातालं यदि
जीवितुमिच्छथ ॥२६॥ बलाबलेपादथ चेद्भवन्तो यु
द्धकाङ्क्षिणः । तदाऽगच्छत तृप्यन्तु मच्छिवा पिशि
तेन वः ॥२७॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या
शिवस्स्वयम् । शिवदूतीति लोकेस्मिँस्ततस्सा ख्याति
मागता ॥२८॥ तेपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातम्म
हासुराः । अमर्षापूरिता जग्मुर्य्यत्र कात्यायनी स्थिताः॥
२९॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः। वव
र्षुरुद्धतामर्षास्तान्देवीममरारयः॥३०॥ सा च तत्प्र
हितान्बाणाञ्छूलचक्रपरस्वधान् । चिच्छेद लीलया
ध्मातधनुर्म्मुक्तैर्म्महेषुभिः॥३१॥ तस्याग्रतस्तथा
काली शूलपातविदारितान्॥ खट्वाङ्गपोथिताँश्चारी
न्कुर्व्वन्ती व्यचरत्तदा ॥३२॥ कमण्डलुजलाक्षेपहत
वीर्य्यान्हतौजसः। ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन
स्म धावति ॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण
वैष्णवी । दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिको





পনা॥৩৪॥ ঐন্দ্রীকুলিশপাতেন শতশো দৈত্যদান
ৱাঃ॥ পেতুর্ব্বিদাৰিতাঃ পৃথ্ব্যাং ৰুধিৰৌঘপ্রৱর্ষিণঃ॥
৩৫॥ তুণ্ডপ্রহাৰবিধ্বস্তা দংষ্ট্রাগ্রক্ষতৱক্ষসঃ॥ ৱৰাহ
মূর্ত্ত্যা ন্যপতংশ্চক্রেণ চ বিদাৰিতাঃ॥৩৬॥ নখৈর্ব্বিদা
ৰিতাংশ্চান্যান্ ভক্ষয়ন্তী মহাসুৰান্॥ নাৰসিংহী চচা
ৰাজৌ নাদাপূর্ণদিগম্বৰা॥৩৭॥ চণ্ডাট্টহাসৈৰসুৰাঃ
শিৱদূত্যভিদূষিতাঃ॥ পেতুঃ পৃথিব্যাং পতিতাংস্তাংশ্চ
খাদাথ সা তদা॥৩৮॥ ইতি মাতৃগণং ক্রুদ্ধং মর্দ্দয়ন্তী
মহাসুৰান্॥ দৃষ্ট্বাভ্যুপায়ৈর্ব্বিবিধৈর্নেশুর্দ্দেৱাৰি
সৈনিকাঃ॥৩৯॥ পলায়নপৰান্ দৃষ্ট্বা দৈত্যান্ মাতৃগণা
র্দ্দিতান্॥ যোদ্ধুমভ্যাযযৌ ক্রুদ্ধো ৰক্তবীজো মহাসুৰঃ॥
৪০॥ ৰক্তবিন্দুর্যদা ভূমৌ পতত্যস্য শৰীৰতঃ॥ সমুৎপ
ততি মেদিন্যাং তৎপ্রমাণস্তদাসুৰঃ॥৪১॥ যুযুধে স গ
দাপাণিৰিন্দ্রশক্ত্যা মহাসুৰঃ॥ ততশ্চৈন্দ্রী স্বৱজ্রেণ ৰ
ক্তবীজমতাড়য়ৎ॥৪২॥ কুলিশেনাহতস্যাশু তস্য
সুস্রাৱ শোণিতম্॥ সমুত্তস্থুস্ততো যোধাস্তদ্রূপাস্ত
ৎপৰাক্রমাঃ॥৪৩॥ যাৱন্তঃ পতিতাস্তস্য শৰীৰাদ্রক্ত
বিন্দৱঃ॥ তাৱন্তঃ পুৰুষা জাতাস্তদ্বীর্য্যবলবিক্রমাঃ॥
৪৪॥ তে চাপি যুযুধুস্তত্র পুৰুষা ৰক্তসম্ভৱাঃ॥ সমং
মাতৃভিৰত্যুগ্রশস্ত্রপাতাতিভীষণম্॥৪৫॥ পুনশ্চ





पना ॥३४॥ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदान
वाः । पेतुर्व्विदारिता पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥
३५॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः। वराह
मूर्त्यान्यपतँश्चक्रेण च विदारिताः ॥३६॥ नखैर्व्विदा
रिताँश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान् । नारसिंही चचा
राजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥ चण्डाट्टहासैरसुरा
श्शिवदूत्यभिदूषिताः। पेतु पृथिव्याम्पतिताँस्ताँश्च
खादाथ सा तदा ॥३८॥ इति मातृगणं क्रुद्धम्मर्द्दयन्तं
महासुरान् । दृष्ट्वाभ्युपायैर्व्विविधैर्न्नेशुर्द्देवारि
सैनिकाः ॥३९॥ पलायनपरान्दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणा
र्द्दितान् ॥ याद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः
॥४०॥ रक्तबिन्दुर्य्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः । समुत्प
तति मेदिन्यान्तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥ युयुधे स ग
दापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः। ततश्चैन्द्रीस्ववज्रेण
रक्तबीजमताडयत् ॥४२॥ कुलिशेनाहतस्याशु तस्य
सुस्राव शोणितम् । समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्त
त्पराक्रमाः ॥४३॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्त
बिन्दवः । तावन्त पुरुषाजातास्तद्वीर्य्यबलविक्रमाः
॥४४॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः । सम
म्मातृभिरत्युग्रं शस्त्रपातातिभीषणम् ॥४५॥ पुनश्च



৫৬ ॥মুখেনকালীজগৃহেৰক্তবীজস্যশোণিতম্।
ততোসাবাজঘানাথগদয়াতত্ৰচণ্ডিকাম্॥৫৭॥
নচাস্যাবেদনাঞ্চক্ৰেগদাপাতোল্পিকামপি॥ত
স্যাহতস্যদেহাত্তুবহুসুস্ৰাৱশোণিতম্॥৫৮॥
যতস্ততস্তদ্বক্ত্ৰেণচামুণ্ডাসম্প্ৰতীচ্ছতি॥মুখেসমুদ্গ
তাযেস্যাৰক্তপাতান্মহাসুৰাঃ॥৫৯॥তাংশ্চখাদা
থচামুণ্ডাপপৌতস্যচশোণিতম্॥দেৱীশূলেন
বজ্ৰেণবাণৈৰসিভিৰৃষ্টিভিঃ॥৬০॥জঘানৰ
ক্তবীজন্তঞ্চামুণ্ডাপীতশোণিতম্॥সপপা
তমহীপৃষ্ঠেশস্ত্ৰসঙ্ঘসমাহতঃ॥৬১॥নীৰক্ত
শ্চমহীপালৰক্তবীজোমহাসুৰঃ॥ততস্তেহৰ্ষমতু
লমৱাপুস্ত্ৰিদশানৃপ॥৬২॥তেষাম্মাতৃগণোজা
তোননৰ্ত্তাসৃঙ্মদোদ্ধতঃ॥৬৩॥ ওঁ ॥ইতিমা
ৰ্কণ্ডেয়পুৰাণেসাৱৰ্ণিকেমন্বন্তৰেদেৱীমাহা
ত্ম্যেৰক্তবীজবধঃ ৮॥ ॥ ৰাজোৱাচ॥ ১॥
বিচিত্ৰমিদমাখ্যাতম্ভগৱন্ভৱতামম॥দেৱ্যাশ্চৰিত
মাহাত্ম্যংৰক্তবীজবধাশ্ৰিতম্॥২ ॥ভূয়শ্চেচ্ছাম্যহং
শ্ৰোতুংৰক্তবীজেনিপাতিতে॥চকাৰশুম্ভোযৎকৰ্ম্ম
নিশুম্ভশ্চাতিকোপনঃ॥৩ ॥ঋষিৰুৱাচ॥ ৪॥
চকাৰকোপমতুলংৰক্তবীজেনিপাতিতে॥শুম্ভা



वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा। ववाह रक्तम्पुरुषा
स्ततो जातास्सहस्त्रशः ।।४६।। वैष्णवी समरे चैनञ्च
क्रेणाभिजघान ह । गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरे
श्वरम् ।।४७।। वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भ
वैः । सहस्त्रशो जगद्व्याप्तन्तत्प्रमाणैर्म्महासुरैः।।४८।।

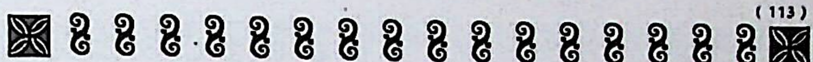
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना। माहे
श्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजम्महासुरम् ।।४९।। स चापि
गदया दैत्यस्सर्व्वा एवाहनत्पृथक्। मातॄ कोपसमा
विष्टो रक्तबीजो महासुरः ।।५०। तस्याहतस्य बहु
धा शक्तिशूलादिभिर्भ्भुवि । पपात यो वै रक्तौघ

स्तेनासञ्छतशोऽसुराः ।।५१।। तैश्चासुरासृक् सम्भू
तैरसुरैस्सकलञ्जगत् । व्याप्तमासीत्ततो देवा भ
यमाजग्मुरुत्तमम् ।।५२।। तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वा
चण्डिकाप्राहसत्त्वराम् । उवाच कालीञ्चामुण्डे विस्त
रम्वदनङ्कुरु ।।५३।। मच्छस्त्रपातसम्भूतान्रक्तबि

न्दून्महासुरान् । रक्तबिन्दो प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन
वेगिता ।।५४।। भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महा
सुरान् ।। एवमेषक्षयन्दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति
।।५५।। भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा नचोत्पत्स्यन्ति चाप
रे । इत्युक्त्वा तान्ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ।।



৫৮ ॥ মুখেন কালী জগৃহে রক্তবীজস্য শোণিতং
ততোসাবাজঘানাথ গদয়া তত্র চণ্ডিকাং ॥ ৫৯ ॥
ন চাস্যা বেদনাং চক্রে গদাপাতোল্পিকামপি ॥ ত
স্যাহতস্য দেহাত্তু বহু সুস্রাব শোণিতং ॥ ৬০ ॥
যতস্ততস্তদ্বক্ত্রেণ চামুণ্ডা সম্প্রতীচ্ছতি ॥ মুখে সমুদ্গ
তা যেস্যা রক্তপাতান্মহাসুরাঃ ॥ ৬১ ॥ তাংশ্চখাদা
থ চামুণ্ডা পপৌ তস্য চ শোণিতং ॥ দেবী শূলেন
বজ্রেণ বাণৈরসিভির্ঋষ্টিভিঃ ॥ ৬২ ॥ জঘান র
ক্তবীজং তং চামুণ্ডাপীতশোণিতং ॥ স পপা
ত মহীপৃষ্ঠে শস্ত্রসঙ্ঘসমাহতঃ ॥ ৬৩ ॥ নীরক্ত
শ্চ মহীপাল রক্তবীজো মহাসুরঃ ॥ ততস্তে হর্ষমতু
লমবাপুস্ত্রিদশা নৃপ ॥ ৬৪ ॥ তেষাং মাতৃগণো জা
তো ননর্তাসৃঙ্মদোদ্ধতঃ ॥ ৬৫ ॥ ৪ ॥ ইতি মা
র্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহা
ত্ম্যে রক্তবীজবধঃ ॥ ৮ ॥ রাজোবাচ ॥ ১ ॥ বি
চিত্রমিদমাখ্যাতং ভগবন্ ভবতা মম ॥ দেব্যাশ্চরিত
মাহাত্ম্যং রক্তবীজবধাশ্রিতং ॥ ২ ॥ ভূয়শ্চেচ্ছাম্যহং
শ্রোতুং রক্তবীজে নিপাতিতে ॥ চকার শুম্ভো যৎকর্ম
নিশুম্ভশ্চাতিকোপনঃ ॥ ৩ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ৪ ॥
চকার কোপমতুলং রক্তবীজে নিপাতিতে ॥ শুম্ভা

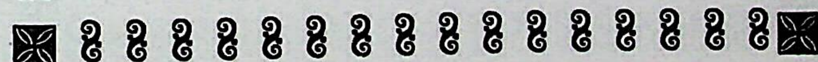


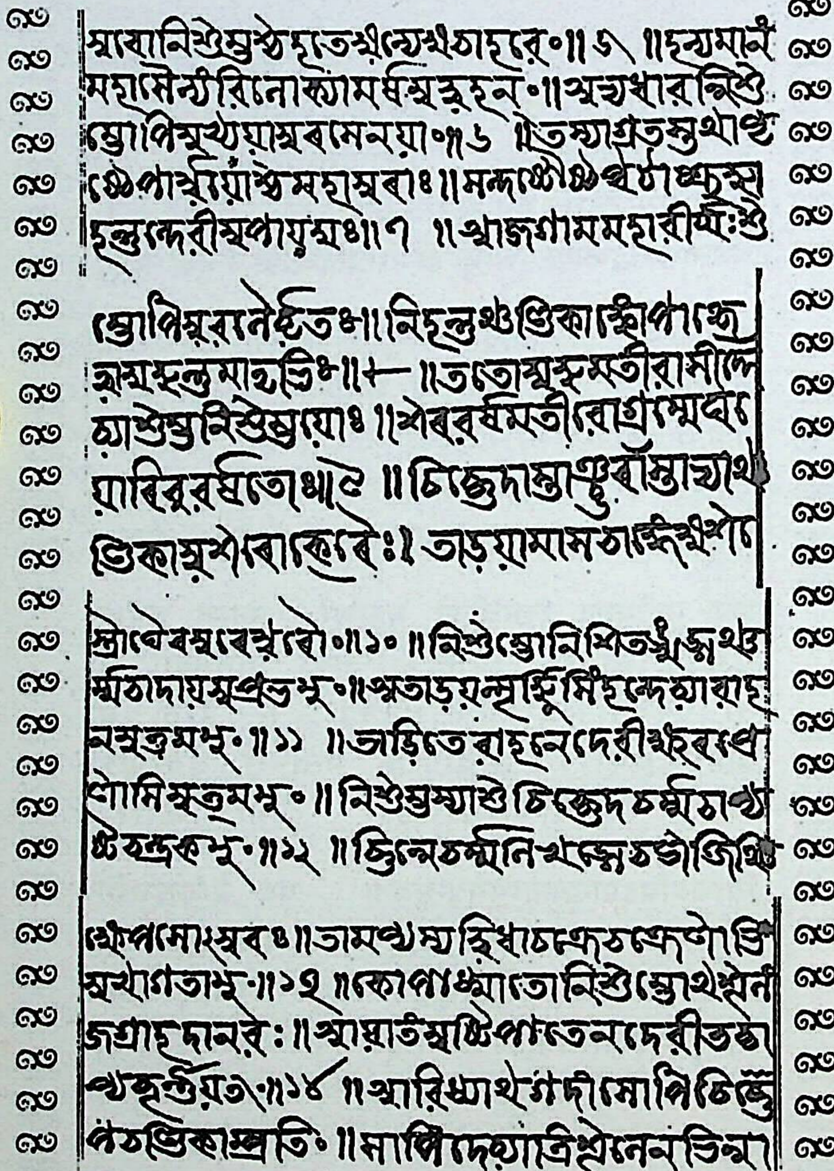
५६।। मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्
ततो सावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।।५७।।
न चास्यावेदनाञ्चक्रे गदापातोल्पिकामपि । त
स्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ।।५८।।
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा संप्रतीच्छति । मुखे समुद्ग

ता येस्या रक्तपातान् महासुराः ।।५९।। ताँश्चखादा
थ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् । देवी शूलेन
वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ।।६०।। जघान र
क्तबीजन्तं चामुण्डापीतशोणितम्। स पपात
त महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ।।६१।। नीरक्त

श्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः। ततस्ते हर्षमतु
लमवापुस्त्रिदशा नृप।।६२।। तेषां मातृगणो जा
तो ननर्तासृङ्मदोद्धतः।।६३।। ।। इति मा
र्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहा
त्म्ये रक्तबीजवधः।।८।। राजोवाच।।१।।

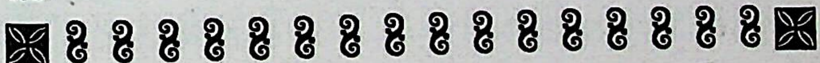
विचित्रमिदमाख्यातम्भगवन्भवता मम। देव्याश्चरित
माहात्म्ये रक्तबीजवधाश्रितम् ।।२।। भूयश्चेच्छाम्यहं
श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते । चकार शुम्भो यत्कर्म
निशुम्भश्चातिकोपनः ।।३।। ऋषिरुवाच ।।४।।
चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते। शुम्भा




ম্যাযানিশুম্ভস্থ মৃতেশ্যেস্মিতাহবে॥৭॥হন্যমানং
মহাসৈন্যং বিলোক্যামর্ষমুদ্বহন্॥অভ্যধাবন্নিশু
ম্ভোঽপি মুখ্যয়াসুরসেনয়া॥৮॥তস্যাগ্রতস্তথা পৃ
ষ্ঠে পার্শ্বয়োশ্চ মহাসুরাঃ॥সন্দষ্টৌষ্ঠপুটাঃ ক্রুদ্ধা
হন্তুং দেবীমুপাযযুঃ॥৯॥আজগাম মহাবীর্যঃ শু
ম্ভোঽপি স্ববলৈর্বৃতঃ॥নিহন্তুং চণ্ডিকাং কোপাৎ
কৃত্বা যুদ্ধন্তু মাতৃভিঃ॥৮॥ততো যুদ্ধমতীবাসীদ্দে
ব্যাঃ শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥শরবর্ষমতীবোগ্রং মেঘয়
োরিব বর্ষতোঃ॥৯॥চিচ্ছেদাস্তাঞ্ছরাংস্তাভ্যাং চ
ণ্ডিকা স্বশরোৎকরৈঃ॥তাড়য়ামাস চাঙ্গেষু শস্ত্রৌ
ঘৈরসুরেশ্বরৌ॥১০॥নিশুম্ভো নিশিতং খড়্গং চর্ম
চাদায় সুপ্রভম্॥অতাড়য়ন্মূর্দ্ধ্নি সিংহং দেব্যা বাহ
নমুত্তমম্॥১১॥তাড়িতে বাহনে দেবী ক্ষুরপ্রেণা
সিমুত্তমম্॥নিশুম্ভস্যাশু চিচ্ছেদ চর্ম চাপ্যষ্ট
চন্দ্রকম্॥১২॥ছিন্নে চর্মণি খড়্গে চ শক্তিং চি
ক্ষেপ সোঽসুরঃ॥তামপ্যস্য দ্বিধা চক্রে চক্রেণা
ভিমুখাগতাম্॥১৩॥কোপাধ্মাতো নিশুম্ভোঽথ শূলং
জগ্রাহ দানবঃ॥আয়াতং মুষ্টিপাতেন দেবী তচ্চা
প্যচূর্ণয়ৎ॥১৪॥আবিধ্যাথ গদাং সোঽপি চিক্ষে
প চণ্ডিকাং প্রতি॥সাপি দেব্যা ত্রিশূলেন ভিন্না



सुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥५॥ हन्यमानं
महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् । अभ्यधावन्निशु
म्भोपि मुख्ययासुरसेनया ॥६॥ तस्याग्रतस्तथा पृ
ष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः । सन्दष्टौष्ठपुटाःक्रुद्धा
हन्तुन्देवीमुपाययुः ॥७॥ आजगाम महावीर्य्यः शु
म्भोपि स्वबलैर्वृतः । निहन्तुञ्चण्डिकाङ्कोपात्कृ
त्वा युद्धन्तु मातृभिः ॥८॥ ततो युद्धमतीवासीद्दे
व्या शुम्भनिशुम्भयोः । शरवर्षमतीवोग्रम्मेघ
योरिव वर्षतोः ॥९॥ चिच्छेदास्ताञ्छराँस्ताभ्याञ्च
ण्डिका स्वशरोत्करैः । ताडयामास चाङ्गेषु श
स्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥ निशुम्भो निशितङ्खड्गञ्च
र्म्म चादाय सुप्रभम् । अताड़यन्मूर्ध्नि सिंहन्देव्या वाह
नमुत्तमम् ॥११॥ ताड़िते वाहने देवी क्षुरप्रे
णासिमुत्तमम् । निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म्म चाप्य
ष्टचन्द्रकम् ॥१२॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिञ्चि
क्षेप सोऽसुरः । तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभि
मुखागताम् ॥१३॥ कोपाध्मातो निशुम्भोथ शूलं
जग्राह दानवः । आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चा
प्यचूर्णयत् ॥१४॥ आविध्याथ गदां सोपि चिक्षे
प चण्डिकाम्प्रति । सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना



ত্বং সমরমাগতঃ॥১৫॥ততঃ পরশুহস্তন্তমায়ান্তং দৈ
ত্যপুঙ্গবং॥আহত্য দেবী বাণৌঘৈরপাতয়ত ভূত
লে॥১৬॥তস্মিন্নিপতিতে ভূমৌ নিশুম্ভে ভীমবিক্র
মে॥ভ্রাতর্য্যতীব সংক্রুদ্ধঃ প্রয়যৌ হন্তুমম্বিকাং॥
১৭॥স রথস্থস্তথাত্যুচ্চৈর্গৃহীতপরমায়ুধৈঃ॥

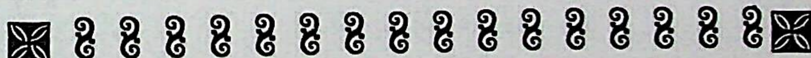
ভুজৈরষ্টাভিরতুলৈর্ব্যাপ্যাশেষং বভৌ নভঃ॥১৮॥তমা
য়ান্তং সমালোক্য দেবী শঙ্খমবাদয়ৎ॥জ্যাশব্দঞ্চাপি
ধনুষশ্চকারাতীব দুঃসহং॥১৯॥পূরয়ামাস ককু
ভো নিজঘণ্টাস্বনেন চ॥সমস্তদৈত্যসৈন্যানাং তে
জোবধবিধায়িনা॥২০॥ততঃ সিংহো মহানাদৈস্ত্যাজি

তেভমহামদৈঃ॥পূরয়ামাস গগনং গান্তথোপদিশো
দশ॥২১॥ততঃ কালী সমুৎপত্য গগনং ক্ষ্মামতাড়য়ৎ॥
করাভ্যান্তন্নিনাদেন প্রাক্স্বনাস্তে তিরোহিতাঃ॥২২॥
অট্টাট্টহাসমশিবং শিবদূতী চকার হ॥তৈঃ শব্দৈ
রসুরাস্ত্রেসুঃ শুম্ভঃ কোপং পরং যযৌ॥২৩॥দুরাত্মং

স্তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ব্যাজহারাম্বিকা যদা॥তদা জয়েত্য
ভিহিতং দেবৈরাকাশসংস্থিতৈঃ॥২৪॥শুম্ভেনাগ
ত্য যা শক্তির্মুক্তা জ্বালাতিভীষণা॥আয়ান্তী বহ্নি
কূটাভা সা নিরস্তা মহোল্কয়া॥২৫॥সিংহনাদেন
শুম্ভস্য ব্যাপ্তং লোকত্রয়ান্তরং॥নির্ঘাতনিঃস্ব



भस्मत्वमागता ॥१५॥ तत परशुहस्तन्तमायान्तं दै
त्यपुङ्गवम् । आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूत
ले ॥१६॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्र
मे । भ्रातर्य्यतीव सङ्क्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्
॥१७॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥१८॥ तमा
यान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् । ज्याशब्दञ्चापि
धनुश्चकारातीवदुस्सहम् ॥१९॥ पूरयामास ककु
भो निजघण्टास्वनेन च । समस्तदैत्यसैन्यानान्ते
जो वधविधायिना ॥२०॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजि
तेभमहामदैः । पूरयामास गगनङ्गान्तथोपदिशो
दश ॥२२॥ तत काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताड़यत्।
कराभ्यान्तन्निनादेन प्राक्स्वनास्तेतिरोहिताः। । २ २ । ।
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह । तैश्शब्दै
रसुरास्त्रेसुश्शुम्भ कोपम्परं ययौ ॥२३॥ दुरात्मँ
स्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा । तदा जयेत्य
भिहितन्देवैराकाशसंस्थितैः ॥२४॥ शुम्भेनाग
त्य या शक्तिर्मुक्ताज्वालातिभीषणा । आयान्ती वह्नि
कूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥२५॥ सिंहनादेन
शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् । निर्घातनिस्व



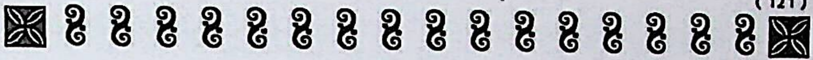
ন্যাদো ঘোৰো জিতৱানৱনীপতে ॥ ২৬ ॥ শুম্ভমুক্তাঞ্ছ
ৰান্দেৱী শুম্ভস্তৎপ্ৰহিতাংস্তু তান্‌ ॥ চিচ্ছেদ স্বশৰৈৰু
গ্ৰৈঃ শতশোঽথ সহস্ৰশঃ ॥ ২৭ ॥ ততঃ সা চণ্ডিকা ক্ৰু
দ্ধা শূলেনাভিজঘান তম্‌ ॥ স তদাভিহতো ভূমৌ
মূৰ্চ্ছিতো নিপপাত হ ॥ ২৮ ॥ ততো নিশুম্ভঃ সম্প্ৰাপ্য
চেতনামাত্তকাৰ্ম্মুকঃ ॥ আজঘান শৰৈৰ্দ্দেৱীং কা
লীং কেশৰিণং তথা ॥ ২৯ ॥ পুনশ্চ কৃত্বা বাহূনামযু
তং দনুজেশ্বৰঃ ॥ চক্ৰায়ুধেন দিতিজশ্ছাদয়ামা
স চণ্ডিকাম্‌ ॥ ৩০ ॥ ততো ভগৱতী ক্ৰুদ্ধা দুৰ্গা দু
ৰ্গাৰ্তিনাশিনী ॥ চিচ্ছেদ তানি চক্ৰাণি স্বশৰৈঃ
সায়কাংশ্চ তান্‌ ॥ ৩১ ॥ ততো নিশুম্ভো বেগেন গ
দামাদায় চণ্ডিকাম্‌ ॥ অভ্যধাৱত বৈ হন্তুং দৈত্যসে
নাসমাবৃতঃ ॥ ৩২ ॥ তস্যাপতত এৱাশু গদাং চি
চ্ছেদ চণ্ডিকা ॥ খড়্গেন শিতধাৰেণ স চ শূলং স
মাদদে ॥ ৩৩ ॥ শূলহস্তং সমায়ান্তং নিশুম্ভমমৰা
ৰ্দনম্‌ ॥ হৃদি বিব্যাধ শূলেন বেগাবিদ্ধেন চণ্ডিকা ॥
৩৪ ॥ ভিন্নস্য তস্য শূলেন হৃদয়ান্নিঃসৃতোঽপৰঃ ॥
মহাবলো মহাবীৰ্য্যস্তিষ্ঠেতি পুৰুষো বদন্‌ ॥ ৩৫ ॥
তস্য নিষ্ক্ৰামতো দেৱী প্ৰহস্য স্বনৱত্ততঃ ॥ শিৰ
শ্চিচ্ছেদ খড়্গেন ততোঽসাৱপতদ্ভুৱি ॥ ৩৬ ॥ তত



नो घोरो जितवानवनीपते ॥२६॥ शुम्भमुक्ताञ्छ रान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् । चिच्छेद स्वशरैरु ग्रैश्शतशोऽथ सहस्रशः ॥२७॥ ततस्सा चण्डिका क्रु द्धा शूलेनाभिजघान तम् । स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह॥२८॥ ततो निशुम्भस्सम्प्रा प्य चेतनामात्तकार्म्मुकः। आजघान शरैर्देवीङ्का लीङ्केसरिणन्तथा ॥२९॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयु तन्दनुजेश्वरः । चक्रायुधेन दितिजश्छादयामा स चण्डिकाम् ॥३०॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दु र्गतिनाशिनी । चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकाँश्च तान् ॥३१॥ ततो निशुम्भो वेगेन ग दामादाय चण्डिकाम् । अभ्यधावत वै हन्तुन्दैत्यसे नासमावृतः ॥३२॥ तस्यापतत एवाशु गदाञ्चि च्छेद चण्डिका ॥ खड्गेन शितधारेण स च शूलं स माददे ॥३३॥ शूलहस्तन्तमायान्तन्निशुम्भममरा र्दनम् । हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥३४॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निस्सृतोपरः। महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्॥३५॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः । शिर श्चिच्छेद खड्गेन ततो सावपतद्भुवि॥३६॥ तत

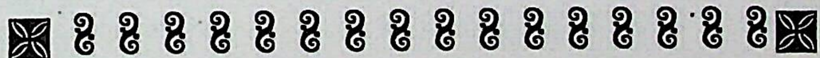


সিংহস্তথাদোগ্রৈ দংষ্ট্রাক্ষুণ্ণশিরোধরাঃ। খড়্গবাঁস্তু
মুখাকালীশিবদূতীতথাপরান্‌॥ ৩৭॥ কৌমারী
শক্তিনির্ভিন্নাঃ কেচিন্নেশুর্মহাসুরাঃ। ব্রহ্মাণী
মন্ত্রপূতেন তোয়েনান্যে নিরাকৃতাঃ॥ ৩৮॥ মা
হেশ্বরী ত্রিশূলেন ভিন্নাঃ পেতুস্তথাপরে। বারা
হীতুণ্ডঘাতেন কেচিচ্চূর্ণীকৃতা ভুবি। খণ্ডখণ্ড
ঞ্চক্রেণ বৈষ্ণব্যা দানবাঃ কৃতাঃ। বজ্রেণ চৈন্দ্রী হ
স্তাগ্রবিমুক্তেন তথাপরে॥ ৪০॥ কেচিদ্বিনেশুর
সুরাঃ কেচিন্নষ্টা মহাহবাৎ। ভক্ষিতাশ্চা
পরে কালীশিবদূতীমৃগাধিপৈঃ॥ ৪১॥ ঔ॥ ই
তি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দে
বীমাহাত্ম্যে নিশুম্ভবধঃ॥ ঔ॥ ঋষিরুবাচ॥ ১
নিশুম্ভং নিহতং দৃষ্ট্বা ভ্রাতরং প্রাণসম্মিতম্‌। হন্য
মানং বলঞ্চৈব শুম্ভঃ ক্রুদ্ধোঽব্রবীদ্বচঃ॥ ২॥ বলাব
লেপাদ্দুষ্টে ত্বং মা দুর্গে গর্বমাবহ। অন্যাসাং বলমা
শ্রিত্য যুধ্যসে যাতিমানিনী॥ ৩॥ দেব্যুবাচ॥
৪॥ একৈবাহং জগত্যত্র দ্বিতীয়া কা মমাপরা।
পশ্যৈতা দুষ্ট ময্যেব বিশন্ত্যো মদ্বিভূতয়ঃ॥ ৫
ঋষিরুবাচ॥ ॥ ততঃ সমস্তাস্তা দেব্যো ব্র
হ্মাণীপ্রমুখা লয়ম্‌। তস্যা দেব্যাস্তনৌ জগ্মু



स्सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् । असुराँस्ताँ
स्तथा काली शिवदूती तथाऽपरान् ॥३७॥ कौमारी
शक्तिनिर्भिन्ना केचिन्नेशुर्महासुराः । ब्रह्माणी
मन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥३८॥ मा
हेश्वरी त्रिशूलेन भिन्ना पेतुस्तथाऽपरे । वारा
ही तुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि॥ खण्डखण्डञ्च
चक्रेण वैष्णव्या दानवा कृताः । वज्रेण चैन्द्रीह
स्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥४०॥ केचिद्विनेशुर
सुरा केचिन्नष्टा महाहवात्। भक्षिताश्चा
परे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः॥४१॥ ॥९॥

इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे दे
वीमाहात्म्ये निशुम्भवधः॥ ॥ ऋषिरुवाच॥१॥
निशुम्भन्निहतन्दृष्ट्वा भ्रातरम्प्राणसम्मितम् । हन्य
मानम्बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोब्रवीद्वचः ॥२॥ बलाव
लेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्व्वमावह । अन्यासाम्बल
माश्रित्य युध्यसे यातिमानिनी ॥३॥ देव्युवाच
॥४॥ एकैवाहञ्जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैतादुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥५॥
ऋषिरुवाच॥ ततस्समस्तास्ता देव्यो ब्र
ह्माणीप्रमुखा लयम् । तस्या देव्यास्तनौ जग्मु



ৰৈবাসীত্তদাম্বিকা ॥৬ ॥দেব্যুৱাচ ॥ ৭ ॥ অহং
বিভূত্যা বহুভিৰিহ ৰূপৈৰ্য্যদাস্থিতা ॥ তৎসংহৃত
ম্ময়ৈকৈৱ তিষ্ঠাম্যাজৌ স্থিৰো ভৱ ॥ ৮ ॥ ঋষি
ৰুৱাচ ॥ ৯ ॥ ততঃ প্ৰৱৱৃতে যুদ্ধং দেব্যাঃ শুম্ভস্য
চোভয়োঃ ॥ পশ্যতাং সৰ্ব্বদেৱানামসুৰাণাঞ্চ দারু

ণম্ ॥ ১০ ॥ শৰৱৰ্ষৈঃ শিতৈঃ শস্ত্ৰৈস্তথাস্ত্ৰৈশ্চৈৱ দা
ৰুণৈঃ ॥ তয়োৰ্যুদ্ধমভূদ্ভূয়ঃ সৰ্ব্বলোকভয়ঙ্কৰম্ ॥ ১১
দিব্যান্যস্ত্ৰাণি শতশো মুমুচে যান্যথাম্বিকা ॥
বভঞ্জ তানি দৈত্যেন্দ্ৰস্তৎপ্ৰতীঘাতকৰ্ত্তৃভিঃ ॥ ১২ ॥
মুক্তানি তেন চাস্ত্ৰাণি দিব্যানি পৰমেশ্বৰী ॥ বভ

ঞ্জ লীলয়ৈৱোগ্ৰহুঙ্কাৰোচ্চাৰণাদিভিঃ ॥ ১৩ ॥ ত
তঃ শৰশতৈৰ্দ্দেৱীমাচ্ছাদয়ত সোঽসুৰঃ ॥ সাপি ত
ৎকুপিতা দেৱী ধনুশ্চিচ্ছেদ চেষুভিঃ ॥ ১৪ ॥ ছিন্নে
ধনুষি দৈত্যেন্দ্ৰস্তথা শক্তিমথাদদে ॥ চিচ্ছেদ দে
ৱী চক্ৰেণ তামপ্যস্য কৰে স্থিতাম্ ॥ ১৫ ॥ ততঃ

খড়্গমুপাদায় শতচন্দ্ৰঞ্চ ভানুমৎ ॥ অভ্যধাৱত্ত
দা দেৱীং দৈত্যানামধিপেশ্বৰঃ ॥ ১৬ ॥ তস্যাপতত
এৱাশু খড়্গং চিচ্ছেদ চণ্ডিকা ॥ ধনুৰ্ম্মুক্তৈঃ শিতৈ
ৰ্ব্বাণৈশ্চৰ্ম্ম চাৰ্ককৰামলম্ ॥ ১৭ ॥ হতাশ্বঃ স ত
দা দৈত্যশ্ছিন্নধন্বা বিসাৰথিঃ ॥ জগ্ৰাহ মুদ্গৰং ঘো

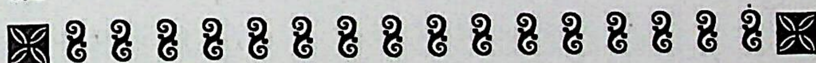


रेकैवासीत्तदाम्बिंका ॥६॥ देव्युवाच ॥७॥ अहं
विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्य्यदास्थिता। सत्संहृत
म्मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥८॥ ऋषि
रुवाच ॥९॥ तत प्रववृते युद्धन्देव्याश्शुम्भस्य
चोभयोः । पश्यतां सर्व्वदेवानामसुराणाञ्च दारु

णम् ॥१०॥ शरवर्षैश्शितैश्शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दा
रुणैः । तयोर्युद्धमभूद्भूयस्सर्वलोकभयङ्करम्॥११॥
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका॥
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः॥१२॥
मुक्तानि तेन चास्त्रणि दिव्यानि परमेश्वरी । बभ

ञ्ज लीलयैवोग्रं हूङ्कारोच्चारणादिभिः॥१३॥ त
तश्शरशतैर्द्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः । सापि त
त्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१४॥ छिन्ने
धनुषि दैत्येन्द्रस्तथाशक्तिमथाददे । चिच्छेद
देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥१५॥ ततः

खड्गमुपादाय शतचन्द्रञ्च भानुमत् । अभ्यधावत्त
दा देवीन्दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥ तस्यापतत
एवाशु खड्गञ्चिच्छेद चण्डिका । धनुर्म्मुक्तैश्शितै
र्ब्बाणैश्चर्म्म चार्क्ककरामलम् ॥१७॥ हताश्वस्स त
दा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः । जग्राह मुद्गरं घो



বমম্বিকানিধনায্যতঃ॥১৮॥চিচ্ছেদাপততস্তস্য
মুদ্গরান্নিশিতৈশ্শরৈঃ॥তথাপিসোভ্যধাবত্তাম্মু
ষ্টিমুদ্যম্যবেগবান্॥১৯॥সমুষ্টিম্পাতয়ামা
সহৃদয়েদৈত্যপুঙ্গবঃ॥দেব্যাস্তঞ্চাপিসাদেবী
তলেনোরস্যতাড়য়ৎ॥২০॥তলপ্রহারাভিহতো

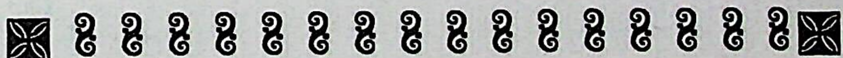
নিপপাতমহীতলে॥সদৈত্যরাজস্সহসাপুনরে
বতথোত্থিতঃ॥২১॥উঁৎপত্যচপ্রগৃহ্যোচ্চৈর্দেবীং
গগনমাস্থিতঃ॥তত্রাপিসানিরাধারাযুযুধেতে
নচণ্ডিকা॥২২॥নিযুদ্ধঙ্খেতদাদৈত্যশ্চণ্ডিকাচ
পরস্পরম্॥চক্রতুঃপ্রথমংসিদ্ধমুনিবিস্ময়কা

রকম্॥২৩॥ততোনিযুদ্ধংসুচিরঙ্কৃত্বাতেনাম্বিকা
সহ॥উঁৎপাত্যভ্রাময়ামাসচিক্ষেপধরণীতলে॥
২৪॥সক্ষিপ্তোধরণীম্প্রাপ্যমুষ্টিমুদ্যম্যবেগিতঃ
অভ্যধাবতদুষ্টাত্মাচণ্ডিকানিধনেচ্ছয়া॥২৫॥
তমায়ান্তন্ততোদেবীসর্বদৈত্যজনেশ্বরম্॥জ

গত্যাম্পাতয়ামাসভিত্ত্বাশূলেনবক্ষসি॥২৬॥সগতা
সুঃপপাতোর্ব্যান্দেবীশূলাগ্রবিক্ষতঃ॥চালয়ন্সক
লাম্পৃথ্বীংসাব্ধিদ্বীপাংসপর্বতাম্॥২৭॥ততঃপ্রস
ন্নমখিলংহতেতস্মিন্দুরাত্মনি॥জগৎস্বাস্থ্যম
তীবাপনির্মলঞ্চাভবন্নভঃ॥২৮॥উঁৎপাতমেঘা



रंमम्बिकानिधनोद्यतः ।।१८।। चिच्छेदापततस्तस्य
मुद्गरन्निशितैश्शरैः । तथापि सोभ्यधावत्ताम्मु
ष्टिमुद्यम्य वेगवान् ।।१९।। समुष्टिम्पातयामा
स हृदये दैत्यपुङ्गवः । देव्यास्तञ्चापि सा देवी
तलेनोरस्यताडयत् ।।२०।। तलप्रहाराभिह
तो निपपात महीतले। स दैत्यराजस्सहसा पुनरे
व तथोत्थिताः ।।२१।। उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीङ्ग
गनमास्थितः । तत्रापि सा निराधारा युयुधे ते
न चण्डिका ।।२२।। नियुद्धङ्खे तदा दैत्यश्चण्डिका च
परस्परम् । चक्रतु प्रथमं युद्धं मुनिविस्मयका
रकम् ।।२३।। ततो नियुद्धं सुचिरङ्कृत्वा तेनाम्बिका
सह । उत्पाट्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ।।
२४।। स क्षिप्तो धरणीम्प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिका निधनेच्छया।।२५।।
तमायान्तन्ततो देवी सर्व्वदैत्यजनेश्वरम्। ज
गत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ।।२६।। स गता
सु पपातोर्व्व्यान्देवीशूलाग्रविक्षतः । चालयन्त्सक
लां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ।।२७।। तत प्रस
न्नमखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि । जगत्स्वास्थ्यम
तीवाप निर्मलञ्चाभवन्नभः ।।२८।। उत्पातमेघा



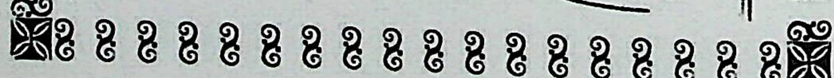


স্মাক্ষ্মায়েপ্রাণার্মন্ত্রসমর্যাম্ ॥ মাবিস্তামাঙ্গির্বা
হিন্যন্তথার্মন্তত্রপাতিতে ॥ ২৯ ॥ ততোদেব্যাগণা
স্মাচ্ছিষির্নিভ্রিমানমাঃ ॥ রুদ্ধহুর্মিগতেতস্মি
ন্গদচ্ছিন্নানিতণ্ডদ্গঃ ॥ ৩০ ॥ সুরাদয়স্তস্মিন্রা
ন্যেনন্তস্থাস্মাবোগণাঃ ॥ বভূবুঃপ্রস্থ্যাস্তুথার

তাসুপ্রভাংশুদ্দিরাকরঃ ॥ ৩১ ॥ জজ্বলুশ্চাগ্নয়শ্শা
ন্তাশ্শান্তাদিগ্জনিতস্বনাঃ ॥ ৩২ ॥ ॐ ॥ জাতিমা
ক্কণ্ডেয়ঃপুরাণেসাবর্ণিকেমন্বন্তরেদেবীমাহাত্ম্যে
শুম্ভবধঃ ॥ ১০ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ১ ॥ দেব্যাহতে
তত্রমহাসুরেন্দ্রেসেন্দ্রাস্সুরাবহ্নিপুরোগমাস্তাম্ ॥

কাত্যায়নীন্তুষ্টুবুরিষ্টলাভাদ্বিকাশিবক্ত্রাব্জবিকাশি
তাশাঃ ॥ ২ ॥ দেবা ঊচুঃ ॥ দেবিপ্রপন্নার্ত্তিহরেপ্র
সীদপ্রসীদমাতর্জ্জগতোখিলস্য ॥ প্রসীদবিশ্বে
শ্বরিপাহিবিশ্বন্ত্বমীশ্বরীদেবিচরাচরস্য ॥ ৩ ॥
আধারভূতাজগতস্ত্বমেকামহীস্বরূপেণযতস্থি

তাসি ॥ অপাংস্বরূপস্থিতয়াত্বয়ৈতদাপ্যায্যতেকৃৎস্নম
লঙ্ঘ্যবীর্য্যে ॥ ৪ ॥ ত্বংবৈষ্ণবীশক্তিরনন্তবীর্য্যাবিশ্বস্য
বীজম্পরমাসিমায়া ॥ সম্মোহিতন্দেবিসমস্তমেতৎত্বং
বৈপ্রসন্নাভুবিমুক্তিহেতুঃ ॥ ৫ ॥ বিদ্যাস্সমস্তাস্তব
দেবিভেদাঃস্ত্রিয়স্সমস্তাস্সকলাজগৎসু ॥ ত্বয়ৈকয়া





स्सोल्का ये प्रागासँस्ते शमय्यँयुः । सरितो मार्गवा
हिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥२९॥ ततो देवगणा
स्सर्व्वे हर्षनिर्भरमानसाः । बभूवुर्न्निहते तस्मि
न् गन्धर्व्वा ललितञ्जगुः ॥३०॥ अवादयँस्तथैवा
न्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः । ववु पुण्यास्तथा वा
ताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥३१॥ जज्वलुश्चाग्नयश्शा
न्ताश्शान्तदिग्जनितस्वनाः ॥३२॥ ॥ इति मा
र्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहा
त्म्ये शुम्भवधः ॥१०॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ देव्या हते
तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्रास्सुरावह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीन्तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशवक्त्राब्जविकाशि
ताशाः ॥२॥ देवा ऊचुः ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्र
सीद प्रसीद मातर्ज्जगतोखिलस्य। प्रसीद विश्वे
श्वरि पाहि विश्वन्त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥३॥
आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थि
तासि । अपां स्वरूपस्थितया त्वयेतदाप्याय्यते कृत्स्न
मलङ्घ्यवीर्य्ये॥४॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्य्या विश्वस्य
बीजम्परमासि माया । सम्मोहितन्देवि समस्तमेतत्त्वं
वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥ विद्यास्समस्तास्तव
देवि भेदाः स्त्रियस्समस्तास्सकलाजगत्सु । त्वयैकया



প্ৰৰিতমৰ্য্যয়েতৎক্ৰান্তেস্তুতিস্তুত্যপৰাপৰাক্তিঃ।।৬।।
সৰ্ব্বভূতাযদাদেৱীস্বৰ্গমুক্তিপ্ৰদায়িনী।।ত্বংস্তুতাস্তু
তয়েকাৱাভৱন্তুপৰমোক্তয়ঃ।। ৭ ।।সৰ্ব্বস্যবুদ্ধিৰূ
পেণজনস্যহৃদিসংস্থিতে।।স্বৰ্গাপৱৰ্গদেদেৱি
নাৰায়ণিনমোস্তুতে।। ৮ ।।কলাকাষ্ঠাদিৰূপেণ
পৰিণামপ্ৰদায়িনি।।বিশ্বস্যোপৰতৌশক্তেনাৰায়
ণিনমোস্তুতে।।৯ ।।সৰ্ব্বমঙ্গলমঙ্গল্যেশিৱেসৰ্ব্বাৰ্থ
সাধিকে।।শৰণ্যেত্ৰ্যম্বকেগৌৰিনাৰায়ণিনমোস্তু
তে।।১০ ।।সৃষ্টিস্থিতিবিনাশানাংশক্তিভূতেসনা
তনি।।গুণাশ্ৰয়েগুণময়েনাৰায়ণিনমোস্তুতে ১১।।
শৰণাগতদীনাৰ্ত্তপৰিত্ৰাণপৰায়ণে।।সৰ্ব্বস্যাৰ্ত্তি
হৰেদেৱিনাৰায়ণিনমোস্তুতে।। ১২ ।।হংসযুক্তবিমা
নস্থেব্ৰহ্মাণীৰূপধাৰিণি।।কৌশাম্ভঃক্ষৰিকেদে
ৱিনাৰায়ণিনমোস্তুতে।।১৩ ।।ত্ৰিশূলচন্দ্ৰাহিধৰে
মহাবৃষভবাহিনি।।মাহেশ্বৰীস্বৰূপেণনাৰায়ণি
নমোস্তুতে।। ১৪ ।।ময়ূৰকুক্কুটবৃতেমহাশক্তিধৰে
নঘে।।কৌমাৰীৰূপসংস্থানেনাৰায়ণিনমোস্তু
তে।।১৫ ।।শঙ্খচক্ৰগদাশাৰ্ঙ্গগৃহীতপৰমায়ুধে
প্ৰসীদবৈষ্ণৱীৰূপেনাৰায়ণিনমোস্তুতে।।১৬।।
গৃহীতোগ্ৰমহাচক্ৰেদংষ্ট্ৰোদ্ধৃতবসুন্ধৰে।।বৰাহৰূ



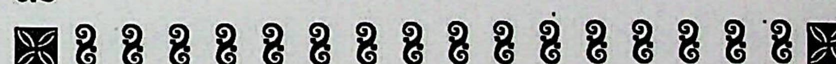
पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिस्स्तव्यपरा परोक्तिः ॥६॥ सर्व्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥७॥ सर्व्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते । स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥८॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि । विश्वस्यौपरतौ शक्ते नारायणि नमोस्तु ते ॥९॥ सर्व्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्व्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥१०॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोस्तु ते॥११॥ शरणागतदीनार्त्तपरित्राणपरायणे । सर्व्वस्यार्त्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥१२॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि । कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोस्तुं ते ॥१३॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि । माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोस्तु ते ॥१४॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे । कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोस्तु ते ॥१५॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोस्तु ते ॥१६॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे। वराहरू



পিনিশিরেনারায়নিনমোস্তুতে॥ ১৭ ॥নৃসিংহরূ
পেণোগ্রেণহন্তুন্দৈত্যান্ৰ্জাতোদ্যমে॥ ত্রৈলোক্যত্রা
ণসহিতেনারায়নিনমোস্তুতে॥ ১৮ ॥কিরীটিনি
মহারজ্রেসহস্রনয়নোজ্জ্বলে॥ হৃতপ্রাণহরেচ
ন্দ্রীনারায়নিনমোস্তুতে॥ ১৯ ॥শিরহৃতীস্বরূপেণ
হতদৈত্যমহাবলে॥ ঘোররূপেমহারাবেনারায়নি
নমোস্তুতে॥ ২০ ॥দংষ্ট্রাকরালবদনেশিরোমালাবি
ভূষণে॥ চামুণ্ডেমুণ্ডমথনেনারায়নিনমোস্তুতে॥
২১ ॥লক্ষ্মীলজ্জেমহাবিদ্যেশ্রদ্ধেপুষ্টিস্বধেধ্রুবে॥
মহারাত্রিমহাবিদ্যেনারায়নিনমোস্তুতে॥ ২২ ॥মে
ধেসরস্বতিবরেভূতিবাভ্রবিতামসি॥ নিয়তেত্বংপ্র
সীদেশেনারায়নিনমোস্তুতে॥ ২৩ ॥সর্ব্বতঃপাণি
পাদান্তেসর্ব্বতোক্ষিশিরোমুখে॥ সর্ব্বতঃশ্রবণেঘ্রা
ণেনারায়নিনমোস্তুতে॥ ২৪ ॥সর্ব্বস্বরূপেসর্ব্বে
শেসর্ব্বশক্তিসমন্বিতে॥ ভয়েভ্যস্ত্রাহিনোদেবি
দুর্গেদেবিনমোস্তুতে॥ ২৪ ॥এতত্তেবদনংসৌম্যংলোচন
ত্রয়ভূষিতম্॥ পাতুনঃসর্ব্বভীতিভ্যঃকাত্যায়িনিনমো
স্তুতে॥ ২৫ ॥জ্বালাকরাল... মত্যুগ্রমশেষাসুরসূ
দনম্॥ ত্রিশূলম্পাতুনোভীতের্ভদ্রকালিনমোস্তু
তে॥ ২৬ ॥হিনস্তিদৈত্যতেজাংসিস্বনেনাপূর্য্যযাজগৎ



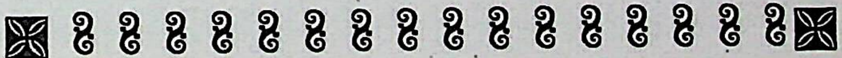
पिणि शिवे नारायणि नमोस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरू
पेणोग्रेण हन्तुन्दैत्यान् कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्रा
णसहिते नारायणि नमोस्तु ते ॥१८॥ किरीटिनि
महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले । वृत्रप्राणहरे चै
न्द्रि नारायणि नमोस्तु ते ॥१९॥ शिवदूतीस्वरूपेण
हतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे नारायणि
नमोस्तु ते ॥२०॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालावि
भूषणे । चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोस्तु ते॥
२१॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे॥
महारात्रि महामाये नारायणि नमोस्तु ते॥२२॥ मे
धे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि। नियते त्वं प्र
सीदेशे नारायणि नमोस्तु ते ॥२३॥ सर्व्वत पाणि
पादान्ते सर्व्वतोक्षिशिरोमुखि॥ सर्व्वतःश्रवणघ्रा
णे नारायणि नमोस्तु ते॥२४॥ सर्व्वस्वरूपे सर्व्वे
शे सर्व्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दु
र्गे देवि नमोस्तु ते ॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन
त्रयभूषितम् । पातु नस्सर्व्वभीतिभ्यष्कात्यायनि नमो
स्तुते ॥२४॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसू
दनम् । त्रिशूलम्पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु
ते ॥२५॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य्य या जगत्।



সাঘণ্টাপাতুনোদেৱিপাপেভ্যোনস্সুতানিৱ॥২৭॥
অসুৰাসৃগ্বসাপঙ্কচৰ্চ্চিতস্তেকৰোজ্জ্বলঃ॥শুভায়খ
ড্গোভৱতুচণ্ডিকেত্বান্নতাৱয়ম্॥২৮॥ৰোগান
শেষানপহংসিতুষ্টাৰুষ্টাতুকামান্সকলানভীষ্টা
ন্॥ত্বামাশ্ৰিতানান্নৱিপন্নৰাণান্ত্বামাশ্ৰিতাহ্যা
শ্ৰয়তাম্প্ৰয়ান্তি॥ ২৯ ॥এতৎকৃতংযৎকদনন্ত্বয়াদ্যধৰ্ম্মদ্বি
ষান্দেৱিমহাসুৰাণাম্। ৰূপৈৰনেকৈৰ্বহুধাত্মমূৰ্ত্তি
ঙ্কৃত্বাম্বিকেতৎপ্ৰকৰোতিকান্যা॥ ৩০ ॥ৱিদ্যাসুশা
স্ত্ৰেষুৱিৱেকদীপেষ্বাদ্যেষুৱাক্যেষুচকাত্বদন্যা।
মমত্বগৰ্ত্তেঽতিমহান্ধকাৰেৱিভ্ৰাময়ত্যেতদতীৱৱিশ্ব
ম্॥ ৩১ ॥ৰক্ষাংসিযত্ৰোগ্ৰৱিষাশ্চনাগাযত্ৰাৰয়োদস্যুব
লানিযত্ৰ॥দাৱানলোযত্ৰতথাব্ধিমধ্যেতত্ৰস্থিতাত্বম্প
ৰিপাসিৱিশ্বম্॥ ৩২ ॥ৱিশ্বেশ্বৰিত্বম্পৰিপাসিৱিশ্বংৱিশ্বা
ত্মিকাধাৰয়সীতিৱিশ্বম্॥ৱিশ্বেশৱন্দ্যাভৱতীভৱন্তিৱি
শ্বাশ্ৰয়াযেত্বয়িভক্তিনম্ৰাঃ॥ ৩৩ ॥দেৱিপ্ৰসীদপৰিপাল
য়নোঽৰিভীতেৰ্নিত্যংযথাসুৰৱধাদধুনৈৱসদ্যঃ॥পা
পানিসৰ্ব্বজগতাম্প্ৰশমন্নয়াশুউৎপাতপাকজনিতাং
শ্চমহোপসৰ্গান্॥ ৩৪ ॥প্ৰণতানাম্প্ৰসীদত্বন্দে
ৱিৱিশ্বাৰ্ত্তিহাৰিণি॥ত্ৰৈলোক্যৱাসিনামীড্যেলোকা
নাংৱৰদাভৱ॥ ৩৫ ॥দেৱ্যুৱাচ॥ ৩৬ ॥ৱৰদাহংসু



सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नस्सुतानिव॥२७॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्च्चितस्ते करोज्ज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वान्नता वयम् ॥२८॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्त्सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानान्न विपन्नराणान्त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयान्ति॥२९॥ एतत्कृतं यत्कदनन्त्वयाद्य धर्मद्विषान्देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्ब्बहुधात्ममूर्त्तिङ्कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥३०॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र। दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वम्परिपासि विश्वम्॥३२॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् । विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोरिभीतेर्न्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः । पापानि सर्व्वजगताम्प्रशमन्नयाशु उत्पातपाकजनिताँश्च महोपसर्गान् ॥३४॥ प्रणतानाम्प्रसीद त्वन्देवि विश्वार्त्तिहारिणी ॥ त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥३५॥ देव्युवाच॥३६॥ वरदाहं सु



ৰ্গণা ৰৰং যন্মনসেচ্ছথ।। তং বৃণুধ্বং প্ৰয়চ্ছামি জগতা
মুপকাৰকম্।। ৩৭ ।। দেৱা ঊচুঃ।। ৩৮ ।। সৰ্ব্ববাধাপ্ৰ
শমনং ত্ৰৈলোক্যস্যাখিলেশ্বৰি।। এৱমেৱ ত্বয়া কাৰ্য্যম
স্মদ্বৈৰিবিনাশনম্।। ৩৯ ।। দেৱ্যুৱাচ।। বৈৱস্বতে
ন্তৰে প্ৰাপ্তে অষ্টাৱিংশতিমে যুগে।। শুম্ভো নিশুম্ভশ্চৈ
ৱান্যাবুৎপৎস্যেতে মহাসুৰৌ।। ৪১ ।। নন্দগোপগৃহে
জাতা যশোদাগৰ্ভসম্ভৱা।। ততস্তৌ নাশয়িষ্যামি
বিন্ধ্যাচলনিবাসিনী।। ৪২ ।। পুনৰপ্যতিৰৌদ্ৰেণ ৰূ
পেণ পৃথিৱীতলে।। অৱতীৰ্য্য হনিষ্যামি বৈপ্ৰচি
ত্তাংস্তু দানৱান্।। ৪৩ ।। ভক্ষয়ন্ত্যাশ্চ তানুগ্ৰান্ বৈপ্ৰ
চিত্তান্মহাসুৰান্।। ৰক্তা দন্তা ভৱিষ্যন্তি দাড়িমীকু
সুমোপমাঃ।। ৪৪ ।। ততো মাং দেৱতাঃ স্বৰ্গে মৰ্ত্যলো
কে চ মানৱাঃ।। স্তুৱন্তো ব্যাহৰিষ্যন্তি সততং ৰক্তদ
ন্তিকাম্।। ৪৫ ।। ভূয়শ্চ শতৱাৰ্ষিক্যামনাবৃষ্ট্যামন
ম্ভসি।। মুনিভিঃ সংস্তুতা ভূমৌ সম্ভৱিষ্যাম্যযোনিজা।।
৪৬ ।। ততঃ শতেন নেত্ৰাণাং নিৰীক্ষিষ্যামি যন্মুনীন্।
কীৰ্ত্তয়িষ্যন্তি মনুজাঃ শতাক্ষীমিতি মাং ততঃ।। ৪৭ ।।
ততোঽহমখিলং লোকমাত্মদেহসমুদ্ভৱৈঃ।। ভৰিষ্যামি
সুৰাঃ শাকৈৰাবৃষ্টেঃ প্ৰাণধাৰকৈঃ।। ৪৮ ।। শাক
ম্ভৰীতি বিখ্যাতিং তদা যাস্যাম্যহং ভুৱি।। তত্ৰৈৱ চ



रगणा वरं यन्मनसेच्छथ । तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगता
मुपकारकम् ॥३७॥ देवा ऊचुः ॥३८॥ सर्व्वबाधाप्र
शमनन्त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वयाकार्य्यम
स्मद्वैरिविनाशनम् ॥३९॥ देव्युवाच ॥४०॥ वैवस्वतेऽ
न्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे । शुम्भो निशुम्भश्चै
वान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥४१॥ नन्दगोपगृहे
जाता यशोदा गर्ब्भसम्भवा । ततस्तौ नाशयिष्यामि
विन्ध्याचलनिवासिनी ॥४२॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रू
पेण पृथिवीतले । अवतीर्य्य हनिष्यामि वैप्रचि
त्ताँस्तु दानवान् ॥४३॥ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्वैप्र
चित्तान्महासुरान् । रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकु
सुमोपमाः ॥४४॥ ततो मान्देवताः स्वर्गे मर्त्यलो
के च मानवाः । स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तद
न्तिकाम् ॥४५॥ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामन
म्भसि । मुनिभिस्संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा
॥४६॥ ततश्शतेन नेत्राणान्निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्त्तयिष्यन्ति मनुजाश्शताक्षीमिति मान्ततः ॥४७॥
ततोहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः। भरिष्यामि
सुराश्शाकैरावृष्टे प्राणधारकैः ॥४८॥ शाक
म्भरीति विख्यातिन्तदा यास्याम्यहम्भुवि । तत्रैव च





ৰধিষ্যামিদুৰ্গমাখ্যম্মহাসুৰম্॥৪৯॥দুৰ্গাদেৱী
তিৱিখ্যাতন্তন্মেনামভৱিষ্যতি॥পুনশ্চাহংযদাভী
মংৰূপংকৃত্বাহিমাচলে॥৫০॥ৰক্ষাংসিভক্ষয়িষ্যা
মিমুনীনান্ত্ৰাণকাৰণাৎ॥তদামাম্মুনয়ঃসৰ্ব্বে
স্তোষ্যন্ত্যানম্ৰমূৰ্ত্তয়ঃ॥৫১॥ভীমাদেৱীতিৱিখ্যাত
ন্তন্মেনামভৱিষ্যতি॥৫২॥তদাহংভ্ৰামৰংৰূপংকৃত্বা
সংখ্যেয়ষট্পদম্॥ত্ৰৈলোক্যস্যহিতাৰ্থায়ৱধিষ্যামিমহা
সুৰম্॥৫৩॥ভ্ৰামৰীতিচমাংলোকাস্তদাস্তোষ্যন্তিসৰ্ব্ব
তঃ॥ইত্থংযদাযদাবাধাদানৱোত্থাভৱিষ্যতি॥৫৪
তদাতদাৱতীৰ্য্যাহংকৰিষ্যাম্যৰিসংক্ষয়ম্॥৫৫॥

ইতিমাৰ্কণ্ডেয়পুৰাণেসাৱৰ্ণিকেমন্বন্তৰেদেৱীমা
হাত্ম্যেনাৰায়ণীস্তুতিঃ॥ॐ॥ ১১ ॥ ॐ॥দেৱ্যুৱা
চ॥ ১ ॥এভিঃস্তৱৈশ্চমাংনিত্যংস্তোষ্যতেযঃসমাহি
তঃ॥তস্যাহংসকলাংবাধাংশময়িষ্যাম্যসংশয়ম্॥২॥
মধুকৈটভনাশঞ্চমহিষাসুৰঘাতনম্॥কীৰ্ত্তয়ি

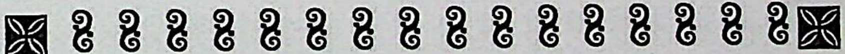
ষ্যন্তিযেতদ্বদ্বধংশুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥৩॥অষ্টম্যাঞ্চচতু
ৰ্দ্দশ্যাংনৱম্যাঞ্চৈকচেতসঃ॥শ্ৰোষ্যন্তিচৈৱযেভক্ত্যা
মমমাহাত্ম্যমুত্তমম্॥৪॥নতেষাংদুষ্কৃতংকিঞ্চি
দ্দুষ্কৃতোত্থানচাপদঃ॥ভৱিষ্যতিনদাৰিদ্ৰ্যংনচৈ
ৱেষ্টৱিয়োজনম্॥৫॥শত্ৰুতোনভয়ন্তস্যদস্যু



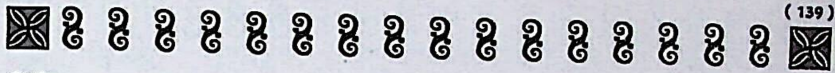


वधिष्यामि दुर्गमाख्यम्महासुरम् ॥४९॥ दुर्गादेवी
ति विख्यातन्तन्मे नाम भविष्यति । पुनश्चाहं यदा भी
मं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥५०॥ रक्षांसि भक्षयिष्या
मि मुनीनान्त्राणकारणात् । तदा माम्मुनयस्सर्व्वे
स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्त्तयः ॥५१॥ भीमादेवीति विख्यात
न्तन्मे नाम भविष्यति ॥४२॥ तदाहम्भ्रामरं रूपं कृत्वा
सङ्ख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महा
सुरम् ॥५३॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति स
र्व्वतः । इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥५४॥
तदा तदावतीर्य्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥५५॥

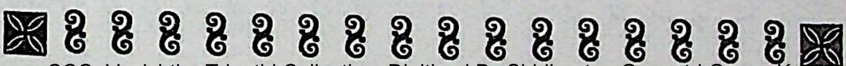
इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमा
हात्म्ये नारायणीस्तुतिः॥ ॥११॥ ॥ देव्युवा
च॥१॥ एभिः स्तवैश्च मान्नित्यं स्तोष्यते यस्समाहि
तः । तस्याहं सकलां बाधां शमयिष्याम्यसंशयम् ॥२॥
मधुकैटभनाशञ्च महिषासुरघातनम् । कीर्त्तयि
ष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥३॥ अष्टम्यां च चतु
र्द्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः । श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या
मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥४॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चि
द्दुष्कृतोत्था न चापदः । भविष्यति न दारिद्र्यं न चै
वेष्टवियोजनम् ॥५॥ शत्रुतो न भयन्तस्य दस्यु



তোরানৰাজতঃ॥নশস্ত্রানলতোয়োঘাৎকদাচিৎসম্ভ
ৰিষ্যন্তি॥৬ ॥তস্মান্মমৈতন্মাহাত্ম্যংপঠিতব্যংসমা
হিতৈঃ॥শ্রোতব্যঞ্চসদাভক্ত্যাপরংস্বস্ত্যয়নংমহৎ॥
৭ ॥উপসর্গানশেষাংস্তুমহামারীসমুদ্ভবান্॥ত
থাত্রিবিধমুৎপাতংমাহাত্ম্যংশময়েন্মম॥৮॥যত্রৈ
তৎপঠ্যতেসম্যঙ্নিত্যমায়তনেমম॥সদানতদ্বিমোক্ষ্যা
মিসান্নিধ্যন্তত্রমেস্থিতম্॥৯ ॥ৰলিপ্রদানেপূজা
য়ামগ্নিকার্য্যেমহোৎসবে॥সর্ব্বম্মমৈতচ্চরিতমুচ্চার্য্যং
শ্রাব্যমেবচ॥১০॥জানতাজানতাবাপিৰলিপূজান্ত
থাকৃতাম্॥প্রতীচ্ছিষ্যাম্যহংপ্রীত্যাবহ্নিহোমন্তথাকৃ
তম্॥১১ ॥শরৎকালেমহাপূজাক্রিয়তেযাচবার্ষিকী॥
তস্যাংমমৈতন্মাহাত্ম্যংশ্রুত্বাভক্তিসমন্বিতঃ॥১২ ॥সর্ব্বা
ৰাধাবিনির্ম্মুক্তোধনধান্যসুতান্বিতঃ॥মনুষ্যোমৎপ্র
সাদেনভবিষ্যতিনসংশয়ঃ॥১৩ ॥শ্রুত্বামমৈতন্মাহা
ত্ম্যংতথাচোৎপত্তয়ঃশুভাঃ॥পরাক্রমঞ্চযুদ্ধেষুজায়
তেনির্ভয়ঃপুমান্॥১৪ ॥রিপবঃসংক্ষয়ংযান্তিকল্যা
ণঞ্চোপপদ্যতে॥নন্দতেচকুলংপুংসাংমাহাত্ম্যম্মম
শৃণ্বতাম্॥১৫॥শান্তিকর্ম্মণিসর্ব্বত্রতথাদুঃস্বপ্ন
দর্শনে॥গ্রহপীড়াসুচোগ্রাসুমাহাত্ম্যংশৃণুয়ান্মম॥
১৬॥উপসর্গাঃশমংযান্তিগ্রহপীড়াশ্চদারুণাঃ॥দুঃস্ব



तो वा न राजतः । न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भ
विष्यति ॥६॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समा
हितैः । श्रोतव्यञ्च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत्॥
७॥ उपसर्गानशेषाँस्तु महामारीसमुद्भवान्। त
था त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥८॥ यत्रै
तत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम । सदा न तद्विमोक्ष्या
मि सान्निध्यन्तत्र मे स्थितम् ॥९॥ बलिप्रदाने पूजा
यामग्निकार्य्ये महोत्सवे । सर्व्वं ममैतच्चरितमुच्चार्य्यं
श्राव्यमेव च ॥१०॥ जानताजानता वापि बलिपूजान्त
थाकृताम् । प्रतीक्षिष्याम्यहम्प्रीत्या वह्निहोमन्तथा कृ
तम्॥११॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्याम्ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः॥१२॥ सर्व्व
बाधाविनिर्म्मुक्तो धानधान्यसुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्र
सादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥ श्रुत्वा ममैतन्माहा
त्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः । पराक्रमञ्च युद्धेषु जाय
ते निर्भयः पुमान् ॥१४॥ रिपवस्संक्षयं यान्ति कल्या
णं चोपपद्यते । नन्दते च कुलम्पुंसाम्माहात्म्यम्म
म शृण्वताम्॥१५॥ शान्तिकर्मणि सर्व्वत्र तथा दुस्स्वप्न
दर्शने । ग्रहपीड़ासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम॥
१६॥ उपसर्गाश्शमय्याँन्ति ग्रहपीड़ाश्च दारुणाः । दुस्स्व

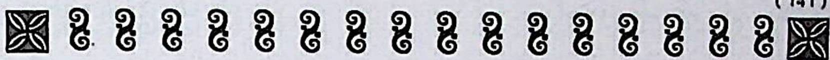
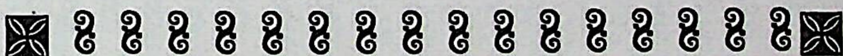


দুঃস্বপ্নঞ্চনৃভির্দৃষ্টংসুস্বপ্নমুপজায়তে॥১৭॥বালগ্রহা
ভিভূতানাম্বালানাংশান্তিকারকম্॥সংঘাতভে
দেচনৃণাম্মৈত্রীকরণমুত্তমম্॥১৮॥দুর্বৃত্তা
নামশেষাণাম্বলহানিকরম্পরম্॥রক্ষোভূতপি
শাচানাম্পঠনাদেবনাশনম্॥১৯॥সর্বম্মমৈত

ন্মাহাত্ম্যম্মমসন্নিধিকারকম্॥পশুপুষ্পার্ঘ্যধূপৈ
শ্চগন্ধদীপৈস্তথোত্তমৈঃ॥২০॥বিপ্রাণাম্ভোজনৈ
র্হোমৈঃপ্রোক্ষণীয়ৈরহর্নিশম্॥অন্যৈশ্চবিবি
ধৈর্ভোগৈঃপ্রদানৈর্বৎসরেণয়া॥২১॥প্রীতির্মে
ক্রিয়তেসাস্মিন্সকৃৎসুচরিতেশ্রুতে॥শ্রুতংহরতি

পাপানিতথারোগ্যম্প্রযচ্ছতি॥২২॥রক্ষাঙ্করোতি
ভূতেভ্যোজন্মনাংকীর্তনম্মম॥যুদ্ধেষুচরিতংযন্মে
দুষ্টদৈত্যনিবর্হণম্॥২৩॥তস্মিঞ্ছ্রুতেবৈরিকৃত
ম্ভয়ম্পুংসান্নজায়তে॥যুষ্মাভিস্তুতয়োযাশ্চ
যাশ্চব্রহ্মর্ষিভিঃকৃতাঃ॥২৪॥ব্রহ্মণাচকৃতাস্তা

স্তুপ্রযচ্ছন্তিশুভাম্মতিম্॥অরণ্যেপ্রান্তরেবাপিদাবা
গ্নিপরিবারিতঃ॥২৫॥দস্যুভির্বাবৃতঃশূন্যেগৃহী
তোবাপিশত্রুভিঃ॥সিংহব্যাঘ্রানুযাতোবাবনেবাবন
হস্তিভিঃ॥২৬॥রাজ্ঞাক্রুদ্ধেনচাজ্ঞপ্তোবধ্যোবন্ধগ
তোপিবা॥আঘূর্ণিতোবাবাতেনস্থিতঃপোতে


प्यञ्च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥ बालग्रहा
भिभूतानाम्बालानां शान्तिकारकम् । संघातभे
दे च नृणाम्मैत्रीकरणमुत्तमम्॥१८॥ दुर्वृत्ता
नामशेषाणां बलहानिकरं परम् । रक्षोभूतपि
शाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१९॥ सर्व्वम्ममैत
न्माहात्म्यम्मम सन्निधिकारकम् । पशुपुष्पार्घधूपै
श्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥ विप्राणाम्भोज
नैर्होमै प्रोक्षणीयैरहर्न्निशम् । अन्यैश्च विवि
धैर्ब्भोगै प्रदानैर्व्वत्सरेण या ॥२१॥ प्रीतिर्म्मे
क्रियते सास्मिन्त्सकृत्सुचरिते श्रुते । श्रुतं हरति
पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति ॥२२॥ रक्षाङ्करोति
भूतेभ्यो जन्मनाङ्कीर्तनम्मम ॥ युद्धेषु चरितं यन्मे
दुष्टदैत्यनिवर्हणम्॥२३॥ तस्मिञ्छ्रुतं वैरिकृत
म्भयम्पुंसान्न जायते ॥ युष्माभिस्तुतयो याश्च
याश्च ब्रह्मर्षिभिष्कृताः ॥२४॥ ब्रह्मणा च कृतास्ता
स्तु प्रयच्छन्ति शुभाम्मतिम् । अरण्ये प्रान्तरे वापि दावा
ग्निपरिवारितः ॥२५॥ दस्युभिर्व्वा वृतश्शून्ये गृही
तो वापि शत्रुभिः । सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वन
हस्तिभिः ॥२६॥ राज्ञा क्रुद्धेन वाज्ञप्तो वध्यो बन्धग
तोपि वा । आघूर्ण्णितो वा वातेन स्थितः पोते


মহার্ণবে॥২৭॥পতৎসুচাপিশস্ত্রেষুসংগ্রামেভৃশ
দারুণে॥সর্ব্বাবাধাসুঘোরাসুবেদনাভ্যর্দ্দিতো
পিবা॥২৮॥স্মরন্মমৈতচ্চরিতন্নরোমুচ্যেতস
ঙ্কটাৎ॥মমপ্রভাবাৎসিংহাদ্যাদস্যবোবৈরিণস্ত
থা॥২৯॥দূরাদেবপলায়ন্তেস্মরতশ্চরিতম্ম
ম॥৩০॥ঋষিরুবাচ॥৩১॥ইত্যুক্ত্বাসাভগবতীচণ্ডি
কাচণ্ডবিক্রমা॥পশ্যতামেবদেবানান্তত্রৈবান্তরধীয়ত॥
৩২॥তেপিদেবানিরাতঙ্কাঃস্বাধিকারান্যথাপুরা॥য
জ্ঞভাগভুজঃসর্ব্বেচক্রুর্ব্বিনিহতারয়ঃ॥৩৩॥দৈত্যাশ্চদে
ব্যানিহতেশুম্ভেদেবরিপৌযুধি॥জগদ্বিধ্বংসিনিতস্মি
ন্মহোগ্রেতুলবিক্রমে॥৩৪॥নিশুম্ভেচমহাবীর্য্যে
শেষাঃপাতালমাযযুঃ॥এবম্ভগবতীদেবীসানিত্যাপি
পুনঃপুনঃ॥৩৫॥সম্ভূয়কুরুতেভূপজগতঃপরিপা
লনম্॥তয়ৈতন্মোহ্যতেবিশ্বংসৈববিশ্বংপ্রসূয়তে॥৩৬॥
সাযাচিতাচবিজ্ঞানন্তুষ্টাঋদ্ধিম্প্রযচ্ছতি॥ব্যাপ্তন্ত
য়ৈতৎসকলম্ব্রহ্মাণ্ডম্মনুজেশ্বর॥৩৭॥মহাকাল্যা
মহাকালেমহামারীস্বরূপয়া॥সৈবকালেমহামা
রীসৈবসৃষ্টির্ভবত্যজা॥৩৮॥স্থিতিঙ্করোতিভূ
তানাংসৈবকালেসনাতনী॥ভবকালেনৃণাংসৈ
বলক্ষ্মীর্ব্বৃদ্ধিপ্রদাগৃহে॥৩৯॥



महार्णवे ।।२७।। पततसु चापि शस्त्रेषु स ामे भृश
दारुणे। सर्व्वबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्द्दितो
पि वा ।।२८।। स्मरन्ममैतच्चरितन्नरो मुच्येत स
ङ्कटात्। मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्त
था ।।२९।। दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितम्म
म ।।३०।। ऋषिरुवाच ।।३१।। इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डि
का चण्डविक्रमा ।। पश्यतामेव देवानान्तत्रैवान्तरधीयत
३२।। तेपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा।। य
ज्ञभागभुजस्सर्व्वे चक्रुर्व्विनिहतारयः।।३३।। दैत्याश्च दे
व्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ।। जगद्विध्वंसिनिस्त
स्मिन्महोग्रेतुलविक्रमे ।।३४।। निशुम्भे च महावीर्य्ये
शेषा पातालमाययुः ।। एवं भगवती देवी सा नित्यापि
पुनः पुनः ।।३५।। सम्भूय कुरुते भूप जगत परिपा
लनम् ।। तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।।३६।।
सा याचिता च विज्ञानन्तुष्टा ऋद्धिम्प्रयच्छति।। व्याप्तन्त
यैतत्सकलम्ब्रह्माण्डम्मनुजेश्वर।।३७।। महाकाल्या
महाकाले महामारीस्वरूपया ।। सैव काले महामा
री सैव सृष्टिर्ब्भवत्यजा।।३८।। स्थितिङ्करोति भू
तानां सैव काले सनातनी ।। भवकाले नृणां सै
व लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे । ।३९।।

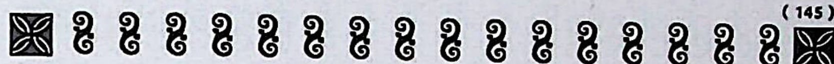


ভাৱ
মেৰা[redacted]তথানষ্মী হিনাশায়োপজায়তে॥ স্তু
তামস্ত্রজিতাস্থাপৈস্থূপগন্ধাদিভিস্তথা॥৪০॥দদা
তিবিত্তঁপুত্রাঁশ্চমতিম্মৰ্ম্মতিথাশুভাম্॥৪১॥ঃ॥
ইতিমাৰ্কণ্ডেয়পুৰাণেসাৱৰ্ণিকেমন্বন্তৰেদেৱী
মাহাত্ম্যেদেৱীয়াক্যম্॥১২॥ ঋ॥ঋষিৰুৱা

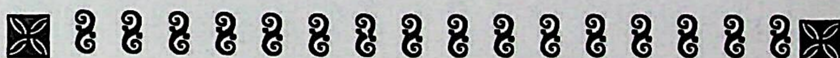
চ॥১॥এতত্তেকথিতম্ৰাজান্দেৱীমাহাত্ম্যমুত্তমম্॥
এৱম্প্ৰভাৱাসাদেৱীযয়েদন্ধাৰ্য্যতেজগৎ॥২॥ৱি
দ্যাতথৈৱক্ৰিয়তেভগৱদ্বিষ্ণুমায়য়া॥তয়াত্বমে
ষবেশ্চৈতথৈৱান্যেবিৱেকিনঃ॥৩॥মোহ্যন্তে
মোহিতাশ্চৈৱমাহমেষ্যন্তিচাপৱে॥তামুপৈহি

মহাৰাজশৰণম্পৰমেশ্বৰীম্॥ ৪ ॥আৰাধিতাসৈৱ
নৃণাম্ভোগস্বৰ্গাপৱৰ্গদা॥৫॥মাৰ্কণ্ডেয়উৱাচ॥
৬॥ইতিতস্যৱচঃশ্ৰুত্বাসুৰথস্মনৰাধিপঃ॥৭॥প্ৰ
ণিপত্যমহাভাগন্তমৃষিংসংশিতব্ৰতম্॥নিৰ্ৱিণ্ণো
তিমমত্বেনৰাজ্যাপহৰণেনচ॥৮॥জগামসদ্যস্ত

পসেসচবৈশ্যোমহামুনে॥সন্দৰ্শনাৰ্থমম্বায়ান
দীপুলিনসংস্থিতঃ॥৯॥সচবৈশ্যস্তপস্তেপেদেৱী
সূক্তম্পৰঞ্জপন॥তৌতস্মিন্পুলিনেদেৱ্যাঃকৃ
ত্বামূৰ্ত্তিম্মহীময়ীম্॥১০॥অৰ্হণাঞ্চক্ৰতুস্তস্যাঃ
পুষ্পধূপাগ্নিতৰ্পণৈঃ॥নিৰাহাৰৌযতাহাৰৌ॥



सैवाभावे तथालक्ष्मीर्व्विनाशायोपजायते।। स्तु
ता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।।४०।। ददा
ति वित्तं पुत्राँश्च मतिन्धर्मे तथा शुभाम् ।।४१।। ।।
इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी
माहात्म्ये देवीवाक्यम् ।।१२।। ।। ।। ऋषिरुवा
च ।।१।। एतत्ते कथितं राजन्देवीमाहात्म्यमुत्तमम्
एवम्प्रभावा सा देवी ययेदन्धार्य्यते जगत् ।।२।। वि
द्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया। तया त्वमे
ष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ।।३।। मोह्यन्ते
मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे । तामुपैहि
महाराज शरणं परमेश्वरीम् ।।४।। आराधिता सैव
नृणाम्भोगस्वर्गापवर्गदा ।।५।। मार्कण्डेय उवाच ।।
।।६।। इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथस्स नराधिपः।।७।। प्र
णिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् । निर्विण्णो
तिममत्वेन राज्यापहरणेन च।।८।। जगाम सद्यस्त
पसे स च वैश्यो महामुने । सन्दर्शनार्थमम्बाया न
दीपुलिनसंस्थितः ।।९।। स च वैश्यस्तपस्तेपे देवी
सूक्तम्परञ्जपन् । तौ तस्मिन्पुलिने देव्या कृ
त्वा मूर्तिं महीमयीम् ।।१०।। अर्हणाञ्चक्रतुस्तस्या
पुष्पधूपाग्नितर्पणैः । निराहारौ यताहारौ

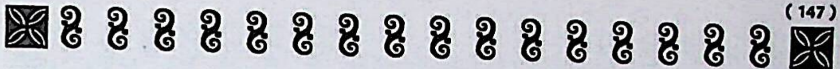


তন্মনস্কৌ সমাহিতৌ ॥ ১১ ॥ দদতুস্তৌ বলিঞ্চৈৱ
নিজগাত্ৰাসৃগুক্ষিতম্ ॥ এৱং সমাৰাধয়তোস্ত্রি
ভিৰ্ব্বর্ষৈৰ্যতাত্মনোঃ ॥ ১২ ॥ পৰিতুষ্টা জগদ্ধাত্ৰী
প্রত্যক্ষং প্রাহ চণ্ডিকা ॥ ১৩ ॥ দেৱ্যুৱাচ ॥ ১৪ ॥
যৎপ্রার্থ্যতে ত্বয়া ভূপ ত্বয়া চ কুলনন্দন ॥ মত্তস্ত

ৎপ্রাপ্যতাং সৰ্ব্বং পৰিতুষ্টা দদামি তৎ ॥ ১৫ ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উ
ৱাচ ॥ ১৬ ॥ ততো ৱব্ৰে নৃপো ৰাজ্যমৱিভ্রংশ্যন্যজন্মনি ।
অত্ৰৈৱ চ নিজং ৰাজ্যং হতশত্রুবলং বলাৎ ॥ ১৭ ॥ সোপি
বৈশ্যস্ততো জ্ঞানং ৱব্রে নির্ব্বিণ্ণমানসঃ ॥ মমেত্যহমিতি
প্রাজ্ঞঃ সঙ্গবিচ্যুতিকাৰকম্ ॥ ১৮ ॥ দেৱ্যুৱাচ ॥ ১৯ ॥

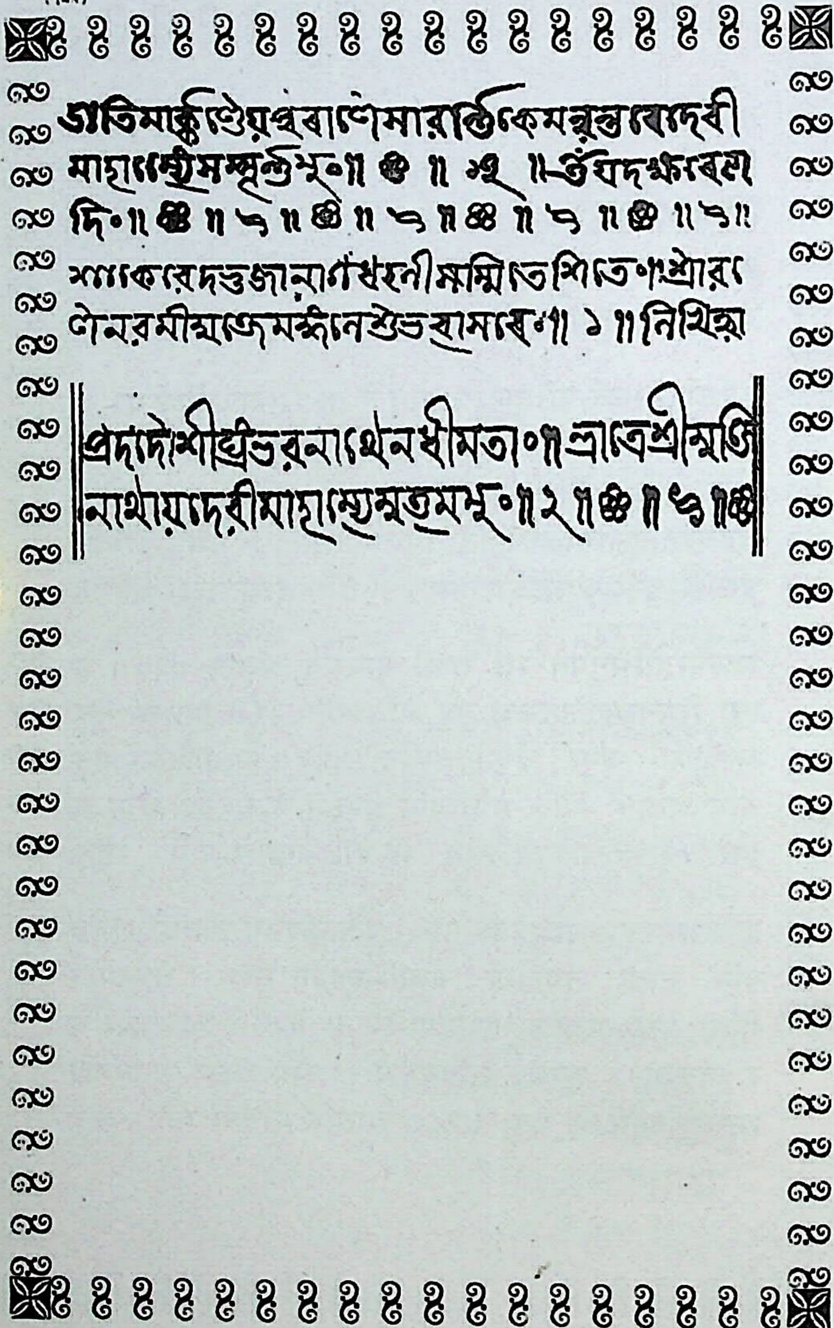
স্বল্পৈৰহোভিৰ্নৃপতে স্বং ৰাজ্যং প্রাপ্স্যতে ভৱান্ ॥ ২০ ॥ হ
ত্বা ৰিপূনস্খলিতং তৱ তত্ৰ ভৱিষ্যতি ॥ ২১ ॥ মৃতশ্চ ভূয়
ঃ সম্প্রাপ্য জন্ম দেৱাদ্বিৱস্বতঃ ॥ ২২ ॥ সাৱৰ্ণিকো নাম ম
নুৰ্ভৱান্ ভুৱি ভৱিষ্যতি ॥ ২৩ ॥ বৈশ্যৱৰ্য্য ত্বয়া য
শ্চ ৱৰোস্মত্তোভিৱাঞ্ছিতঃ ॥ ২৪ ॥ তং প্রয়চ্ছামি সংসি

দ্ধ্যৈ তৱ জ্ঞানং ভৱিষ্যতি ॥ ২৫ ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উৱাচ ॥ ২৬ ॥
ইতি দত্ত্বা তয়োৰ্দ্দেৱী যথাভিলষিতং ৱৰম্ ॥ বভূৱান্ত
ৰ্হিতা সদ্যো ভক্ত্যা তাভ্যামভিষ্টুতা ॥ ২৭ ॥ এৱং দেৱ্যা ৱ
ৰং লব্ধ্বা সুৰথঃ ক্ষত্রিয়র্ষভঃ ॥ সূৰ্য্যাজ্জন্ম সমাসাদ্য
সাৱৰ্ণিৰ্ভৱিতা মনুঃ ॥ ২৮ ॥ সাৱৰ্ণিৰ্ভৱিতা মনুঃ ॥ ২৯ ॥



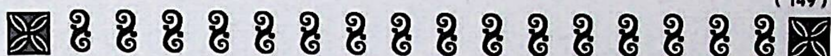
तन्मनस्कौ समाहितौ ॥११॥ ददतुस्तौ बलिञ्चैव
निजगात्रासृगुक्षितम्॥ एवं समाराधयतोस्त्रि
भिर्व्वर्षैर्य्यतात्मनोः ॥१२॥ परितुष्टा जगद्धात्री
प्रत्यक्षम्प्राह चण्डिका ॥१३॥ देव्युवाच ॥१४॥
यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन । मत्तस्त
त्प्रार्थ्यतां सर्व्वं परितुष्टा ददामि ते ॥१५॥ मार्क्कण्डेय उ
वाच ॥१६॥ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥१७॥ सोपि
वैश्यस्ततोज्ञानम्वव्रे निर्व्विण्णमानसः । ममेत्यहमिति
प्राज्ञस्सङ्गविच्युतिकारकम् ॥१८॥ देव्युवाच ॥१९॥
स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥ ह
त्वा रिपूनस्खलितन्तव तत्र भविष्यति॥२१॥ मृतश्च भूय
स्संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥२२॥ सावर्णिको मनु
र्न्नाम भवान् भुवि भविष्यति ॥२३॥ वैश्यवर्य्य त्वया य
श्च वरोस्मत्तोभिवाञ्छितः ॥२४॥ तम्प्रयच्छामि संसि
द्ध्यै तव ज्ञानम्भविष्यति ॥२५॥ मार्क्कण्डेय उवाच ॥२६॥
इति दत्वा तयोर्द्देवी यथाभिलषितं वरम् । बभूवान्त
र्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥२७॥ एवन्देव्या व
रं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म समासाद्य
सावर्णिर्ब्भविता मनुः ॥२८॥ सावर्णिर्भविता मनुः॥२९॥





ইতিমাৰ্কণ্ডেয়পুৰাণেসাবৰ্ণিকেমন্বন্তৰেদেৱী
মাহাত্ম্যেসম্পূৰ্ণম্॥ ॥ ॥ ওঁযদক্ষৰপদ
দি॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
শাকেরেদত্তজানাগধহনীক্ষমিতেশিতে॥শ্রীরা
লৈনৰমীমজেমঙ্কানশুভহাসাৰ॥ ১ ॥নিখিল

প্রদাদেশীশ্রীভরনাথেনধীমতা॥ভ্রাতেশ্রীমণি
নাথায়দেৱীমাহাত্ম্যমত্তমম্॥ ২ ॥ ॥ ॥



इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ।। ।।१३।।ॐ यदक्षरेत्यादि०[1] ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।

शाके वेद भुजानागधरणीसम्मिते शिते।। श्रावणे नवमीयुक्ते मङ्गले शुभवासरे।।१।। लिखित्वा प्रददे शीघ्रं भवनाथेन धीमता।। भ्रात्रे श्रीमुक्तिनाथाय देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।।२।। ।। ।। ।।

१.यदक्षरपदभ्रष्टम्मात्राहीनञ्च यद्भवेत्।
तत्सर्व्वं क्षम्यतान्देवि कस्य वै निश्चलम्मनः।।



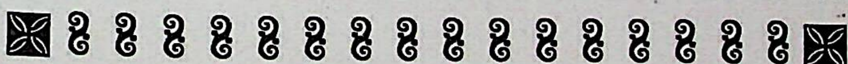
ওঁ নমশ্চণ্ডিকায়ৈ ॥ অহং রুদ্রেভির্বসুভিশ্চরাম্যহমা
দিত্যৈরুত বিশ্বদেবৈঃ ॥ অহং মিত্রাবরুণোভা বি
ভর্ম্ম্যহমিন্দ্রাগ্নী অহমশ্বিনোভা ॥ ১ ॥ অহং সোম
মাহনসং বিভর্ম্ম্যহং ত্বষ্টারমুত পূষণং ভগম্ ॥ অ
হং দধামি দ্রবিণং হবিষ্মতে সুপ্রাব্যে যজমানায় সু
ন্বতে ॥ ২ ॥ অহং রাষ্ট্রী সঙ্গমনী বসূনাং চিকিত
ষী প্রথমা যজ্ঞিয়ানাম্ ॥ তাং মা দেবা ব্যদধুঃ পু
রুত্রা ভূরিস্থাত্রাং ভূর্য্যাবেশয়ন্তীম্ ॥ ৩ ॥ ময়া সো
অন্নমত্তি যো বিপশ্যতি যঃ প্রাণিতি য ঈং শৃণো
ত্যুক্তম্ ॥ অমন্তবো মান্ত উপক্ষিয়ন্তি শ্রুধি শ্রুত
শ্রদ্ধিবং তে বদামি ॥ ৪ ॥ অহমেব স্বয়মিদং বদামি জুষ্টং দে
বেভিরুত মানুষেভিঃ ॥ যং কাময়ে তং তমুগ্রং কৃণোমি
তং ব্রহ্মাণং তমৃষিং তং সুমেধাম্ ॥ ৫ ॥ অহং রুদ্রায়
ধনুরাতনোমি ব্রহ্মদ্বিষে শরবে হন্তবা উ ॥ অহং জ
নায় সমদং কৃণোম্যহং দ্যাবাপৃথিবী আবিবেশ ॥
৬ ॥ অহং সুবে পিতরমস্য মূর্দ্ধন্মম যোনিরপ্স্বন্তঃ ॥ স
মুদ্রে ততো বিতিষ্ঠে ভুবনানি বিশ্বোতামূং দ্যাং বর্ষ্ম
ণোপস্পৃশামি ॥ ৭ ॥ অহমেব বাত ইব প্রবা
ম্যারভমাণা ভুবনানি বিশ্বা ॥ পরো দিবা পর এ
না পৃথিব্যৈতাবতী মহিনা সম্বভূব ॥ ৮ ॥ ❁ ॥ ই

তি দেবীসূক্তং সম্পূর্ণম্ ॥ ❁ ॥ ওঁ যদক্ষর... ॥



ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम्

नमस्तस्यै।। ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमा दित्यैरुत विश्वदेवैः । अहम्मित्रावरुणोभावि भर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥१॥ अहं सोम माहनसम्बिभर्म्यहन्त्वष्ठारमुत पूषणम्भगम् । अ हन्दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सु न्वते ॥२॥ अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाञ्चिकितु षी प्रथमा यज्ञियानाम् । ताम्मा देवा व्यदधुः पु रुत्रा भूरिस्थात्रम्भूर्य्यावेशयन्तीम् ॥३॥ मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणो त्युक्तम् । अमन्तवोमान्तउपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवन्ते वदामि ॥४॥ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टन्देवे भिरुतमानुषेभिः ।। यङ्कामये तन्तमुग्रङ्कृणोमि तम्ब्रह्माणं तमृषिन्तं सुमेधाम् ॥५॥ अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ । अहञ्ज नाय समदङ्कृणोम्यहन्द्यावापृथिवी आविवेश ॥६॥ अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वन्तः स मुद्रे । ततो वितिष्ठे भुवनानि विश्वोतामून्द्यां वर्ष्म णोपस्पृशामि ॥७॥ अहमेव वात इव प्रवा म्यारभमाणा भुवनानि विश्वा । परो दिवा पर ए ना पृथिव्यै तावती महिना सम्बभूव ॥८॥ इ ति देवीसूक्तं सम्पूर्णम्।। ॐ यदक्षरेत्यादि।।



[सिद्धिरस्तु । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः]

[क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण: त थ द ध न, प फ ब भ म, य र]

[ल व श, ष स ह । क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः । ख खा]

[खि खी इत्यादि । क्ष त्र ज्ञ क्र ह्र ख ग घ्र ड़ ढ़ कु क्व गु ग्व णु ण्व तु त्व]

[तु त्व पु प्व यु य्व हु ह्व लु ल्व शु श्व षु ष्व सु स्व हु ह्व क्क ख्ख ग ग्घ श्री श्री श्री]

[स्क स्ख ध्व ध्र स्ठ स्ट स्क स्त स्थ स्ल स्प स्फ स्म स्य स्र श्य स्स क्त त्व त्न त्प]

[त्फ त्म त्य त्स । क्लं क्लं क्लं क्लं थ्र थ्व थ्र ऋ ण ण ण ण ल थ न्ध न्ध स्प]

[म्क स्व स्म यँ लँ वँ । क्र ह्र ह्र कृ हू ह्र ह् कं खं गं घं ।]

[कृ खृ गृ घृ हृ क्य ख्य ग्य घ्य० कृ ख ग घ क्ल ख्ल क्लृ ख्लृ क्लृ]

[नमः दुर्गे ओम् ७ ५]



शक्ति-उपासनाक परम्परामे दुर्गासप्त-[illegible] अनन्य महत्त्व अछि। मार्कण्डेय-पुराण [illegible] 13 अध्यायक ई देवीचरित्त [illegible]यना-तन्त्र आ चिदम्बर संहितामे उक्त सप्त विभाग सँ विलसित भए सात सए मन्त्रक रूपमे सप्तशतीक स्वरूपमे आएल।

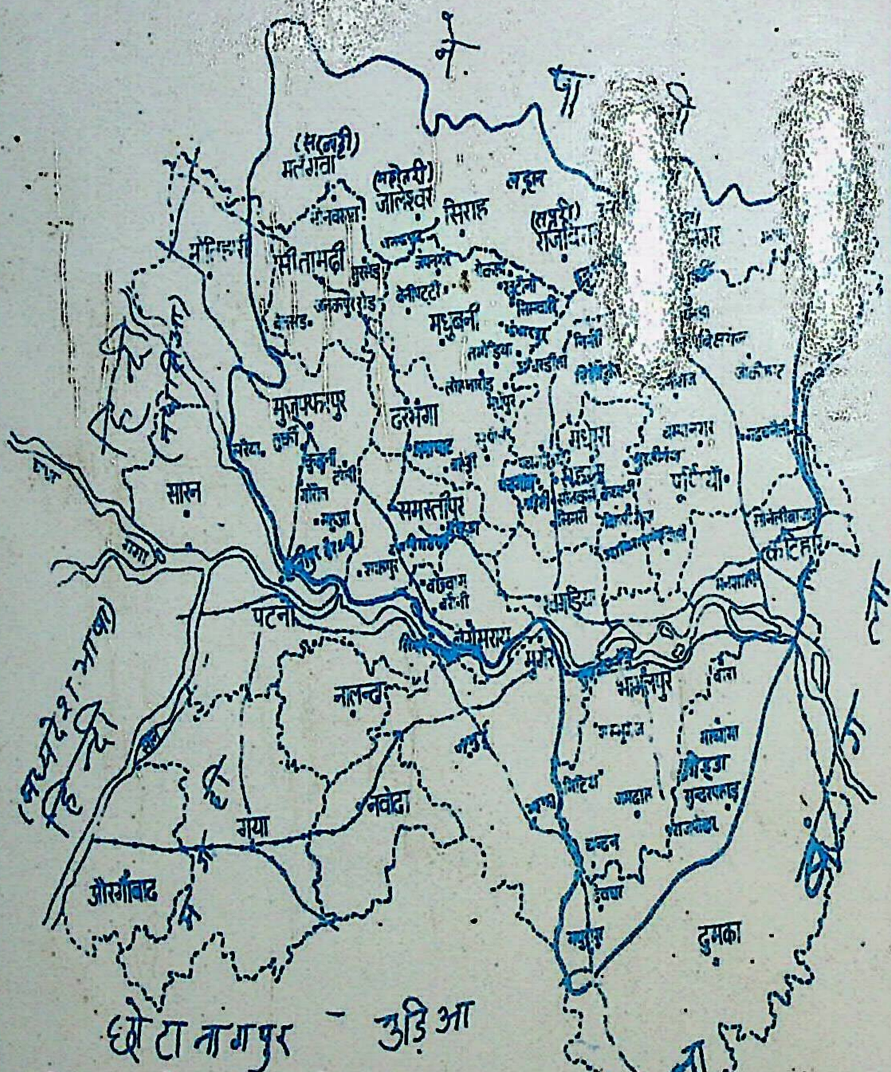
[illegible] दुर्गासप्तशतीमे तीन 'चरित्त सृष्टिक विकास सँ स[illegible] प्रथम चरित्तमे 'योगनिद्रा' [illegible] रूपमे मानि ब्रह्मा [illegible] छथि। दोसर चरित्तमे सृष्टिक प्रारम्भिक स्थिति अछि, जतए देवी [illegible] क[illegible] एकसरे महिषासुर-वध कए 'देव[illegible]'क रक्षा करैत छथि। तेसर चरित्तमे सृष्टि पूर्ण विकसित भए गेल अछि। एतए अवतारवादक अवधारणा पुष्ट अछि। देवीक विभिन्न स्वरूप आ अवतार ग्रहण कए शाकम्भरी, दुर्गा, भ्रामरी, रक्तदन्तिका आदि रूपमे विभिन्न दैत्यक संहारक कथा अछि।

देवीक एहि चरित्तत्रय सँ गुम्फित ई दुर्गासप्तशती अपनामे समग्रके समाहित कएने अछि। 'दुर्गाभक्तितरंगिणी'मे महाकवि विद्यापतिक ई दुर्गासप्तशतीक श्रवण संकल्प वाक्य एकर महत्त्वक घोष करैत अछि-

ॐ अद्य सकलदुष्कृतनिवृत्तिदुष्कृतोत्थ-समस्तापद्रहितत्वदारिद्र्यानुष्पत्तीष्टवियोगराहित्यसार्वदिकशत्रुदस्युराजशस्त्रानल-तोयौघहेतुकभयाभावसर्वबाधाविनिर्मुक्तत्व धनधान्यसुतान्वितत्वकामो मार्क्कण्डेय-पुराणान्तर्गतसावर्णिः सूर्य्यतनय इत्यादि सावर्णिर्भ- वितामनुरित्यन्तं दुर्गामाहात्म्यमहं श्रोष्यामि।

स्वयं पाठ करबाक स्थितिमे "दुर्गामाहात्म्यपाठमहं करिष्ये"। ई ऊह करी।

ॐ नमश्चण्डिकायै



भारतीय-भाषा सर्वेक्षण (1911) केर अनुसार
मैथिली भाषी क्षेत्र एपैन्डिक्स 1 (बी)

मुद्रक : सरस्वती प्रेस, बारिंग कैनाल रोड, पटना, मो. 9304625963